ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

लेखक : जुगतराम दवे

प्रस्तावनामें लेखक लिखते हैं : "जो ग्रामसेवक और ग्रामसेविकाअें शिक्षक-स्वभावके हैं और जो अपने पसन्द किये हुअे गांवसे चिपटकर स्थिर रहनेवाले हैं, अुन्हें ये योजनाअें खूब पसंद आयेंगी और ग्रामसेवाके हरअेक काममें गहराअी, तफसील और शास्त्र किस ढंगके होने चाहिये अिसका ज्ञान देंगी।"

कीमत १.२५ डाकखर्च ०.३१

पंचायत राज

लेखक : गांधीजी

गांधीजीने सदा अिस बात पर जोर दिया था कि भारतके गांवोंमें ग्राम-पंचायतोंको पुनर्जीवित करके वहां ग्राम-स्वराज्यकी स्थापना की जाय। अिस पंचायत राज अथवा ग्राम-स्वराज्यमें किन किन बातोंका समावेश होता है और अुसे कैसे सिद्ध किया जाय, अिसकी संक्षिप्त कल्पना अिस पुस्तिकामें दी गअी है।

क़ीमत ०.३० डाकखर्च ०.१३

सत्य ही ओश्वर है

लेखक : गांधीजी

अिस पुस्तकमें ओश्वर, ओश्वर-साक्षात्कार और ओश्वर-परायण जीवन-संबंधी गांधीजीके लेखों और भाषणोंसे लिये हुअे वचनोंका संग्रह किया गया है। अिसके अध्ययनसे पता चलेगा कि गांधीजी 'ओश्वर सत्य है' के विश्वास परसे 'सत्य ही ओश्वर है' के विश्वास पर कैसे पहुंचे।

अुठाया है, क्योंकि हम आत्मशुद्धि भी चाहते हैं। अर्थात् अिसके जो जो अवश्यंभावी (जरूर होनेवाले) अच्छे परिणाम हैं, अुन सबको अेकत्र पानेके लिअे हमने यह मोदक बनाया है।

मैं चाहता हूं कि सर्वोदयके सिद्धान्तमें माननेवाले जो लोग यहां आये हैं, वे महसूस करें कि वे जो कुछ करना चाहते हैं, वह अिस भूदान-यज्ञके जरिये सध सकता है।

हरिजनसेवक, १०-५-'५२

८

भूदान-यज्ञ-समितियोंको मार्गदर्शन

[भूदान-यज्ञके बारेमें भिन्न-भिन्न प्रादेशिक समितियोंकी ओरसे पूछे गये सवालों पर विनोबाजीसे चर्चा होने पर अुन्होंने नीचेका मार्गदर्शन दिया था।]

१. दानपत्र कहां रखे जायं?

हर दानपत्रकी दो नकलें होनी चाहिये। दोनों नकलों पर दाता तथा गवाहोंके हस्ताक्षर हों। शुरूमें दोनों नकलें भूदान-यज्ञ-समितिके प्रांतीय दफ्तरमें रहें। काफी दानपत्र जमा होने पर वे सर्व-सेवा-संघके पास रजिस्टर्ड पोस्टसे भेजे जायं। बिना रजिस्टर्ड भेजनेमें दानपत्र गु होनेका डर है, अिसलिअे रजिस्टर्ड पोस्टसे ही भेजे जायं। दानप पर विनोबाजीकी सही करवाकर सर्व-सेवा-संघ प्रांतीय भूदान-य समितिको वापस भेजेगा।

२. दानपत्रका फार्म

हिन्दी भाषा और नागरी लिपि जहां चल सकती है, वहांके तो जो दानपत्रका फार्म यहांसे भेजा गया था वह है। अन्य प्र हिन्दी-नागरी और प्रान्तीय भाषा-लिपि दोनों जिसमें हों अैसा ... गनी कागजकी अेक बाजू पर प्रांतीय भाषा और

भूदान-यज्ञ

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद–१४

यह अत्यन्त व्यापक योजना है, फिर भी मैं यह काम अेकदमसे व्यापक करना नहीं चाहता। मैं हरअेकके जीवनमें प्रवेश करना चाहता हूं और अुनसे निजी संपर्क साधना चाहता हूं। पूरे सोच-विचारसे और अपने कुटुम्बकी सम्मतिसे लोग जो देते हैं वही लेनेका विचार करता हूं। मैं तो अिसे अैसे ढंगसे करना चाहता हूं, जिसमें कोअी दोष न रहने पाये। अिसलिअे अभी किसी संस्थाको भी यह काम नहीं सौंप रहा हूं। जब यह बढ़ेगा तब अगला निर्णय किया जायेगा।

सोच-विचारकर लोग दे रहे हैं अिससे मुझे आनन्द है। अेक भी मनुष्य दिये बगैर न रहे अैसा मैं चाहता हूं। गरीब-श्रीमानका भेद ही मिथ्या है। हरअेकको भगवानने कुछ दिया है, तो हरअेक अुसका अेक हिस्सा मुझे दे। लोग देना शुरू कर देंगे तो हिन्दुस्तानकी हवा देखते-देखते बदल जायगी। जो शक्ति भूदानमें प्रकट हुअी है, वही संपत्ति-दान-यज्ञमें भी प्रकट होगी।

यह अद्‌भुत कल्पना मुझे सूझी है। भूदानके बाद मैं संपत्तिके बारेमें सोच रहा था। संस्थाओंके लिअे हमने परिग्रह किया। अब अपरिग्रहके आधार पर संस्थायें कैसी खड़ी करना, अुसकी शिक्षा संपत्ति-दान-यज्ञसे मिलेगी। हमें फण्ड अिकट्ठा नहीं करना है। जो अिस विचारको कबूल करेगा अुसीके घर हमारी निधि पड़ी है। परिग्रहसे अपरिग्रहमें लाख गुनी अधिक शक्ति है। संपत्ति-दानकी बात फैल जायेगी तब अपरिग्रहमें क्या शक्ति है, अिसका दर्शन लोगोंको होगा।

हरिजनसेवक, ३१–१–'५३

तक मुझे अुनके पास जाना पड़ता था। अब दो सालके बाद मैं मांग कर सकता हूं कि वे खुद मुझे जमीन दें और वही लोग अिस कामको अुठा लें; खुद तो दें ही, परन्तु दूसरोंसे भी मांगने जावें। वे यह काम अुठा लेंगे अैसा मैं मानता हूं। मेरी आवाज अुन तक पहुंचेगी और वे यह पहचानेंगे कि अिसमें जितना गरीबोंका भला है अुतना ही अुनका भी भला है। यही सर्वोदय है।

मुझे यह कहनेमें खुशी है कि कुछ लोग अिस काममें लग गये हैं। अभी अुनकी तादाद थोड़ी है। वह आगे बढ़ेगी। बापू श्रीमानोंको ट्रस्टी मानते थे, पंच मानते थे। अब वे बापूके कहनेके मुताबिक जनताके विश्वासपात्र साबित हों, गरीबोंका काम शुरू करें। मैंने कहा कि कुछ लोग अैसे निकले हैं, पर साथ ही कुछ लोग अैसे भी हैं, जो बेदखलियां करवा रहे हैं। मेरी अुनसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि भाअी, अैसा काम मत करो। अिससे परमेश्वरको दुःख होगा। वह नाराज होगा। अीश्वरके नाराज होनेसे किसीका भला नहीं होगा। हम तो श्रद्धावान हैं, बुद्धिकी बात नहीं करते। हमारे ऋषियोंने जो सिखाया है अुसको मानते हैं। मेरे मन पर अैसा असर है कि अिन दिनों जो अकाल आदि होते हैं, अुनका कारण हमारे पाप ही हैं। हम पापका आचरण छोड़ दें और आजके दिन शुभ संकल्प करें। दूसरोंको सताकर अपना लाभ करनेकी अिच्छा न करें। अिसके साथ मैं यह चाहता हूं कि जब तक भूमिका मसला हल नहीं होता, तब तक हम अपना पूरा समय और शक्ति अिसीमें लगायें। अन्य लाख कामोंका आकर्षण छोड़ दें। हम व्रत लेकर अिसमें जुट जायें। मैं तो यह व्रत ले ही चुका हूं और अुसे दोहराता भी रहता हूं। आज यह व्रत फिरसे अीश्वरके सामने, आपके सामने और बापूके सामने मैं दोहराता हूं। मैं चाहता हूं कि मेरे मित्र भी अैसा करें। व्रत लें। फिर वे देखेंगे कि हिन्दुस्तान कितना पुण्य प्रकट होता है। अुनके देखते-देखते कैसी क्रांति होती है

अभी हमने दो साल ही तो यह काम किया है। अेक साल मैं अकेला ही था। दूसरे साल कुछ सहायक बने। सर्व-सेवा-संघने

प्रकाशकका निवेदन

दो सालसे ज्यादा अरसा हुआ, जब श्री विनोबाको २८ अप्रैल १९५१ के दिन पहले-पहल भूदान-यज्ञकी क्रान्तिकारी कल्पना सूझी। भगवानके दिये हुअे हवा, पानी और प्रकाश पर जैसे सबका अधिकार है, अुसी तरह भगवानकी दी हुअी जमीन पर भी सबका अेकसा अधिकार है — अिस सिद्धान्तके आधार पर श्री विनोबा जमीन-मालिकोंसे जमीन लेकर बेजमीनोंको देना चाहते हैं और अिस तरह हमारी आजकी पतनोन्मुख अर्थ-रचनामें अुन्हें आर्थिक दृष्टिसे अपने पावों पर खड़ा करना चाहते हैं। अुन्हें जब यह कल्पना सूझी, तब वे हैदराबाद राज्यकी यात्रा कर रहे थे। अुसके बाद आज तक पैदल-यात्रा द्वारा अुन्होंने अुत्तर-भारतका काफी बड़ा हिस्सा घूम डाला है और वहांकी जनताको अपना भूदान-यज्ञका सन्देश सुनाया है। यह देखकर बड़ा हर्ष होता है कि सारे भारतकी जनताने श्री विनोबाके अिस अुदात्त सन्देशका अत्यन्त प्रेम और श्रद्धासे स्वागत किया है। अिसके अलावा, अुनके अिस आन्दोलनने बाहरी दुनियाका ध्यान भी अपनी ओर खींचा है। भारतके बाहरके लोगोंको यह देखकर आश्चर्य होता है कि भारतमें जमीन केवल मांगनेसे ही मिल सकती है। वे अिस चीजको भी बड़े आश्चर्य और अुत्सुकतासे देख रहे हैं कि श्री विनोबाने राज्यके हस्त-क्षेप या कानूनके बिना शांतिपूर्ण ढंगसे जमीनकी समस्या हल करनेका अहिंसक मार्ग खोज निकाला है। श्री विनोबाके अनोखे नेतृत्वमें धीरे-धीरे स्वरूप लेनेवाली, प्रगति करनेवाली और व्यापक बननेवाली तथा अैतिहासिक महत्त्व ग्रहण करनेवाली अिस मूक अहिंसक क्रान्तिका भारतके रचनात्मक कार्यकर्ताओं और राजनीतिक पार्टियों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। अिस आन्दोलनने अैसे सब लोगोंके लिअे अेक समान

र नमक वैसे रुचि पैदा करनेका काम करती है। जख्मी गाहियोंकी अुस सेवासे हिंसामें लज्जत पैदा होती है, युद्धमें च पैदा होती है, परन्तु युद्धकी समाप्ति अुस दयासे नहीं हो कती। अगर हम लोग अिस तरहकी दयाका काम करें कि निठुरताके राज्यमें दया प्रजाके नाते रहे, निर्दयताकी हुकूमतमें दया चले, तो हमने अपना असली काम नहीं किया। अिस तरह जो काम दयाके दीख पड़ते हैं, जो काम रचनात्मक भी दीख पड़ते हैं, अुन्हें हम दया और रचनाके लोभसे व्यापक दृष्टिके विना ही अुठा लें तो कुछ तो सेवा हमसे वनेगी। पर वह सेवा नहीं वनेगी जिसकी जिम्मेवारी हम पर है और जिसे हमने अपना स्वधर्म माना है।

मनुष्यके हृदयका कानून

मैं दूसरी स्पष्ट मिसाल देता हूं। मुझे हर कोअी पूछता है कि 'आपका वजन सरकार पर भी कुछ दीखता है, तो आप यह क्यों नहीं जोर लगाते कि सरकार कोअी कानून वना दे और विना मुआवजेके भूमि-वितरणका कोअी मार्ग खोल दे? आप अपना वजन क्यों नहीं अिस दिशामें अिस्तेमाल करते?' अैसा वहुत मरतवा लोग मुझसे पूछते हैं। मैं अुनको कहता हूं कि 'भाअी, कानूनके मार्गको मैं रोकता नहीं हूं। अिससे ज्यादा अगर और अेक कदम आप मुझसे चाहते हैं — आपकी दिशामें, आपकी अिच्छित दिशामें — तो मैं कहता हूं कि जो मार्ग मैंने अपनाया है, अुसमें यदि मुझे पूरा यश, सोलह आने यश नहीं मिला, वारह आने, आठ आने भी मिला, तो कानूनके लिअे सहूलियत होगी। अेक तो मैं कानूनको वाधा नहीं पहुंचा रहा हूं। और दूसरे, मैं कानूनको सहूलियत दे रहा हूं, अुसके लिअे अनुकूल वातावरण वना रहा हूं, ताकि कानून आसानीसे वनाया जा सके। पर अिससे भी अेक कदम आगे मैं आपकी दिशामें जाअूं और यही रटन रटूं कि 'कानूनके विना यह काम नहीं होगा, कानून वनाना चाहिये' तो मैं स्वधर्महीन सावित हूंगा। मेरा वह धर्म नहीं है। मेरा धर्म तो यह माननेका है कि विना कानूनकी मददसे जनताके हृदयमें हम अैसे भाव निर्माण करें, ताकि कानून

भूमिका तैयार कर दी है, जो चुपचाप और पार्टीबाजीसे दूर रहकर जनताकी अुन्नति और प्रगतिके लिये जनतामें काम करना चाहते हैं।

राष्ट्रके पुनर्निर्माणके अिस महान कार्यकी गतिविधिके समाचार हमारे दैनिक और साप्ताहिक पत्रोंमें हमेशा निकलते रहते हैं। 'हरिजन' पत्र अिसके प्रचार और प्रसारके प्रमुख वाहन रहे हैं। हमें लगा कि देशके लोगोंके सामने भूदान-आन्दोलनका प्रामाणिक विवरण रखनेका समय आ गया है। यही प्रस्तुत पुस्तकका मुख्य अुद्देश्य है। अिसमें 'हरिजन' में छपे श्री विनोबाके लेखों और भाषणोंका संग्रह किया गया है, जिससे पाठकोंको भूदान-यज्ञकी कल्पना, अुसके आरम्भ और क्रमिक विकासका ठीक खयाल आ सकेगा। आशा है यह पुस्तक अिस आन्दोलनके प्रणेता और प्रवर्तकके अपने शब्दोंमें भूदान-यज्ञका ध्येय पाठकोंके सामने रखनेमें सफल होगी।

१५–८–'५३

कार्य-पद्धतिके दो अंश

अिस दृष्टिसे यदि सोचेंगे तो सहज ही ध्यानमें आयेगा कि हमारी कार्य-पद्धतिके दो अंश होंगे। अेक अंश होगा विचार-शासन और दूसरा अंश होगा कर्तृत्व-विभाजन। मुझे जरा शास्त्रीय शब्द बनानेकी आदत है, और क्योंकि संस्कृत भाषा ही मैं विशेष जानता हूं, अिसलिअे संस्कृत शब्द आ जाते हैं। तो आप जरा मुझे क्षमा करेंगे।

सर्वोदय-समाजकी आधार-शिला

विचार-शासन यानी विचार समझाना और विचार समझना, बिना विचार समझे किसी बातको कबूल न करना, बिना विचार समझे अगर कोअी हमारी बात कबूल करता है तो दुःखी होना, अपनी अिच्छा दूसरों पर न लादना, बल्कि केवल विचार समझा करके ही संतुष्ट रहना। हमारी सर्वोदय-समाजकी योजनामें हमने जो रचना की है, अुसको कुछ लोग "लूज़ ऑर्गेनाअिजेशन" यानी "शिथिल रचना" कहते हैं। रचनाको अगर हम शिथिल करें तो कोअी काम नहीं बनेगा। अिस वास्ते रचना शिथिल नहीं होनी चाहिये। पर यह 'शिथिल रचना' न होते हुअे 'अरचना' है, यानी केवल विचारके आधार पर हम खड़े रहना चाहते हैं। हम किसीको आदेश नहीं देते, जिसे वे बिना समझे-बूझे ही अमलमें लायें। हम किसीका आदेश कबूल नहीं करते, जिसका कि बिना सोचे और बिना पसन्द किये हम अमल करते जायं। बल्कि हम तो सलाह-मशविरा करते हैं। कुरानमें भक्तोंका लक्षण गाया गया है कि अुनका वह 'अम्र' यानी काम परस्परके सलाह-मशविरेसे होता है। तो हम मशविरा करेंगे और बहुत खुश होंगे कि हमारी चीज हमारे सुननेवालेने, जब कि अुसको पसन्द नहीं आयी थी, मान्य नहीं की और अुस पर अमल नहीं किया। अुसके अमल न करनेसे हमें बहुत खुशी होगी। और बिना समझे-बूझे अगर वह अमल करता है तो हमें बहुत दुःख होगा। यह जो रचना है अुसमें मैं जितनी ताकत देखता हूं अुतनी और किसी कुशल रचनामें, स्पष्ट रचनामें और अनुशासनबद्ध रचनामें नहीं देखता। अनुशासनबद्ध

देशवासियोंसे

मेरे प्यारे भारतवासी वन्धुजनो,

गये वर्ष गर्मीके दिनोंमें मैं तेलंगानामें घूमता था। वहां जो विकट समस्या खड़ी थी अुसके वारेमें मेरा चिन्तन रोज चलता था। अेक जगह हरिजनोंकी मांग पर मैंने ग्रामवालोंसे भूमिदानकी वात कही। गांववालोंने यह वात मान ली और मुझे पहला भूमिदान मिला। अठारह अप्रैल (१९५१) का वह दिन था। अुसके वाद भूमिदान-यज्ञकी कल्पना मुझे सूझी और अुसको तेलंगानाके दौरेमें मैंने आजमाया। परिणाम अच्छा रहा। दो महीनोंमें वारह हजार अेकड़ जमीन मिली। मेरा खयाल है वहांकी परिस्थिति सुलझानेमें अुससे वहुत मदद मिली। सारे देश पर अुसका असर पड़ा। और आज हम देखते हैं कि तेलंगानाका वातावरण काफी शान्त हो गया है।

गांधीजीके जानेके वाद अहिंसाके प्रवेशके लिअे मैं रास्ता ढूंढ़ता था। मेवातके मुसलमानोंको वसानेका सवाल अुसी खयालसे मैंने हाथमें लिया था। अुसमें कुछ अनुभव मिला। अुसी आधार पर मैंने तेलंगाना जानेका साहस किया था। वहां भूदान-यज्ञके रूपमें मुझे अहिंसाका साक्षात्कार हुआ।

तेलंगानामें जो भूदान मिला, अुसके पीछे वहांकी अेक पृष्ठभूमि थी। अुस पृष्ठभूमिके अभावमें शायद हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंमें वह कल्पना चले या न चले, अिस वारेमें शंका हो सकती थी। अुस शंकाके निरसनके लिअे दूसरे प्रदेशोंमें भूदान-यज्ञको आजमाना जरूरी

तो यह है कर्तृत्व-विभाजन और अुस दिशामें हम जो सोचते हैं। हमारे कार्यक्रमके जो दो पहलू हैं वह मैंने बताये और अुन पहलुओंके मूलमें जो भूमिका है वह भी बतायी। कार्य-पद्धतिके बारेमें कुछ कहा और अुसके बाद कार्य-विभाजन किस तरह करना चाहिये, कार्यक्रम क्या होना चाहिये, अुसके बारेमें भी थोड़ासा कहा। अब हम कार्य-रचना पर आते हैं। अुसके बारेमें भी थोड़ेसे विचार बता दूं।

हमारी दो संस्थायें

रचनामें तो हमने अेक सर्व-सेवा-संघ माना है और दूसरा सर्वोदय-समाज। सर्वोदय-समाजका नाम चलेगा और सर्व-सेवा-संघका काम चलेगा। अिस तरह अेकका नाम और अेकका काम, ये दोनों मिलकर काम चलावेंगे। सर्व-सेवा-संघ शिथिल संस्था नहीं होगी, बल्कि मजबूत संस्था होगी; और सर्वोदय-समाज शिथिल या अशिथिल रचना अैसी दोनों प्रकारकी नहीं होगी, बल्कि अरचना ही होगी। वह विचारकी सत्ता माननेवाली मंडली होगी। हमें सोचना चाहिये कि सर्वोदय-समाज किस तरह और कैसे विचारवान बनेगा। यह सोचकर हमें अिस दिशामें काम करना चाहिये, क्योंकि वह विचारकी सत्ता माननेवाली संस्था है। यह संस्था अधिक विचार-परायण कैसे बने यह हमें सोचना है। वह अधिक अनुशासन माने अिस दृष्टिसे नहीं सोचना है, क्योंकि हम अनुशासन माननेवाले समाजोंकी संख्या नहीं बढ़ाना चाहते। हम तो अैसा समाज बनाना चाहते हैं, जिस पर विचारकी सत्ता चले। अिसलिअे सर्वोदय-समाजके सब सदस्योंको सोचना चाहिये, जिन्होंने नाम लिखाये हैं और जो यहां आये हैं, और जिन्होंने नाम नहीं लिखाये हैं, अुन सबको अैसा प्रयत्न करना चाहिये कि आम जनतामें विचार-प्रचार हो। दूसरी बात साहित्य-प्रचार होना चाहिये। अुसका चिन्तन और मनन होना चाहिये तथा जगह-जगह अध्ययन-वर्ग चलने चाहिये, जिनमें हमारे विचारका अध्ययन हो और दूसरे विचारोंके साथ अुनकी तुलना हो। अिस तरहका आयोजन हमें सर्वोदय-समाजके द्वारा करना चाहिये और सर्व-सेवा-संघको अेकरस बनना चाहिये। मुझे कबूल करना चाहिये कि अिच्छा रखते हुअे भी हम अिस दिशामें

था। प्लानिंग-कमीशनके सामने मेरे विचार रखनेके लिअे पंडित नेहरूने मुझे निमंत्रण दिया। अुस निमित्तसे मैं पैदल-यात्रा पर निकल पड़ा और दिल्ली तक दो महीनेमें करीब अठारह हजार अेकड़ जमीन मुझे मिली। मैंने देखा कि अहिंसाको प्रवेश देनेके लिअे जनता अुत्सुक है।

अुत्तर-प्रदेशवाले सर्वोदय-प्रेमी कार्यकर्ताओंकी मांग पर मैंने अुत्तर-प्रदेशके व्यापक क्षेत्रमें भूदान-यज्ञका प्रयोग आरम्भ किया। अुत्तर-प्रदेशमें अेक लाखसे ज्यादा देहात हैं। हर गांवमें कम-से-कम अेक सर्वोदय-परिवार बसाया जाय और अेक परिवारको कम-से-कम पांच अेकड़ जमीन दी जाय, अिस हिसाबसे पांच लाख अेकड़ जमीन प्राप्त करनेका संकल्प किया गया था। बावजूद अिसके कि बीचमें तीन महीने अधिकतर कार्यकर्ता चुनावमें व्यस्त रहे, लोगोंका सहयोग अच्छा मिला। अेक लाख अेकड़ तक हम पहुंच गये। मैं तो अिसमें ओश्वरी संकेत देखता हूं। मेरे बहुतसे साथियोंको भी अैसा ही लगा है। नतीजा यह हुआ कि सेवापुरीके सर्वोदय-सम्मेलनमें सबने मिलकर सारे हिन्दुस्तानमें अगले दो सालके अन्दर कम-से-कम २५ लाख अेकड़ जमीन प्राप्त करनेका संकल्प किया। यह बात अब आप लोगोंको मालूम हो गयी है।

२५ लाख अेकड़से हिन्दुस्तानके भूमिहीनोंका मसला हल हो जाता है अैसी बात नहीं। अुसके लिअे तो कम-से-कम पांच करोड़ अेकड़ जमीन चाहिये। लेकिन प्रथम किस्तके तौर पर अगर हम पचीस लाख अेकड़ जमा कर लेते हैं और हिन्दुस्तानके पांच लाख गांवोंमें अहिंसाका संदेश पहुंचा देते हैं, तो भूमिके न्यायोचित वितरणके लिअे जरूरी हवा तैयार हो जायगी अैसा मेरा विश्वास है।

बड़े काश्तकारों और जमींदारोंसे तो मैं जमीन मांगता ही हूं, लेकिन छोटे-छोटे काश्तकारोंसे भी अिसमें हाथ बंटानेकी मैंने प्रार्थना

मैंने किसीसे सलाह-मशविरा करना अुचित और लाभदायी नहीं माना। वल्कि नसीव आजमानेका सोचा और ओीश्वर पर भरोसा रखकर मांगना शुरू कर दिया। तो मांगते हुये अुसके आगे, पीछे, अूपर, नीचे, कौन-कौनसे भाव पड़े हैं, अुसका रोज-व-रोज मुझे नया-नया दर्शन मिलता गया; और अुन दिनोंके पचासों व्याख्यान आप पढ़ेंगे, तो हर व्याख्यानमें कोअी-न-कोअी नयी चीज पायेंगे। तो यह विपय अैसा अुत्तरोत्तर स्पष्ट होता गया। जमीन मिलती गयी और तेलंगानामें अेक दर्शन हुआ। फिर भी मनमें अेक शंका थी, और वह स्वाभाविक थी। मेरे मनमें अुतनी नहीं थी, लेकिन दूसरोंके मनमें काफी थी। तेलंगानामें अेक पृष्ठभूमि थी, जिसके कारण यह वात वनी। शायद देशके दूसरे हिस्सोंमें वैसा न भी वने। जव दिल्ली जानेका मौका आया, और पं० नेहरूका निमंत्रण तो था फौरन आनेका, तो फौरन निकलना कवूल किया। लेकिन अपने ढंगसे पैदल चल कर जानेका सोचा। रास्तेमें यह वात मैं लोगोंको समझाता गया। नतीजा अुसका यह हुआ कि दिल्ली तक लोगोंने अुतना ही अुत्साह वताया जितना कि तेलंगानामें दीख पड़ा। अुससे अेक वात स्पष्ट हुअी कि तेलंगानाकी यह कोअी खास वात नहीं है, वल्कि अिस जमानेकी ही यह वात है। यानी काल-प्रवाह अिसके अनुकूल है। तव तक जो जमीन मिलती गयी वह हम लेते गये। पर जहां अुत्तर-प्रदेशमें घूमनेकी वात आअी, वहां मैंने अेक कोटा मुकर्रर किया और अुसका संकल्प वनाया। वह छोटासा था, लेकिन अुसको सामने रखकर काम शुरू किया। अुत्तर-प्रदेशके साथियोंने, जो संख्यामें कम थे, वहुत वहादुरीसे काम किया और सतत दस महीने आगे-पीछे दौड़े। अुनमें से कुछ विशेष काममें लगे रहे। अुनके सहयोगसे दिखा कि संकल्प सिद्ध हो सकता है। और आज अुन लोगोंने सम्मेलनमें जाहिर किया कि वह संकल्प करीव-करीव पूरा हो चुका। पांच लाख अेकड़ करने थे। पौने पांच लाख हो चुके, पच्चीस हजार वे कर सकते हैं। अितना ही नहीं, वल्कि अगले साल कुल मिलाकर ग्यारह लाख अेकड़ जमा करनेका भी निश्चय कर लिया। यहां भी वह जाहिर किया है और अुन

की है। और मुझे कहनेमें खुशी होती है कि वड़े दिलवाले अिन छोटे लोगोंने वहुत प्रेमसे मेरी प्रार्थना मान्य की है। अिस यज्ञमें कअी शवरियोंने अपने वेर दिये हैं और कअी सुदामाओंने अपने तंदुल समर्पण किये हैं। यह मेरे लिअे अेक चिरस्मरणीय भक्तगाथा वन गअी है। अिससे दरिद्रोंको आत्मोद्धारकी प्रेरणा मिली है और श्रीमानोंको आत्मशुद्धि और स्वामित्व-निरसनकी।

मुझे भूमि सव तरहके लोगोंने दी है। हिन्दुओंने दी है, मुसलमानोंने दी है, दूसरे धर्मवालोंने दी है। जो सव तरहसे "सव हारा" गिने ज्ञायंगे, अैसे हरिजनोंने भी दी है। जिनका भूमि पर अधिकार नहीं माना जाता, अैसी स्त्रियोंने भी दी है। देनेवालोंमें सव तवकों और सव पक्षोंके लोग शामिल हैं। दरिद्र-नारायणको अपने कुटुम्वका अेक अंश समझकर हकके तौर पर दी जाय, अिस तरह मैंने जमीन मांगी है। और वैसी ही भावनासे लोगोंने दी है।

भूमिदान-यज्ञमें 'दान' शव्द आता है। अुससे परहेज करनेकी जरूरत नहीं है। "दानं संविभागः"—दान यानी सम्यक् विभाजन। यह है शंकराचार्यकी दानकी व्याख्या। अुसी अर्थमें हम अुस शव्दका प्रयोग करते हैं। जिसको जमीन मिलेगी वह मुफ्त खानेवाला नहीं है। वह जमीन पर मेहनत-मशक्कत करेगा, अपना पसीना अुसमें मिलायेगा, तव खा सकेगा। अिसलिअे अुसे दीन वननेका कारण नहीं है। अुसका अपना अधिकार हम अुसे दिला रहे हैं।

हम विनयसे, प्रेमसे और वस्तुस्थिति समझाकर जमीन मांगते हैं। हमारे तीन सूत्र हैं:

१. हमारा विचार समझने पर अगर कोअी नहीं देता है, तो अुससे हम दुःखी नहीं होते। क्योंकि हम मानते हैं कि

जरूरत होती है। तो अिस प्रान्तका कार्यक्रम पूरा करके अिस प्रान्तके लोग अगले सम्मेलनके लिअे मुझे किसी दूसरे प्रान्तमें भेजें; अर्थात् यह बत्तीस लाख करनेकी जो बात है, वह अेक सालके अन्दर पूरी करनेमें हम लोग लग जायं तो बहुत अच्छा होगा।

दूसरे प्रान्तवाले काम न करें तो?

अब जाहिर है कि हमने पच्चीस लाखका अगले साल तक संकल्प किया। अिसलिअे अगर बिहारमें ही हमने बत्तीस लाख अेकड़ पूरे कर लिये, तो हमारे संकल्पमें कमी तो नहीं रहेगी। अगर यह व्यूह असफल रहा तो दूसरी बात है। लेकिन अगर सफल रहा तो कोअी बाधा अुसमें नहीं होगी और देखते-देखते दूसरे प्रान्तमें क्रान्ति हो जायगी। कुछ ज्यादा करना भी नहीं पड़ेगा। अेक भाअीने कहा कि बिहारमें काम होने पर भी, जितनी जमीन आप चाहते हैं अुतनी मिलने पर भी, अगर दूसरे प्रान्तके लोग कुछ न करें तो वहां क्या होगा? तो मैंने कहा कि आपका यह सवाल मानस-शास्त्रके विरुद्ध है। मानस-शास्त्र अिस तरह काम नहीं करता। लेकिन घड़ी भर कल्पना करो कि दूसरे प्रान्तमें कुछ नहीं हुआ; तो वहां दो-तीन चीजें बनेंगी। अेक तो यह होगा कि अुस प्रान्तके लोग बगावत करेंगे या यह होगा कि वहांकी सरकार बिहारका मसला हल होते देखकर कानून बनायेगी। तो या तो कानूनसे काम होगा या बगावत होगी, यानी राज्यक्रांति होगी। लेकिन अितनी बड़ी घटना अेक प्रान्तमें हो और अुसका कोअी परिणाम दूसरे प्रान्त पर न हो, अितना छिन्न-विच्छिन्न मानव-समाज नहीं है। बल्कि मानव-समाजमें अेक जगहकी अनुभूति दूसरी जगह पहुंचती है। और संवेदनाकी क्षमता अिस वक़्त काफी अच्छी है। हिन्दुस्तानमें भी और बाहरके देशोंमें भी। तो अैसी कल्पना करनेकी जरूरत नहीं है, यह मैंने कल कहा था। यह मैंने आप लोगोंके सामने मेरा व्यूह रखा है और मेरी जो मांगें हैं वे भी आपके सामने रखी हैं।

हरिजनसेवक, ३०–५–'५३

जो आज नहीं देता वह कल देनेवाला है। विचार-वीज अुगे वगैर नहीं रहता।

२. हमारा विचार समझकर अगर कोअी देता है, तो अुससे हमें आनन्द होता है। क्योंकि अुससे सव दूर सद्भावना पैदा होती है।

३. हमारा विचार समझे वगैर किसी दवावके कारण अगर कोअी देगा, तो अुससे हमें दुःख होगा। हमें किसी तरह जमीन वटोरनी नहीं है, वल्कि साम्ययोग और सर्वोदयकी वृत्ति निर्माण करनी है।

मैं मानता हूं कि यह अेक अैसा कार्यक्रम है, जिसमें सव पक्षोंके लोगोंको समान भूमि पर काम करनेका मौका मिलता है। लोग कांग्रेसकी शुद्धिकी वात करते हैं। शुद्धिकी तो सव संस्थाओंको जरूरत है। लेकिन कांग्रेसका नाम अिसलिअे लिया जाता है कि वह वड़ी संस्था है। मेरा विश्वास है कि कांग्रेस और दूसरी संस्थायें अगर अिस कार्यक्रमको अपनायेंगी और सत्य-अहिंसाके तरीकेसे अुसे चलायेंगी, तो अुससे सवकी शुद्धि होगी, सवका वल वढ़ेगा और सवमें अेकता आयेगी।

मेरे भारतवासी वन्धुजनो, आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप अिस प्रजासूय-यज्ञमें अपना भाग दें और अिस कामको सफल करके आर्थिक क्षेत्रमें अहिंसाकी प्रतिष्ठा करें। मेरा अिस कामके लिअे तिहरा दावा है। अेक तो यह कि यह भारतीय सभ्यताके लिअे अनुकूल है; दूसरा, अिसमें आर्थिक और सामाजिक क्रांतिका वीज है; और तीसरा, अिससे दुनियामें शान्ति स्थापनाके लिअे मदद मिल सकती है।

मैं जानता हूं कि सारे हिन्दुस्तानके सामने कोअी कार्यक्रम रखनेका मुझे अधिकार नहीं है। लोगोंको आदेश देनेवाला मैं कोअी नेता नहीं

सोचनेकी बात है कि परलोकका नाम क्यों लिया जाता है? अिसलिअे लिया जाता है कि जब अेक व्यक्तिको हम कहते हैं कि तुझे सत्य पर अविचल रहना चाहिये और अुसमें तुझे नुकसान नहीं होगा बल्कि लाभ ही होगा, तो अुसके जवाबमें वह कहता है कि फलाने मौके पर वह सत्य बोलता है तो अुसका नाश होता है और असत्य बोलता है तो बच जाता है। अब आप अुसको क्या कहेंगे? अुस हालतमें भी असत्य नहीं बोलना चाहिये। देशके हितके लिअे, प्राणोंके बचावके लिअे भी असत्य नहीं बोलना चाहिये। अिस तरह जो अविचल सत्यनिष्ठा मानना चाहते हैं, वे अुसके लिअे क्या आधार बतायेंगे? अतः जिन्होंने अेक दूसरे ढंगसे सोचा था अुन्होंने परलोकका आधार बताया कि भाअी, असत्य बोलोगे तो चाहे अिस दुनियामें लाभ होता हुआ दिखे, लेकिन परलोकमें लाभ नहीं होगा। और वह परलोक ही कायमका है। यह दुनिया तो चन्द दिनोंकी है। अिसलिअे चन्द दिनोंका लाभ देखकर कायमका लाभ नहीं छोड़ना चाहिये। यह अेक बालभाषा थी, बाल-भाषा यानी अविकसित भाषा। अगर विकसित भाषामें बोलना है तो कहना चाहिये कि अगर हम असत्य बोलते हैं तो अंतःसमाधान नहीं हो सकता। और अंतःसमाधानकी कल्पना समझना या समझाना जहां कठिन हो जाता है, वहां परलोककी यानी मृत्युके बादके जीवनकी भाषा काममें लायी जाती है। अिसलिअे चाहे आप अंतःसमाधानका आधार रखो, चाहे परलोककी जिन्दगीका नाम लो, हर हालतमें सत्यादि नीतिधर्मों पर अविचल कायम रहना है यह मुख्य वस्तु है। और अिसकी सिद्धिके लिअे तथा प्रेरणाके तौर पर परलोकका, आत्म-कल्याणका या अंतःसमाधानका नाम लिया जा सकता है। अिसलिअे जिसकी भूमिकाका जितना विचार हुआ होगा, अुसके अनुसार वह सत्यका अुपयोग करेगा। अतः हम यह जरूर समझते हैं कि सत्यादि नीतिधर्मके अविचलित पालनके लिअे अंतःसमाधानसे बढ़कर दूसरी कोअी प्रेरणा अच्छी नहीं हो सकती। पर जिन्होंने परलोक आदिका आधार लिया था, अुन्होंने कोअी गलत काम नहीं किया था; क्योंकि अुनका हेतु अविचलित सत्यनिष्ठा कायम रहे यही था। यह तो मैंने

हूं। ग्रामीणोंकी सेवाको ही अपनी परमार्थ-साधना समझनेवाला मैं अेक भक्तिमार्गी मनुष्य हूं। आज अगर गांधीजी होते तो अिस तरह मैं लोगोंके सामने अुपस्थित नहीं होता, बल्कि वही देहातका भंगीकाम और कांचन-मुक्त खेतीका प्रयोग करता हुआ आपको दीखता। लेकिन परिस्थितिवश मुझे बाहर आना पड़ा है और अेक महान यज्ञका पुरोहित बननेकी धृष्टता करनी पड़ी है। यह धृष्टता या नम्रता जो भी हो, परमेश्वरको समर्पण करके मैं सब भाअी-बहनोंके सहयोगकी याचना कर रहा हूं।

अकबरपुर, २८-४-'५२

हरिजनसेवक, १७-५-'५२

अुत्तर : अगर पुराने नेताओंको फिरसे संजीवन मिलता है तो अुसमें क्या हानि है? अगर अुनको यह विचार पसन्द आये और अुनमें परिवर्तन हो जाय, तो फिर अुन्हें नेतृत्व मिलेगा तो अुसमें क्या बुराअी है? और अगर अुनका ढोंग ही है तो अुसकी भी अिस काममें परख होगी। संस्कृतमें श्लोक है कि 'वसंतसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः'— कौआ और कोयल दोनों काले होते हैं, परन्तु वसन्त ॠतु आने पर दोनोंकी पहचान हो जाती है। अिसी तरह अिस काममें जो नकली लोग होंगे वे दीख पड़ेंगे। पर नया नेतृत्व अिस काममें नहीं होगा तो और किस काममें होगा? यह अेक अैसा आन्दोलन निकला है, जो सारे समाजको त्यागकी प्रेरणा देता है। अिसमें नये-नये लोग आ रहे ह और अुससे नया नेतृत्व निर्माण होता है।

प्रश्न : आप कहते हैं कि साधन अच्छे हों यह हमारा आग्रह है। तो फिर आप भूदान-यज्ञके कामके लिअे बुरे मनुष्योंका क्यों अुपयोग करते हैं?

अुत्तर : जो बुरा मनुष्य माना जाता है, वह हमेशाके लिअे अैसा नहीं है। अैसा पुराना खयाल था कि ब्राह्मणके कुलमें जन्म हुआ तो वह ब्राह्मण ही रहेगा, अुसमें परिवर्तन नहीं हो सकता है। वैसे ही यह प्रश्नकर्ता सोचता है। मनुष्यमें हमेशा परिवर्तन हुआ करता है। अिसलिअे हम मनुष्यको अच्छा या बुरा नहीं मानते हैं। साधन कैसे हों यह हम देखते हैं। अगर बुरा मनुष्य भी अिस काममें आयेगा और धमका कर जमीन मांगेगा तो अुसे जमीन नहीं मिलेगी। अगर कोअी धमकाने लगेगा तो लोग अुससे कहेंगे कि विनोबाजी तो अैसा नहीं कहते हैं। अिस जवाबसे वह धमकानेवाला फीका पड़ जायगा। कुछ लोग कहते हैं कि कैसा भी लोभ या डर दिखाया जा सकता है। लेकिन अैसा कहनेवालेके बारेमें जनता कहेगी कि तू अिस टोलीमें शोभा नहीं देता। अिस प्रकार अिस काममें प्रतिक्षण भले-बुरेकी परीक्षा होती है।

हरिजनसेवक, १-८-'५३

हमारे हिन्दी प्रकाशन

	रु. न.पै.
अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
आरोग्यकी कुंजी	०.४४
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	०.७५
गीताका संदेश	०.३०
गोखले — मेरे राजनीतिक गुरु	०.५०
गोसेवा	१.५०
नयी तालीमकी ओर	१.००
बापूकी कलमसे	२.५०
बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको	१.२५
बापूके पत्र — २ : सरदार वल्लभभाओके नाम	३.००
बापूके पत्र मीराके नाम	३.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मंगल-प्रभात	०.३७
यरवडाके अनुभव	१.००
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१.५०
वर्ण-व्यवस्था	१.५०
विद्यार्थियोंसे	२.००
शाकाहारका नैतिक आधार	०.२५
शिक्षाकी समस्या	२.५०
संतति-नियमन : सही मार्ग और गलत मार्ग	०.४०
सच्ची शिक्षा	२.००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
स्त्रियां और अुनकी समस्यायें	१.००
हिन्द स्वराज्य	०.७०
महादेवभाअीकी डायरी — भाग १	५.००
महादेवभाअीकी डायरी — भाग २	५.००
महादेवभाअीकी डायरी — भाग ३	६.००

अनुक्रमणिका

भूदान-यज्ञ

बुनियादी कल्पना

[वारंगलमें दिये गये भाषणसे ।]

हमारा यह मानव-समाज हजारों वर्षोंसे अिस पृथ्वी पर जीवन विता रहा है। पृथ्वी अितनी विशाल है कि पुराने जमानेमें अिधरके मानवको अुधरके मानवसे कोअी पहचान नहीं रहती थी। हरअेकको शायद अितना ही लगता था कि अपनी जितनी जमात है अुतनी ही मानव-जाति है। पृथ्वीके अुधर क्या होता होगा, अिसका भान भी शायद अुन्हें नहीं था। लेकिन जैसे जैसे विज्ञानका प्रकाश फैलता गया, वैसे वैसे मनुष्यका संपर्क सृष्टिके साथ वढ़ता गया और मानसिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सभी दृष्टियोंसे मानवोंका आपसी संपर्क भी वढ़ता गया। जव कभी दो राष्ट्रोंका या दो जातियोंका संपर्क हुआ, तो हर वार वह मीठा ही सावित हुआ हो, अैसी वात नहीं है। कभी वह मीठा होता था, कभी कड़वा; लेकिन कुल मिलाकर अुसका फल मीठा ही रहा।

अिस वातकी मिसाल दुनिया भरमें मिल सकती है। लेकिन सारी दुनियाकी मिसाल हम छोड़ भी दें और केवल भारतका ही खयाल करें, तो मालूम होगा कि वहुत प्राचीन जमानेमें यहां जो आर्य लोग रहते थे, अुनकी संस्कृति हिन्दुस्तानकी पहाड़ी संस्कृति थी और दक्षिणमें जो द्रविड़ लोग रहते थे, अुनकी संस्कृति समुद्रकी संस्कृति थी। अिस तरह द्रविड़ों और आर्योंकी संस्कृतिके मिश्रणसे अेक नयी संस्कृति वनी। पहले ये दोनों संस्कृतियां, अुत्तर और दक्षिणकी, अलग-अलग रहीं। हजारों वर्षों तक अिन लोगोंमें आपसमें कोअी सम्वन्ध नहीं था, क्योंकि वीचमें अेक वड़ा भारी दंडकारण्य पड़ा था। लेकिन फिर दो जमातोंका संवंध हुआ। अुसमें से कुछ मीठे और कुछ कड़वे अनुभव आये और अुनका नतीजा आजका भारतवर्ष है। द्रविड़ लोग यहांके वहुत

कुछ खोयेगी नहीं, वल्कि कुछ पायेगी ही। यह देखो न! हिन्दुस्तानमें — वावजूद अिसके कि पश्चिमके विचारोंका प्रवाह निरंतर यहां आता रहा — पहलेके जमानेमें जितने आध्यात्मिक विचारवाले महापुरुष पैदा हुअे, अुनसे कम अिस जमानेमें नहीं हुअे। यहां नाम गिनानेमें तो समय जायेगा। अव अिस समय भी संघर्ष हो रहा है, टक्कर हो रही है, मिश्रण हो रहा है; यह जो वीचकी अवस्था है, अुसमें कअी प्रकारके परिणाम होते हैं।

कम्युनिस्टोंमें विचारका अुदय

गांधीजीके जानेके वाद जव मैं सोचता रहा कि अव मुझे क्या करना चाहिये, तो मैं निर्वासितोंके काममें लग गया। परन्तु यहांके कम्युनिस्टोंके प्रश्नके वारेमें मैं वरावर सोचता रहा। यहांकी खून आदिकी घटनाओंके वारेमें मुझे जानकारी मिलती रहती थी, फिर भी मेरे मनमें कभी घवराहट नहीं हुअी। क्योंकि मानव-जीवनके विकासका कुछ दर्शन मुझे हुआ है। अिसलिअे मैं कह सकता हूं कि जव जव मानव-जीवनमें नयी संस्कृति निर्माण हुअी है, तव तव कुछ संघर्ष भी हुआ है, रक्तकी धारा भी वही है। अिसलिअे हमें विना घवराये शांतिसे सोचना चाहिये और शांतिमय अुपाय ढूंढ़ना चाहिये।

यहां शान्तिके लिअे सरकारने पुलिस भेज दी है, लेकिन पुलिस कोअी विचारक होती है अैसी वात नहीं है। वह तो शस्त्र-संपन्न होती है और शस्त्रोंके जोर पर ही मुकावला करती है। अिसलिअे जंगलमें शेरोंके वन्दोवस्तके लिअे पुलिसको भेजना विलकुल कारगर हो सकता है और वह पुलिस शेरोंका शिकार करके हमें अुन शेरोंसे वचा सकती है; लेकिन यह कम्युनिस्टोंकी तकलीफ शेरोंकी नहीं, मानवोंकी है। अुनका तरीका चाहे गलत क्यों न हो, अुनके जीवनमें कुछ विचारका अुदय हुआ है; और जहां विचारका अुदय हुआ होता है, वहां सिर्फ पुलिससे प्रतिकार नहीं हो सकता। सरकार यह वात जानती है। वावजूद अिसके अपना कर्तव्य समझकर सरकारने पुलिसकी योजना की है। अिसलिअे मैं अुसे दोष नहीं देता।

विचार-शोधनका प्रमुख साधन: चरैवेति

तो मैं अिस तरह प्रस्तुत समस्याके वारेमें सोचता था और मुझे तव सूझा कि अिस मुल्कमें घूमना चाहिये। लेकिन घूमना हो तो कैसे घूमा जाय? मोटर आदि साधन विचार-शोधक नहीं हैं। वे समय-साधक हैं, फासला काट सकते हैं। जहां विचार ढूंढ़ना है वहां शांतिका साधन चाहिये। पुराने जमानेमें तो अूंट, घोड़े आदि थे। लोग अुनका अुपयोग भी करते थे और रातभरमें दो सौ मील तक निकल जाते थे। परन्तु शंकराचार्य, महावीर, वुद्ध, कवीर, चैतन्य, नामदेव जैसे लोग हिन्दुस्तानमें घूमे और पैदल ही घूमे। वे चाहते तो घोड़े पर भी घूम सकते थे, परन्तु अुन्होंने शीघ्रगामी साधनका सहारा नहीं लिया। क्योंकि वे विचारका शोधन करना चाहते थे। और विचार-शोधनके लिअे सवसे अुत्तम साधन पैदल घूमना ही है। अिस जमानेमें वह साधन अेकदम सूझता नहीं, परन्तु शांतिपूर्वक विचार करें तो सूझेगा कि पैदल चले विना चारा नहीं है।

वामनावतारका जन्म

अिस तरह मैं वर्धासे शिवरामपल्ली आया और वहांसे यहां तक अव कोअी छह हफ्ते होते हैं। अिस वीच मैंने हर गांवका अधिकसे अधिक परिचय प्राप्त किया। कम्युनिस्टोंके कामके पीछे जो विचार है, अुसका सारभूत अंश हमें ग्रहण करना होगा, अुस पर अमल करना होगा। यह अमल कैसे किया जाय, अिस वारेमें मैं सोचता था तो मुझे कुछ सूझ गया। ब्राह्मण तो मैं था ही, वामनावतार मैंने ले लिया और भूमिदान मांगना शुरू कर दिया।

पहले-पहल लगता था कि अिसका परिणाम वातावरण पर क्या होगा? थोड़ेसे अमृत-विन्दुओंसे सारा समुद्र मीठा कैसे होगा? पर धीरे-धीरे विचार वढ़ता गया। परमेश्वरने मेरे शब्दोंमें कुछ शक्ति भर दी; लोग समझ गये कि यह जो काम चल रहा है, क्रांतिका काम है और सरकारकी शक्तिके परे है; क्योंकि यह काम तो जीवन वदलनेका काम है।

अब लोग मुझे दान देने लगे। अेक जगह हरिजनोंने अस्सी अेकड़ जमीन मांगी और अेक भाअीने सौ अेकड़ जमीन देदी। अिस तरह लोग मुझे देने लगे। यद्यपि लोगोंने मुझे काफी दिया, तो भी मेरा काम अितनेसे पूरा नहीं होता। आज नलगुंडाके अेक भाअी आये। अुन्होंने पचास अेकड़ दिये थे। अुनकी जमीनका कुछ झगड़ा था, अुसका निबटारा हो गया और आज अुन्होंने पांच सौ अेकड़ जमीन दे दी। अुनके हिस्सेकी जमीनका यह चौथा हिस्सा होता है।

यह समस्या जागतिक है

अिस तरह जब विचार फैलेगा तब काम होगा। मैं चाहता हूं कि दरिद्र-नारायणको, जो भूखा है और अब जाग गया है, आप अपने कुटुम्बका अेक हिस्सा समझ लें और आपके परिवारमें चार लड़के हों तो अुसे पांचवां मान लें। अेक भाअीके पास पांच अेकड़ जमीन थी। अुस भाअीसे मैंने जमीन मांगी, तो अुसने मुझे कहा कि मेरे घरमें आठ लड़के हैं। मैंने पूछा कि अगर नौवां आया, तो अुसे भी सहोगे या नहीं? तो अुसने कहा: 'हां।' मैंने कहा: 'यही समझो कि मैं नौवां हूं और मुझे भी कुछ दे दो।' समझ लीजिये कि दस हजार अेकड़वाला सौ अेकड़ देता है। आंकड़ा दीखनेको बहुत बड़ा दीखता है, पर दाता और दरिद्र-नारायण दोनोंके हिसाबसे वह कम है। अिस आंकड़ेसे मैं तो संतुष्ट हो जाअूंगा, परन्तु देनेवालोंको नहीं होना चाहिये। अगर अैसा होता कि यहां कोअी भूखकी या चंद लोगोंके संकट-निवारणकी समस्या होती और मैं दान मांगता, तो थोड़ा-थोड़ा देनेसे भी काम चल जाता। परन्तु यहां तो अेक राजकीय समस्या हल करनी है, अेक सामाजिक समस्या सुलझानी है, जो समस्या न सिर्फ अिन दो जिलोंकी है, न सिर्फ हिन्दुस्तानकी है, बल्कि पूरी दुनियाकी है। और जहां अैसी राजनीतिक व सामाजिक क्रांति करनेकी बात है, वहां तो मनोवृत्ति ही बदल देनेकी जरूरत होती है। अगर कोअी छोटासा संकल्प होता, तो अल्पदानसे भी काम चल जाता। परन्तु यहां दस हजार अेकड़ जमीन रखनेवाले यदि सौ अेकड़ देने लगेंगे तो काम नहीं चलेगा।

प्रेम और विचारकी शक्तियोंका आवाहन

अुन्हें तो दरिद्र-नारायणको अपने परिवारका अेक हिस्सा समझकर दान देना चाहिये। मैं गरीब और श्रीमान सबका मित्र हूं। मुझे तो मैत्रीमें ही आनन्द आता है। जो शक्ति मैत्रीमें है वह द्वेषमें नहीं है। अनेक राजाओंने लड़ाअियां लड़ कर जो क्रांति नहीं की, वह बुद्ध, अीसा, रामानुज आदिने की। अिनमें से अेक-अेक आदमीने जो काम किया, वह अनेक राजाओंने मिलकर नहीं किया। अर्थात् प्रेम और विचारकी तुलनामें दूसरी कोअी शक्ति नहीं है। अिस वास्ते बार-बार समझानेका काम पड़े तो भी मैं तैयार हूं। दो दफा समझानेसे कोअी न समझ सका तो तीन दफा समझाअूंगा। तीन दफा समझानेसे यदि नहीं समझ सका तो चार दफा समझाअूंगा। और चार दफा समझानेसे भी नहीं समझेगा तो पांच दफा समझाअूंगा। समझाना ही मेरा काम है। जब तक मैं कामयाब नहीं होता, तब तक मैं हारूंगा नहीं, निरन्तर समझाता ही रहूंगा।

जो मैं चाहता हूं वह तो सर्वस्व-दानकी बात है। जैसे पोतना कविने (तेलगू) भागवतमें बताया है — "तल्लिदंडुल भंगि धर्मवत्सलतनु दीनुल गाव चिंतिर्चुवाडु धर्मवत्सलतनु।" माता-पिताके समान चिन्ता करनेकी यह अुपमा मैं आपको लागू करना चाहता हूं। जिस प्रेमसे माता-पिता बच्चोंके लिअे काम करते हैं, भूखे रह कर अुन्हें खिलाते हैं, अुनके लिअे सर्वस्वका त्याग करते हैं, वह शक्ति और वह प्रेम मैं आप लोगोंसे प्रगट कराना चाहता हूं।

विचार-क्रान्तिके लिअे भूमि तैयार है

आज मैं जेलमें यह जाननेके लिअे कम्युनिस्ट भाअियोंसे मिलने गया था कि अुनके क्या विचार चल रहे हैं। अुनके साथ जो बात-चीत हुअी, वह पूरी यहां बतानेकी आवश्यकता नहीं है। पर अुन्होंने अेक सवाल मुझसे किया: "क्या आप अिन श्रीमानोंको वापिस अपने घरोंमें ले जाकर बसाना चाहते हैं? क्या अुनके दिलमें परिवर्तन होनेवाला है? आपको वे लोग ठग रहे हैं।" कुछ अिस तरहका अुनका भाव था। मुझे वहां अुनसे बहस नहीं करनी थी, न अुनके हर

प्रश्नका जवाब ही देना था। लेकिन अगर यह बात सही है कि हरअेकके हृदयमें परमेश्वर विराजमान है और हमारे श्वासोच्छ्वासका नियमन वही करता है और सारी प्रेरणा वही देता है, तो मेरा विश्वास है कि परिवर्तन जरूर हो सकता है। अगर कालात्मा खड़ा है और कालात्मा परिवर्तन करना चाहता है, तो परिवर्तन होने ही वाला है। मनुष्य चाहे या न चाहे, जब मनुष्य प्रवाहमें पड़ता है, तब अुसकी तैरनेकी शक्ति ही अुसके काम नहीं आती, प्रवाहकी शक्ति भी काम आती है। अुसी तरह मनुष्यके हृदयमें परिवर्तनके लिअे काल-प्रवाह मददरूप होता है। आज तो सबकी भूमि तपी हुअी है। अैसी तपी हुअी भूमि पर प्रेमकी दो बूंद छिड़कानेका काम अगर भगवान मुझसे करवाना चाहता है, तो मैं वह खुशीसे कर रहा हूं। मैं तो गरीबोंसे भी जमीन ले रहा हूं। मैं अेक अेकड़वालेसे भी अेक गुंठा ले आया हूं। अगर वह आधा गुंठा देता तो भी मैं ले लेता। लोग पूछते हैं कि अेक गुंठा जमीनका मैं क्या करूंगा? मैं कहता हूं, कोअी हर्ज नहीं। जिसने मुझे वह अेक गुंठा दिया है, अुसीको ट्रस्टी बनाकर मैं वह जमीन अुसे सौंप दूंगा और कहूंगा कि जो पैदावार अिसमें होगी वह गरीबोंको दे देना। अेक अेकड़वालेकी अेक गुंठा देनेकी वृत्ति होना, अिसे ही मैं विचार-क्रांति कहता हूं। जहां विचार-क्रांति होती है, वहीं जीवन प्रगतिकी ओर बढ़ता है। 'अभिप्राज्यम् राज्यम् तृणमिव परित्यज्य सहसा'—अेक घासके तिनकेकी तरह राज्यका परित्याग करनेवाले त्यागी अिस भूमिमें हो गये हैं।

जीवन-परिवर्तनकी प्रेरक प्रक्रिया

विचार-शक्तिकी कोअी हद नहीं होती। अेक विचार अेक मनुष्यको अैसा सूझता है कि अुससे मनुष्यके जीवनमें क्रांति हो जाती है। आपने देखा कि कुछ महापुरुष भी अैसे होते हैं, जिनके विचारमें अैसी शक्ति होती है कि वे दूसरेके जीवनको पलट देते हैं। अिसलिअे विचारको जगानेके लिअे मैंने अुस गरीबसे भी अेक गुंठा जमीन ले ली। और जहां मैं अुन श्रीमानोंसे जमीन ले रहा हूं, वहां अुनके सिर पर मेरा वरद-हस्त है कि "भाअियो, तुम्हें अब शहरमें भागकर जानेकी

आवश्यकता नहीं है। कव तक भागते रहोगे?" यानी जहां मैंने श्रीमानोंसे सौ अेकड़ दान लिया, वहां मैंने अुनके मनमें अेक अच्छा विचार भी जगा दिया। हरअेक मनुष्यके दिलमें अच्छे-वुरे विचार होते हैं। अव अुसके हृदयमें अेक लड़ाअी शुरू होती है, अेक महाभारत युद्ध शुरू होता है।

"सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय
सच्चाऽसच्च वचसी पस्पृधाते
तयोर्यत् सत्यं यतरत् अृजीयः
तदित् सोमोऽवति हंति आ असत्।"

जाननेवाले जानते हैं कि हर मनुष्यके हृदयमें सत् और असत्की लड़ाअी नित चलती रहती है। जो सत् होता है अुसकी रक्षा होती है और जो असत् होता है अुसका विनाश होता है। अिसीलिअे दाता ढोंगी है, अैसा माननेका कारण नहीं है। परन्तु अुसके द्वारा अन्यायके भी कअी काम हुअे होते हैं। विना अन्यायके हजारों अेकड़ जमीन कभी जमा हो सकती है? अर्थात् जिन्होंने दान दिया है अुन श्रीमानोंके जीवनमें कअी तरहका अन्याय और अनीति होना संभव है। परन्तु अुनके हृदयमें भी अेक झगड़ा शुरू होगा कि क्या हमने जो अन्याय किया है वह ठीक है? परमेश्वर अुन्हें वद्धि देगा, वे अन्याय छोड़ देंगे। परिवर्तन अिसी तरह हुआ करते हैं।

काल-पुरुषकी प्रेरणाका साथ दीजिये

मेरी प्रार्थना है कि अव देनेका जमाना आया है, आप सव लोग दिल खोलकर दीजिये। देनेसे अेक दैवी संपत्ति निर्माण होती है। अुसके सामने आसुरी संपत्ति टिक नहीं सकती। वह ममत्वभाव पर आधार रखती है, समत्व नहीं जानती। दैवी तो समत्व पर आधार रखती है। दैवी और आसुरी संपत्तिकी यही पहचान है।

जहां मैं दान लेता हूं वहां हृदय-मंथनकी, हृदय-परिवर्तनकी, मातृ-वात्सल्यकी, भ्रातृ-भावनाकी, मैत्रीकी और गरीवोंके लिअे प्रेमकी आशा करता हूं। जहां दूसरोंकी फिक्रकी भावना जागती रहती है, वहां समत्व वुद्धि प्रगट होती है, वहां वैरभाव टिक नहीं सकता। वैरभावका स्वतंत्र

अस्तित्व ही नहीं होता। पुण्यमें ताकत होती है, पापमें कोअी ताकत नहीं होती। प्रकाशमें शक्ति होती है, अंधकारमें कोअी शक्ति नहीं होती। प्रकाशको अंधकारका अभाव नहीं कह सकते। प्रकाश वस्तु है, अंधकार अवस्तु है। लाखों वर्षोंके अंधकारमें प्रकाश ले जाअिये, अेक क्षणमें अंधकारका निवारण हो जायगा। वैसे ही आज पुण्योदय हुआ है। अुसके सामने वैरभाव टिक नहीं सकता। यह भूदान-यज्ञ अेक अहिंसाका प्रयोग है, जीवन-परिवर्तनका प्रयोग है। मैं तो निमित्तमात्र हूं। आप भी निमित्तमात्र हैं। परमेश्वर आप लोगोंसे और मुझसे काम कराना चाहता है। यह काल-पुरुषकी, परमेश्वरकी प्रेरणा है। अिसलिअे जब मैं मांग रहा हूं तब आप लोग दीजिये और दिल खोलकर दीजिअे। जहां लोग अेक फुट जमीनके लिअे झगड़ते हैं, वहां मेरे कहनेसे लोग सैकड़ों-हजारों अेकड़ जमीन देनेके लिअे तैयार हो जाते हैं। तो आप समझिये कि यह परमेश्वरकी प्रेरणा है। अिसके साथ हो जाअिये, अिसके विरोधमें मत खड़े रहिये। अिसमें से भला ही भला होगा।

विज्ञानने प्रेम या युद्धकी समस्या खड़ी की है

आज मैं फिरसे कहता हूं कि हम विज्ञानसे पूरा लाभ अुठाना चाहते हैं। अगर हम विज्ञानसे पूरा लाभ अुठावें, तो अिस भूमिको हम स्वर्ग बना सकते हैं। लेकिन फिर हमें विज्ञानके साथ हिंसाको नहीं, अहिंसाको जोड़ना होगा। अहिंसा और विज्ञानके मेलसे ही यह भूमि स्वर्ग बन सकती है। हिंसा और विज्ञानके मेलसे वह स्वर्ग नहीं बन सकती, बल्कि खतम हो सकती है।

पहले लड़ाअियां छोटी-छोटी होती थीं। जरासंध-भीम लड़े, कुश्ती हुअी, पांडवोंको राज्य मिल गया, सारी प्रजा खून-खराबीसे बच गयी। अगर अिस जमानेमें वैसी लड़ाअियां लड़ी जायें, तो अिसमें हिंसा होने पर भी नुकसान कम है। अिसलिअे यह द्वंद्व मैं कबूल कर लूंगा। अगर हिटलर और स्टालिन कुश्तीके लिअे खड़े हो जाते हैं और तय करते हैं कि जो हारेगा वह हारेगा और जो जीतेगा वह जीतेगा, तो मैं अुसे कबूल कर लूंगा। और अगर दुनिया वह द्वंद्व देखने आती है, तो मैं अुसका निषेध नहीं करूंगा; क्योंकि दुनियाका

अुसमें विशेष नुकसान नहीं होगा। परन्तु द्वंद्व-युद्धका जमाना अब बीत गया है। पहले द्वंद्व-युद्ध होते थे, फिर हजारों लोग आपसमें लड़ने लगे। हजारोंकी लड़ाअी खतम हुअी, तो लाखों लड़ने लगे। अुससे भी नतीजा नहीं निकला। फिर क्या, अिधर बीस लाख तो अुधर पचीस लाख, और अिधर पचीस तो अुधर पचास लाख। अिस तरह यह जमाना आया कि हजारों-लाखों नहीं, करोड़ों लोग आपसमें लड़ने लगे। मनुष्यके सामने सवाल यह है कि या तो 'टोटल वार' की तैयारी करो या हिंसाको छोड़ो और अहिंसाको अपनाओ। मैं कम्युनिस्टोंको यही समझाता हूं कि भाअियो! तुम लोग कहीं दो-चार खून करते हो, कहीं दो-चार मकान जलाते हो, कहीं कुछ लूट-खसोट कर लेते हो, रातमें आते हो, दिनमें पहाड़ीमें छिपते हो। लेकिन अब छिपनेका जमाना खतम हो चुका है। अब अैसी हरकतोंसे कोअी लाभ नहीं है। अगर लड़ाअी लड़नी है तो 'वर्ल्ड वार'की तैयारी करो और अुसीकी राह देखो। लेकिन जब तक करोड़ोंके पैमाने पर हिंसा करनेकी तैयारी नहीं करते, तब तक छोटी-छोटी लड़ाअियोंका यह तरीका छोड़ दो और तुम्हें वोट देनेका जो अधिकार मिला है अुससे लाभ अुठाओ। प्रजाको अपने विचारके लिअे तैयार करो। जागतिक युद्ध या परिशुद्ध प्रेम, अैसी समस्या विज्ञानने हमारे सामने खड़ी कर दी है।

ममत्व त्यागो

अिसलिअे अगर प्रेमका, अहिंसाका तरीका आजमाना चाहते हो, तो अिन जमीनोंका ममत्व छोड़ दो। नहीं तो हिंसाका अैसा जमाना आनेवाला है कि अुसमें सारी जमीन और अुस जमीन पर रहनेवाले प्राणी खतम हो जायंगे। यह समझकर कि भगवानने यह समस्या हमारे सामने खड़ी कर दी है, भाअियो! निरंतर दान दिया करो।

अिस भूदान-यज्ञके पीछे जो तात्त्विक विचारधारा है, वह मैंने आपके सामने रख दी है।

हरिजनसेवक, २२, २९-९-'५१

२

युग-पुरुषकी मांग

[गांधी-जयंतीके दिन, ता० २ अक्तूबर १९५१ को, सागरमें आयोजित सर्वोदय-सम्मेलनमें दिये हुअे श्री विनोबाके भाषणसे।]

परमेश्वरकी योजना

छह माह पहले मुझे खुदको अैसा कोअी खयाल भी नहीं था कि जिस कामके लिअे आज मैं गांव-गांव, द्वार-द्वार घूम रहा हूं, वह मुझे करना होगा, अुसमें मुझे परमेश्वर निमित्त बनायेगा। लेकिन परमेश्वरकी कुछ अैसी योजना थी कि जिससे मुझे यह काम सहज ही स्फुरित हुआ और अुसके अनुसार कार्य भी होने लगा। होते-होते अुसे अैसा रूप मिल गया, जिससे लोगोंकी नजरोंमें भी यह बात आ गअी कि यह अेक शक्तिशाली कार्यक्रम है, जो हमारे देशके लिअे ही नहीं, बल्कि आजके कालके लिअे भी अत्यन्त अुपयोगी है। यह अेक युग-पुरुषकी मांग है, अिस तरहकी भावना लोगोंके दिलमें आ गयी। अुसका प्रतिबिम्ब मेरे हृदयमें भी अुठा। नतीजा यह हुआ कि तेलंगानाकी यात्रा समाप्त करनेके बाद बारिशके दिन वर्धामें बितानेके लिअे मैं परंधाम आ बैठा और दो-ढाअी महीने वहां रहकर आज फिरसे निकल पड़ा हूं और घूमते-घूमते आपके अिस गांवमें आ पहुंचा हूं।

भगवान! मेरी हस्ती भी मिटा

जो काम मैंने अुठाया है, वह तो गरीब लोगोंकी भक्तिका काम है, श्रीमान लोगोंकी भक्तिका काम है, सब लोगोंकी भक्ति अुसमें हो जाती है। मेरा अपना विश्वास है कि यह कार्य सब लोगोंके दिलोंमें जंचनेवाला है। मैं जमीन मांगता फिरता हूं। किसी रोज कम मिलती है, तो मुझे यह नहीं लगता कि जमीन कम मिली। मुझे यही लगता है कि जो भी मुझे मिलता है केवल प्रसादरूप है। आगे तो भगवान

खुद अपने अनन्त हाथोंसे भर-भरकर देनेवाला है। और जब वह अनन्त हाथोंसे देने लगेगा, तब मेरे ये दो हाथ निकम्मे और अपूर्ण साबित होंगे। आज तो केवल अेक हवा तैयार करनेका काम हो रहा है। परमेश्वरका बल अिस कामके पीछे है, अैसा मैं प्रतिक्षण महसूस कर रहा हूं। आजके पवित्र दिन मैं पहले अुससे यह प्रार्थना करता हूं कि जमीन तो मुझे लोग दें, न दें, जैसी तेरी अिच्छा हो वैसा होने दे। लेकिन मेरी तुझसे अितनी ही मांग है कि मैं तेरा दास हूं, मेरी हस्ती मिटा, मेरा नाम मिटा। तेरा ही नाम दुनियामें चले, तेरा ही नाम रहे और जो भी राग-द्वेष आदि विकार मेरे मनमें रहे हों, अुन सबसे तू अिस बालकको मुक्त कर। अिसके सिवा अगर मैं और कोअी भी चाह अपने मनमें रखता हूं तो तेरी कसम! मैं तुलसीदासकी भाषामें बोल रहा हूं, लेकिन वह मेरी आत्मा बोल रही है:

"चहौं न सुगति सुमति संपति कछु
रिधि सिधि बिपुल बड़ाअी।
हेतु रहित अनुराग रामपद,
बढ़ै अनुदिन अधिकाअी।"

'संत सदा सीस अूपर, राम हृदय होअी'

लोग मुझे पूछते हैं, आप दिल्ली कब पहुंचेंगे? मैं कहता हूं, मुझे मालूम नहीं, सब अुसकी मर्जी पर निर्भर है। मेरी कुछ अुम्र भी हो चुकी है। शरीर भी कुछ थक गया है, लेकिन अन्तरमें यही वृत्ति रहती है और नित अुसीका अनुभव करता हूं। जरा पांच मिनिट भी विश्राम मिलता है, थोड़ा भी अेकान्त मिलता है, तो मनमें यह वासना अुठती है कि मेरा सारा अहंकार खतम हो जाय। अिसके सिवा और कुछ भी विचार मनमें नहीं आता। आज परमेश्वरके साथ मैं क्या भाषा बोल रहा हूं? मनुष्यकी वाणीसे क्या बयान कर रहा हूं? मैं बोल रहा हूं कि "आज मैं अीश्वरके साथ बापूकी हस्तीका अनुभव कर रहा हूं। मुझ पर अुनके निरन्तर आशीर्वाद रहे हैं। मैं तो स्वभावसे अेक जंगली जानवर रहा हूं, न मुझे सभ्यता ही मालूम

है। मैं तो बड़े बड़े लोगोंके संपर्कसे भी डरता हूं। लेकिन आजकल निःशंक होकर हर किसीके घरमें चला जाता हूं। जैसे नारद मुनि देवोंमें, राक्षसोंमें, मानवोंमें, सबमें चले जाते थे, अुनको कहीं भी अप्रवेश नहीं था, वही हालत मेरी है। यह सब बापूके आशीर्वादका चमत्कार है। मेरा विश्वास है कि मेरे अिस कामसे दुनियाके जिस किसी गोशेमें वे बैठे होंगे, अुनके हृदयको समाधान हो रहा होगा। 'मारगमें तारण मिले, संत राम दोअी। संत सदा सीस अूपर, राम हृदय होअी।' — मीराबाअीका यह वचन मुझ पर भी ठीक लागू होता है। मुझे भी मार्गमें दो ही तारण मिले। भगवानकी कृपासे अेकका आशीर्वाद मेरे सिर पर रहा है, दूसरेका स्थान मेरे हृदयमें रहा है।

यह सब अुसीकी प्रेरणा है

मेरे भाअियो, आज मैं कुछ बोल तो रहा हूं, लेकिन मुश्किलसे बोल सकनेवाला हूं। कोशिश तो मैं यह करूंगा कि जो कहूं, अच्छी तरह कह सकूं। मुझे बहुत दफा लगता है कि मैं घूमनेके साथ साथ कुछ बोल भी लेता हूं, लेकिन अिससे परिणाम क्या होता होगा? कलकी ही बात है। अेक गांवमें जहां हम ठहरे थे, जहां सारा दिन बिताया था और जहां मेरा अेक व्याख्यान भी हुआ था, वहां अुस व्याख्यानके परिणाम-स्वरूप या कैसे भी कहिये, चार अेकड़ जमीन मुझे मिली। फिर व्याख्यान समाप्त करके मैं अपनी जगह पर गया और अुपनिषद्का चिंतन शुरू किया। आजकल मैंने अपने पास अुपनिषद् रखे हैं। दस मिनिट हुअे कि अेक भाअी आये, जो न मेरी प्रार्थनामें शामिल थे, न मेरा व्याख्यान सुन पाये थे। कहने लगे, "जमीन देने आया हूं।" ये भाअी ६ मीलकी दूरीसे आये थे। अपनी ६ अेकड़ जमीनमें से १ अेकड़ जमीन मुझे दे गये। मैंने सोचा — किसकी प्रेरणासे यह हो रहा है? जहां मैं दिन भर रहा, जहां मैंने व्याख्यान सुनाया, वहां चार अेकड़ और जहां मेरा व्याख्यान नहीं हुआ, वहांसे अेक गरीब आता है और छहमें से अेक अेकड़ दे जाता है। यह हुआ न हुआ कि अेक दूसरे भाअी, जो काफी दूरसे आये थे, बावन अेकड़ देकर चले गये। मैं सोचने लगा कि लोगोंके दिल पर किस चीजका

असर होता है? आदमीको शब्दोंकी जरूरत क्यों पड़नी चाहिये? अगर केवल जीवन शुद्ध हो जाय, तो अेक शब्द भी न बोलना पड़े और संकल्पमात्रसे केवल घर बैठे काम हो जाय। लेकिन वैसा शुद्ध जीवन परमेश्वर जब देगा तब होगा। आज तो वह मुझे घुमा रहा है, मांगनेकी प्रेरणा दे रहा है। अिसलिअे मैं बोलता हूं और मांगता हूं। लेकिन मेरे मनमें यह सन्देह नहीं है कि मेरे मांगनेसे कुछ होनेवाला नहीं है। जो होनेवाला है या हो रहा है, सब अुसीकी प्रेरणासे हो रहा है।

पांच करोड़ अेकड़की भूख है!

मेरा पेट बहुत छोटा है। अुसके लिअे ज्यादा पैसेकी आवश्यकता नहीं। मेरा काम किस तरह आगे बढ़े, अिस बारेमें जो सेवकगण यहां आये हैं, वे विचार-विमर्ष करेंगे और अपनी-अपनी जगह जाकर काम भी करेंगे, अिसलिअे यह परिषद बुलायी है। लेकिन यद्यपि मेरी भूख बहुत कम है, तथापि दरिद्र-नारायणकी भूख बहुत ज्यादा है। अिसलिअे जब मुझसे पूछते हैं कि आपका अंक क्या है, कितनी जमीन आपको चाहिये, तो मैं जवाब देता हूं, "पांच करोड़ अेकड़!" जो जमीन खेतीयोग्य है, अुसीकी बात मैं कर रहा हूं। अगर परिवारमें पांच भाअी हैं, तो अेक छठवां मुझे मान लीजिये। चार हों तो पांचवां। अिस तरह कुल खेतीयोग्य जमीनका यह पांचवां या छठवां हिस्सा होता है।

हिन्दुस्तानकी प्रकृति और क्रांतिका तरीका

यह जो काम हो रहा है, वह सामान्य दानका काम नहीं है, बल्कि भूदानका है। अगर हम किसीको अेक रोज भी खाना खिलाते हैं, तो बहुत पुण्य मिलता है। अेक रोजके अन्नदानका अगर अितना मूल्य है, तो अेक अेकड़ जमीनका, जिससे अेक आदमीकी सारी जिन्दगी बसर हो सकती है, कितना मूल्य होगा? अिसलिअे दरिद्र-नारायणके वास्ते सारे लोगोंसे कुछ-न-कुछ मिलना चाहिये। अिसका नाम यज्ञ है। अिसलिअे हर व्यक्तिसे मैं कहता हूं कि भाअी, मुझे कुछ

न कुछ दे दो। हिन्दुस्तानमें यह अेक बड़ीभारी क्रांति होने जा रही है। मेरी आंखोंके सामने मैं वह दृश्य देख रहा हूं। अेक तो वह क्रांति जो रशियामें हो चुकी है। दूसरी वह जो अमेरिकामें हो रही है। दोनों क्रांतियां मैं देख रहा हूं। दोनोंमें से अेक भी हिन्दुस्तानकी प्रकृतिके अनुकूल नहीं है, न यहांकी सभ्यताके अनुकूल है। मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तानकी प्रकृतिमें से अेक अैसा क्रांतिकारी तरीका प्रकट होना चाहिये, जिसका आधार केवल प्रेमभाव ही हो। अगर लोग अपनी अिच्छासे जमीनें देने लग जाते हैं, तो देखते देखते हिन्दुस्तानकी हवा बदल सकती है और हिन्दुस्तानसे सारी दुनियाके लिअे मुक्तिका प्रवेश-द्वार खुला हो सकता है। अितनी महान आकांक्षा अिस यज्ञमें भरी है। और मैं देखता हूं कि वह सफल होनेवाली है। अिसलिअे जो कांग्रेसवाले हैं, सोशलिस्ट हैं, किसान-मजदूर प्रजा-पार्टीवाले हैं और जो किसी पार्टीमें नहीं हैं, अुन तमाम व्यक्तियोंसे मेरी प्रार्थना है कि भूदानके अिस प्रश्नको समझें और अिस पर गौर करें। अपने मामूली काम तो रोज-ब-रोज चलते ही रहेंगे, पर यह काम आवश्यक है। अिसे करना चाहिये। हिन्दुस्तान तो अिससे बच ही जायगा, साथ ही और देशोंको भी बचनेका रास्ता मिल जायगा।

रोगोंकी जड़ मौजूदा अर्थ-व्यवस्थामें

जहां जाता हूं वहां लोग मुझे सुनाते हैं कि काला-बाजार जोरोंसे हो रहा है, रिश्वतखोरी बढ़ रही है। लेकिन मेरे दिल पर अुसका कोअी असर नहीं होता। मैं यह माननेको तैयार नहीं कि हिन्दुस्तानका हृदय बिगड़ गया है। मैं यह भी माननेको तैयार नहीं कि श्रीमानोंके दिल बिगड़ गये हैं। यह हिन्दुस्तानकी भूमि सुजला, सुफला, मलयज-शीतला है। रोज हम अुसका गुणगान करते हैं। लेकिन यह कोअी बड़ी संपत्ति नहीं। हिन्दुस्तानमें जो पारमार्थिक संपत्ति है, अुसकी कीमत सबसे ज्यादा है। बुजुर्गोंने अितनी पारमार्थिक संपत्ति हमें विरासतमें दी है। मेरा कहना है कि यद्यपि देशमें काला-बाजार और रिश्वतखोरी चल रही है, तथापि यह नहीं हो सकता कि हिन्दुस्तानके सारे लोग बिगड़ गये हैं। अिसलिअे हमें अिस बुराअीका कारण ढूंढ़ना चाहिये।

लिन युतांगने लिखा है कि हिन्दुस्तान "गॉड-अिन्टॉक्सिकेटेड" मुल्क है। अुनका यह वर्णन हिन्दुस्तानकी आज तककी जनताका यथार्थ वर्णन है। आज भी हमारी जनता अीश्वर-परायण ही है। लेकिन अितनी सारी अनीति फैली दीखती है, अुसका मतलब यही है कि हिन्दुस्तानकी अर्थ-व्यवस्था बिगड़ गयी है, अिंतजाम बिगड़ा हुआ है। अिसलिअे लोग प्रवाहमें आकर गलतियां कर जाते हैं। अगर हम आर्थिक व्यवस्था बदल सकें, तो आप देखेंगे कि हिन्दुस्तानके लोग सारी दुनियामें अेक मिसाल पेश कर सकते हैं।

अिसलिअे गांधीजीके बाद सर्वोदयके सिद्धान्तमें माननेवाले हम कुछ लोगोंने अेक समाज बनाया है, जिसमें कोअी किसीका द्वेष नहीं करता। सब सबसे प्रेमभाव रखते हैं। कोअी किसीका शोषण नहीं करता। मेरा विश्वास है कि जैसे ही हम शोषण-रहित समाजका निर्माण कर सकेंगे, हिन्दुस्तानके लोगोंकी प्रतिभा प्रगट हुअे बिना नहीं रहेगी। अिसलिअे सर्वोदयवालोंने निश्चय किया है कि यह समाज-रचना हम बदल देंगे। मेरा अिसमें विश्वास है, नहीं तो मुझे अिस तरह खुले दिलसे जमीनें मांगनेकी हिम्मत नहीं होती। मैं जानता हूं कि जितनी मेरी योग्यता है, अुससे ज्यादा फल मुझे अीश्वरने दिया है। मुझे जरा भी शिकायत नहीं कि मुझे कम फल मिला। अिसलिअे मेरा काम अितना ही है कि लोगोंको मैं अपना विचार समझाअूं।

हरिजनसेवक, २७–१०–'५१

३

भूदान-आन्दोलन

[दिल्ली तथा आसपासके दूसरे स्थानोंमें श्री विनोबा द्वारा किये हुअे अनेक प्रवचनोंके कुछ महत्त्वपूर्ण अंश यहां दिये जा रहे हैं। अिन प्रवचनोंकी विस्तृत रिपोर्ट दिल्लीके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' और 'हिन्दुस्तान' में १३ नवम्बरसे २५ नवम्बर १९५१ तक यथासमय आती रही है। प्रस्तुत अंश आवश्यक परिवर्तनके साथ वहींसे लिये गये हैं।]

भूमिदानकी आध्यात्मिक और नैतिक भूमिका

मैं तो निमित्तमात्र हूं। आप भी निमित्तमात्र हैं। परमेश्वर आप लोगोंसे और मुझसे काम कराना चाहता है। जहां लोग अेक फुट जमीनके लिअे झगड़ते हैं, वहां मेरे कहनेसे सैकड़ों-हजारों अेकड़ जमीन देनेके लिअे तैयार हो जाते हैं। तो आप समझिये कि यह परमेश्वरकी प्ररणा है। अिसके साथ हो जाअिये। अिसके विरोधमें मत खड़े रहिये। अिसमें से भला ही भला होगा।

मैं तो गरीब और श्रीमान सबका मित्र हूं। मुझे मैत्रीमें ही आनन्द आता है। तो मैं चाहता हूं कि दरिद्र-नारायणको, जो भूखा हैं और अब जाग गया है, आप अपने कुटुम्बका अेक हिस्सा समझ लें। किसीके पास दस हजार अेकड़ जमीन हो और चार लड़के हों, और बादमें पांचवां लड़का हुआ, तो अुसे अपनी संपत्तिके चारके बजाय पांच हिस्से करने पड़ेंगे या नहीं? मैं जमीनके मालिकोंसे कहता हूं कि आप अपने लड़कोंके साथ मेरी गिनती भी कर लीजिये और मुझे मेरा अुत्तराधिकार दीजिये, जिसे मैं गरीबोंको बाटूंगा।

जहां अैसी राजनीतिक व सामाजिक क्रांति करनेकी बात है, वहां मनोवृत्ति बदल देनेकी जरूरत होती है। यह काम लड़ाअियों या हिंसक क्रांतियोंसे नहीं हो सकता। लड़ाअियों और क्रांतिसे जो काम नहीं हुआ, वह बुद्ध, अीसा, रामानुज आदि महापुरुषोंने किया। यह

काम अुन्हींके तरीकेसे होगा। आखिर तो मैं जो चाहता हूं वह सर्वस्व दानकी बात है—सबके कल्याणके लिअे अपना सब कुछ समर्पण कर देना है। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १३–११–'५१)

मौजूदा समाज-व्यवस्था स्पर्धा और विषमताकी नींव पर खड़ी है। मैं स्पर्धाकी जगह समानता और सहकारके आधार पर नयी व्यवस्था खड़ी करना चाहता हूं। जब तक अैसा नहीं होता, तब तक मनुष्यके लिअे मुक्ति नहीं है। जिस तरह चार भाअियोंकी मां अेक होती है और मांका सब पर प्रेम होता है, अुसी तरह भूमि सबकी है। किसी अेककी नहीं। अेक गांवकी भूमि अुस गांवके रहनेवाले सभी व्यक्तियोंकी है, न कि दो-चारकी। यह क्या कि कुछ लोगोंके पास तो जमीन रहे, और कितने ही लोगोंके पास जमीन न रहे। अैसे समाजमें शांति नहीं हो सकती। लोग अपनी जमीनकी मालिकीके समर्थनमें कानूनी दस्तावेज पेश करेंगे। लेकिन ये कानूनी कागजात ही दिलोंके टुकड़े कर रहे हैं। अिसलिअे मैं कहता हूं कि कानूनी कागजात होलीमें जला दो, अन्यथा समाज कदापि अुन्नति नहीं कर सकता।

लोगोंको यह सत्य मान्य करना चाहिये कि सारी जमीन भगवानकी है। अगर भूमिकी मालिकी समाजकी हो, तो मौजूदा असंतोष खतम हो जायगा और प्रेम तथा सहकारका नया जमाना शुरू हो जायगा। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १४–११–'५१)

मैं भिक्षाके तौर पर जमीन लेना नहीं चाहता। यदि भिक्षाके तौर पर लूंगा तो आर्थिक ढांचा बदलनेकी अिच्छा पूरी नहीं होगी।

अेक दिन मुझे यह बात समझमें आयी कि अब तो वामन-अवतार प्रकट हो गया है—तीन कदम जमीन मांग रहा हूं। पहला कदम यह कि लोगोंको दरिद्र-नारायणको अपना अेक लड़का समझकर भूमिहीनोंके लिअे दान देना चाहिये। दूसरा कदम यह होगा कि लोगोंको गरीबोंकी सेवामें लग जाना चाहिये और तीसरा कदम यह कि गरीबोंकी सेवा करते-करते स्वेच्छासे गरीब ही बन जाना चाहिये। यदि स्वेच्छासे यह कर सकोगे तो बलि राजाके समान बलिदान (बलवानका दान) होगा और हिन्दुस्तानका मसला हल हो जायगा।

आज ही झांसी जिलेके दो भाअियोंने तारसे ५७० अेकड़ भूमिदान दिया है। अिस तरह चारों तरफ हवा फैलती जा रही है। जैसे छूतकी बीमारी देखते-देखते फैल जाती है, वैसे ही सद्भावना भी फैल जाती है। (हिन्दुस्तान, १५–११–'५१)

मैं जानता हूं कि यह कठिन काम है। आसान समझकर अिसे मैंने नहीं अुठाया है। यह अितना कठिन है कि अपनी बुद्धिसे मैं अिसे नहीं अुठा सकता था। बल्कि वह सहज ही मेरे पास आ पहुंचा है। तो मैं अिसे परमेश्वरका आदेश मानता हूं। और जब आ ही पहुंचा तो अुतनी योग्यता मुझमें है या नहीं, अिस तरह अुसके बारेमें सन्देह-बुद्धिसे सोचना या हिचकिचाना मैं ठीक नहीं समझता। मुझे मान लेना चाहिये कि जिस शक्तिने यह काम हमारे सामने अुपस्थित किया है, वही शक्ति अुसकी पूर्तिके लिअे भी आवश्यक बल देगी। अिस निष्ठासे, श्रद्धासे, अत्यन्त नम्र होकर मैंने यह काम अुठाया है और मैं अिस वक़्त सर्वोदयमें माननेवाले हर व्यक्तिसे सहानुभूति और सहकार चाहता हूं। (हिन्दुस्तान, १८–११–'५१)

अैतिहासिक आवश्यकता

जिनके पास भूमि है वे अपनी भूमि भूमिहीनोंको स्वेच्छापूर्वक दें। मेरी यह कोशिश अैतिहासिक प्रवाहके खिलाफ है, यह माननेसे मैं अिनकार करता हूं। यह तो आपको समझना चाहिये कि अितिहासमें जो बात बनी है, अुससे अलग बात बन सकती है। रूसी क्रांति जैसी कोअी घटना पहले नहीं हुअी थी, लेकिन वह हुअी। अुसी तरह यह भी हो सकती है। जो हो, मैं तो मानता हूं कि जो कुछ मैं कर रहा हूं, वह अितिहासके प्रवाहके खिलाफ नहीं है, बल्कि वह अैतिहासिक आवश्यकता है, समयकी मांग है।

मेरा अुद्देश्य क्रांतिको टालना नहीं है। मैं हिंसक क्रान्तिसे देशको बचाना चाहता हूं और अहिंसक क्रांति लाना चाहता हूं। हमारे देशकी भावी सुख-शांति भूमिकी समस्याके शांतिमय हल पर निर्भर है। मैं अैसी हवा पैदा करनेकी कोशिश कर रहा हूं, जिसमें कानूनके बंधनोंसे हमारा काम रुका नहीं रहेगा। मैं तो श्रीमानोंसे सीधा जमीन लेता

हूं और गरीबोंको सीधा दे देता हूं। जमींदारोंको अिस बात पर राजी किया जा सकता है कि अुन्हें पूरा मुआवजा नहीं मिल सकता, और जितना अुनके लिअे पर्याप्त है अुतना लेकर अुन्हें संतोष करना चाहिये।

अेक पत्रकारने पूछा — संविधानको बदल क्यों न दिया जाय?

"अुसके लिअे हमें जमींदारोंका नैतिक समर्थन पाना होगा। कानून लोगों पर लादा नहीं जाना चाहिये। अुसके साथ सबकी, जमींदारोंकी भी सहमति होनी चाहिये।" विनोबाने जवाब दिया।

अेक दूसरे पत्रकारने कहा — प्रचलित व्यवस्थामें जिनका स्वार्थ है, अुनकी यह मनोवृत्ति नहीं होती कि वे अपना अन्त खुद कर डालें।

विनोबाजीने कहा — मनस्तत्त्वके अिस विचारको मैं सही नहीं मानता। अगर भूमिवाले अपनी भूमि स्वेच्छासे नहीं छोड़ते, और भूमि-सुधार कानूनके लिअे अनुकूल वातावरण भी तैयार नहीं किया जाता, तो तीसरा रास्ता खूनी क्रान्तिका है। मेरी कोशिश अैसी हिंसक क्रांति रोकनेकी है, और तेलंगाना तथा अुत्तर प्रदेशके अनुभवके बाद शांतिमय अुपायोंकी सफलतामें मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। हवा, प्रकाश और पानीकी तरह भूमि भी भगवानकी सहज देन है; और भूमिहीनोंकी ओरसे अुनके लिअे मैं जो मांग रहा हूं, वह न्यायसे अधिक और कुछ नहीं है। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, २५–११–'५१)

मेरा लक्ष्य पांच करोड़ अेकड़ भूमि अिकट्ठी करनेका है। मैंने हिसाब किया है कि देशमें ३० करोड़ अेकड़ भूमि पर काश्त होती है। यदि औसतन पांच व्यक्तियोंका अेक परिवार है, तो दरिद्र-नारायणको परिवारका छठा व्यक्ति मान लें। अिस तरह यदि पांच करोड़ अेकड़ भूमि मिल जाती है तो काम बन जाता है।

अिसमें अेक दिक्कत है। जिस रफ्तारसे मुझे अभी तक भूमि मिलती रही है, अुससे अितनी भूमि अेकत्र करनेमें कअी वर्ष लग जायंगे। लेकिन मैं समझता हूं कि अब दिन प्रतिदिन तेज रफ्तारसे भूमि मिलेगी। (हिन्दुस्तान, १५–११–'५१)

यह समझिये कि दरिद्र-नारायणकी ओरसे मैं दान नहीं मांग रहा हूं, वल्कि अपना हक मांग रहा हूं। लेकिन मेरा काम सिर्फ भूमिदान अिकट्ठा करनेका नहीं है। मैं जमीनके मालिकोंको यह समझानेकी कोशिश कर रहा हूं कि अुन्हें अपनी जमीनका अेक हिस्सा छोड़ देना चाहिये। जहां अुनके ध्यानमें अेक वार यह वात आ गयी कि भूमिहीनोंको भूमिका अधिकार है, कि योग्य कानून वनानेके लिअे अनुकूल वातावरण तैयार हो जायगा। और वातावरण तैयार होने पर जो कानून वनेगा वह सफल होगा। क्योंकि तव लोग अुसे मान्य करेंगे, फिर चाहे हमारे पांच करोड़ अेकड़के लक्ष्यका वीसवां हिस्सा ही क्यों न पूरा हो। (हिन्दुस्तान टािअम्स, १५-११-'५१)

यदि शांतिपूर्ण तरीकेसे अैसी हवा तैयार हो जाती है और लोग यह मान लेते हैं कि भूमिहीनोंको जमीन मिलनी चाहिये, लेकिन मोहसे देते नहीं हैं, तो भूमिकी सवसे वड़ी समस्या — जो देशकी सवसे वड़ी समस्या है — कानून द्वारा सरलतासे हल हो सकती है। लेकिन यदि अैसी हवा तैयार नहीं होती है, तो भूमिका मसला खूनी क्रांतिसे ही हल होगा। मुझे आशा है कि गांधीजीका अहिंसात्मक तरीका अवश्य सफल होगा। (हिन्दुस्तान, १५-११-'५१)

दानकी मर्यादा

कल अेक भाअी मेरे पास अपनी पत्नीके साथ आये थे। दूरसे मध्यप्रदेशसे आये थे। जमीन देनेके लिअे अुनके पास ५० अेकड़ भूमि थी। नम्वर, नक्शा सव लेकर आये थे। वे कहने लगे — मैं सारी जमीन देना चाहता हूं। मैंने अुनसे पूछा कि क्या आपका कोअी धन्धा है, जीवनका साधन है। तो अुन्होंने कहा कि नहीं। मैंने कहा, कुछ हिस्सा दीजिये। अुन्होंने कहा — जितना आप रखना चाहते हैं, रखिये। अुनके तीन वच्चे हैं और चौथा मैं वन गया। १२।। अेकड़ जमीन ले ली और वाकी अुनके पास रहने दी। मुझे कोअी व्यक्ति पूछ सकता है कि अगर अुनके पास ५० अेकड़ जमीन नहीं होती और ३७।। अेकड़ होती, तो क्या मैं कुछ नहीं लेता। मेरा जवाव है कि अुसमें से भी १०-१२ अेकड़ जमीन प्रेमसे लेता और अिस तरह

ली भी है। फिर अुनके पास २५ अेकड़ जमीन वच जाती और अुतनी जमीनसे कोअी दूसरा धन्धा न होने पर भी अुनका गुजारा चल जाता। अितना ही क्यों, मैंने अेक अेकड़वाले किसानसे भी, जिसका और कोअी धन्धा नहीं था, आधा अेकड़ जमीन ली है। मुझसे कोअी पूछ सकता है कि ५० अेकड़वालोंसे चौथाअी जमीन लेकर क्यों शांत हो जाता हूं? आप लोग अैसा सोचें कि अगर आपके कुटुम्वमें तीन व्यक्ति हैं तो चौथा भी है अैसा समझो। वह दीखता नहीं है, अव्यक्त है। चौथा अल्पशक्ति है तो अुसे वड़ा हिस्सा देना चाहिये। २० अेकड़वालोंसे ५ अेकड़ लेता हूं, ५० अेकड़वालोंसे १२॥ अेकड़ और ५ अेकड़वालोंसे आधा अेकड़ लेता हूं। कोअी अिसे पागलपन कह सकता है। परन्तु मेरा काम ठीक चल रहा है। जमीनकी आर्थिक अिकाअी क्या होनी चाहिये? किसके पास कितनी जमीन रखनी चाहिये? मैं अितना ही कह सकता हूं कि यह मेरा काम नहीं है। मेरा काम पारमार्थिक काम करना है। देशवन्धु गुप्त आज चले गये तो कल मैं नहीं जानेवाला हूं अैसा नहीं है। यह कोअी वड़ाभारी मसला नहीं है। मैं चाहता हूं कि देशका वड़ा मसला पहले हल हो। राम आये, लोक-संग्रह किया, फिर भी काम वचा है। कृष्ण आये, लोक-संग्रह किया, फिर भी लोक-संग्रहका काम वचा है। तो फिर हमें अैसा काम करना चाहिये जिसे हम कर सकें। हम निमित्तमात्र वनकर अपना काम कर रहे हैं।

मेरा काम तो अेक पारमार्थिक हवा पैदा करनेका है यानी सच्ची हवा पैदा करना। अिसका अर्थ ही सच्चा अर्थशास्त्र है। जो गलत अर्थशास्त्र सीखे हैं, अुन्हें मैं समझाना चाहता हूं। अगर वे समझ जायेंगे तो स्वयं महादेव वन जायेंगे और मेरे प्रचारक हो जायेंगे। मैंने अपने प्रचारके लिअे कोअी संस्था नहीं वनाअी है। जो मेरे विचारको पसन्द कर लेते हैं, वे ही मेरे प्रचारक वन जाते हैं।

अग्नि यह नहीं सोचती कि मैं चूल्हे पर सुलग रही हूं, लेकिन कोअी वरतन रखनेवाला नहीं है, अगर कोअी वरतन रखेगा तो पानी कौन डालेगा, कोअी पानी डालेगा तो चावल कौन डालेगा आदि। अग्नि सोचती है कि मैं सुलग रही हूं। जिसने मुझे सुलगनेकी वुद्धि

दी है, वह किसीको बरतन रखनेकी बुद्धि जरूर देगा। सूर्यनारायण यह नहीं सोचता कि मेरे निकलने पर कौन सोता रहेगा और कौन जागता रहेगा। वह अपना काम करता जाता है। सूर्यकी किरणें वहां जाती हैं, जहांका दरवाजा खुला हो। अगर किसीका दरवाजा बन्द है, तो सूर्य वहां नहीं जाता; थोड़ासा खुला है तो थोड़ा अन्दर जाता है, और पूरा खुला है तो पूरा अन्दर जाता है। अिस तरह वह सेवाकी मर्यादा समझता है। मैं भी अपनी मर्यादा समझता हूं।

मैं मानव-हृदयमें परिवर्तन चाहता हूं। लोग पूछते है कि क्या अिस तरह परिवर्तन होगा? मैं ज्योतिषी तो हूं नहीं। अिसलिअे कह नहीं सकता कि क्या होगा और क्या नहीं होगा। लेकिन अगर अैसा बन गया तो देशका कल्याण होगा अैसा मैं मानता हूं। जिसके पास थोड़ी भी जमीन है और कुछ न कुछ देता है, अुससे कुछ न कुछ लेना मैं अपना कर्तव्य मानता हूं।

मैं नहीं समझता कि अिस तरहसे लोग जमीन क्यों नहीं देंगे। हम लोगोंको समझा न सकें, यह बात दूसरी है। लेकिन हमें समझाना तो चाहिये।

मैं समझता हूं कि समझानेसे लोग समझ जायेंगे, क्योंकि वे जड़ नहीं हैं। वे भी मानव हैं और मैं भी मानव हूं। समझानेसे वे समझ जायेंगे कि अैसा न होने पर आजके समाजको क्या खतरा है। कुछ लोगोंको बात देरसे समझमें आयेगी। लेकिन परमेश्वरकी मर्जीसे यह काम जरूर होगा अैसा मैं मानता हूं। अुसके आधार पर सामाजिक परिवर्तन क्या होना चाहिये, अिस पर मैं नहीं सोचता। वह काम समाज ही कर लेगा। मेरा काम नैतिक हवा पैदा करना है, और अितना करके मुझे संतुष्ट रहना चाहिये। (हिन्दुस्तान, २३–११–'५१)

दानपत्रकी विधि

कलकत्ताके अेक अखबारमें अेक भाअीने शंका अुठाअी है कि विनोबाजी भूमिदान लेते तो हैं, लेकिन कुछ लिखा-पढ़ी और कानूनी बाजाब्ता कार्रवाअी भी करते हैं या नहीं? हजारों अेकड़ जमीनका वाग्‌दान मिले और हाथमें कुछ न आवे, अैसा नहीं होना चाहिये।

अब अुन भाअीके समाधानके लिअे मैं अितना कह दूं कि दानपत्र बाजाब्ता भरे जाते हैं, दो गवाह अुसमें रहते हैं। फिर भी अगर किसी भाअीको अैसा मालूम हो कि अुसने दानपत्र दबावमें भरा है या देनेवालेको समाधान नहीं है, तो मैं वह दानपत्र फाड़ डालता हूं।

यह सब मैं क्या कर रहा हूं? मेरा अुद्देश्य क्या है? मैं परिवर्तन चाहता हूं। प्रथम हृदय-परिवर्तन, फिर जीवन-परिवर्तन और बादमें समाज-रचनामें परिवर्तन लाना चाहता हूं। अिस तरहसे त्रिविध परिवर्तन, तिहरा अिन्कलाब मेरे मनमें है। तो किसी भी तरहसे, लोभ या लालचसे या दबावमें, दान प्राप्त हो, तो वह होनेवाला नहीं है। अगर किसी भी तरह, लोगोंको नाखुश करके भी, जमीन ही लेनी हो, तो वह मेरा काम नहीं है। अुसके लिअे बहुतसे शूर-पराक्रमी लोग पड़े हैं। वह काम मेरे हाथों नहीं हो सकता। (हिन्दुस्तान, २१–११–'५१)

प्राप्त भूमिका वितरण

हमारे कार्यकर्ता गांवमें जाते हैं और वहां भूमिहीनोंको जमीन बांटनेका काम करते हैं। हमें भूमिहीन गरीबोंको ढूंढ़-ढूंढ़कर जमीन देना है। कोअी अपनी कन्याका विवाह करना चाहता है, तो अुसके लिअे योग्य वरकी तलाश करता है। अुसी तरह हम अिस दानके पात्रोंकी तलाश करेंगे। विवाह-विधिके बाद जिस तरह कन्याको वस्त्राभूषण और दूसरा दहेज देते ह, अुसी तरह जमीनके अलावा किसानकी दूसरी आवश्यकताओं — बैलजोड़ी, बीज आदि — का भी खयाल हम करेंगे।

कोअी दिन मुकर्रर कर दिया जाता है और अुस दिन जमीनका बटवारा करनेका काम जिन्हें दिया गया है वे सर्वोदय-कार्यकर्ता अुस गांवमें जाते हैं। सब लोगोंको अिकट्ठा कर लिया जाता है। कार्यकर्ता गांवके लोगोंसे पूछताछ करते हैं और सब मिलकर तय करते हैं कि भूमिदान जिन्हें दिया जा सकता है, अुनमें भी सबसे ज्यादा योग्य पात्र कौन हैं। हरिजनों और दूसरी पिछड़ी हुअी जातिके लोगोंको तरजीह दी जाती है। अिस बातकी सावधानी रखी जाती है कि जमीन अुन्हीं

लोगोंको दी जाय, जो कोअी दूसरा धन्धा न करते हों और जो जमीन मिल जाने पर खेती करेंगे। कार्यकर्ताओंके साथ महसूल-खातेके कर्मचारी भी जाते हैं। वे लोग दानपत्रकी रजिस्ट्री तथा दूसरी जरूरी कानूनी कार्रवाअी पूरी करते हैं। बस, कल तक जो आदमी बेसहारा था, वह जमीनका स्वामी बनकर घर लौटता है, और स्वाभिमानकी अेक नयी जिन्दगीका आरम्भ करता है! वह जमीनका मालिक किसान बन जाता है!

हैदराबादमें जमीनके बंटवारेका काम चालू हो गया है। वहांकी सरकारने अिस कामके विषयमें बहुत आसान नियम बनाये हैं। अिन नियमोंके अनुसार जमीनका दाता दान करते हुअे 'राजीनामा' लिख देता है। राजीनामा तहसीलदारके पास आता है। तहसीलदार जांच करता है कि अुस जमीन पर सरकारी लगान या कोअी दूसरा कर्ज तो नहीं है। जांचके बाद तहसीलदार यह राजीनामा मंजूर कर लेता है, फिर जमीन सरकारके हाथमें आ जाती है। अिसके बाद (विनोबाजीकी) समिति अुन आदमियोंको चुनती है, जिन्हें यह जमीन दी जा सकती है। तब जमीन दी जाती है। पर अिस दानके साथ यह शर्त होती है कि अगर गांवमें सहकारी-समितिका निर्माण हुआ तो जमीन पानेवाला अुस समितिमें शामिल हो जायगा। दूसरी शर्त यह है कि जमीन दस साल तक बेची नहीं जायगी। दी हुअी जमीन खेतीके योग्य हो, पर पड़ती हो और पानेवाला अुसे पानेके बाद दो सालके भीतर तैयार कर ले और बोना शुरू कर दे, तो अुसे पहले तीन साल तक अुस जमीन पर सरकारी लगान नहीं देना पड़ेगा। अिस सारी कार्रवाअीमें रजिस्ट्री या स्टैम्प आदिके लिअे कोअी फीस नहीं लगेगी।

दूसरे राज्य भी स्थानिक परिस्थितियोंके अनुसार कुछ फेरफारके साथ अैसे ही नियम बनायेंगे, अैसी आशा है।

हैदराबादमें वहांकी समितिने तय किया है कि जमीन तरीकी हो तो प्रति परिवार अेक अेकड़ दी जाय, और खुश्कीकी हो तो परिवारके हर व्यक्तिके पीछे अेक अेकड़ दी जाय। पर छह

अेकड़से ज्यादा नहीं। मध्यप्रदेशमें बंटवारा अिसी तरहका होगा। विन्ध्य-प्रदेशमें शायद जमीन ज्यादा देनी पड़ेगी। और अुत्तर-प्रदेशमें शायद कम करनी पड़ेगी; क्योंकि वहां किसानोंकी औसत भू-संपत्ति प्रतिव्यक्ति काफी कम है। लेकिन अभी तक अिस विषय पर कोअी आखिरी फैसला नहीं हुआ है। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १४–११–'५१)

आक्षेपोंका जवाब

सुबह अेक भाअी आये और बहुत अुत्साहके साथ कहने लगे — आपका कार्यक्रम अच्छा है, लेकिन कब पूरा होगा यह नहीं कह सकते। कानूनसे जल्दसे जल्द पूरा हो सकता है और हो जाना चाहिये। तो मैंने कहा — मेरी योजना अहिंसक योजना है। अहिंसाकी योजनामें कानून नहीं आ सकता अैसी बात नहीं है, लेकिन पहले लोकमतका प्रदर्शन होना चाहिये। अुसके लिअे पहले हवा तैयार की जाती है। और जब बहुतोंकी हार्दिक सम्मति प्राप्त हो जाती है — चाहे अुस अवस्थामें कुछ लोग विरोध करें — तब कानून मददके लिअे आ सकता है। यह सब मेरी योजनामें है। कानून तो साम्यवादी (कम्युनिस्ट) भी चाहते हैं। अुनकी योजनामें भी कानून होता है। लेकिन पहले कत्लसे आरम्भ होता है और फिर वे कानून बनाते हैं, तो अुस कानूनमें भी कत्लका रंग चला जाता है। मेरा काम भी कानूनसे समाप्त होगा, लेकिन आरम्भ करुणासे होता है। लोगोंको सारी बात शांतिसे समझाअी जाती है। जब लोगोंको कबूल होता है कि जो चीज कही जा रही है अुसमें न्याय है और अभी जो हालत है अुसमें अन्याय है, अुसमें बचाव नहीं है, तब मेरा काम पूरा हो जाता है। अिस तरह यह काम करुणासे प्रारम्भ होता है और अहिंसाके तरीकेसे चलता है। जब हवा तैयार हो जाती है तब कानून मददके लिअे आता है।

मैं कअी बार दुहरा चुका हूं कि जिस तरह हवा, पानी और प्रकाश अीश्वरकी देन है और अुसमें कोअी भेदभाव नहीं किया जाता, अुसी तरह जमीन भी अीश्वरकी देन है। अिस विचारको हिन्दीके महाकवि मैथिलीशरण गुप्तने अेक कवितामें बहुत अच्छे ढंगसे प्रकट

किया है। छोटीसी कविता है। भूमिदान-यज्ञके सिलसिलेमें लिखी गअी है।*

कुछ लोग कहते हैं कि मेरी योजना पहले दान-योजना थी और अब मैं हक मांगता हूं। बात अैसी नहीं है। मैं पहलेसे ही न्याय और हककी बुनियाद पर यह बात कह रहा हूं। न्याय यानी कानूनी न्याय नहीं, बल्कि अीश्वरका न्याय। मैंने स्वराज्य-शास्त्र पर अेक छोटीसी किताब लिखी है, अुसमें यह बात स्पष्ट कर दी है। बीस साल पहले जेलमें मैंने साने गुरुजीको बताया था कि हमें कानूनसे जमीन बांटनी होगी। मुझे याद नहीं था कि बीस साल पहले मैंने यह बात अुनसे कही थी। लेकिन किशोरलालभाअीने याद दिलाया कि साने गुरुजीने वह बात लिख रखी है।

अेक कानून वह होता है, जो जबरदस्ती व हिंसाका प्रतिनिधि होता है। और दूसरा वह जो अहिंसाका। मैं दूसरी तरहके कानूनके

---

* भूमिहीन

प्रभुने जिस दिन दिया शरीर,
दिये अुसी दिन हमें दया कर भू-नभ-पावक-नीर-समीर।
अब भी नभमें रवि-शशि-हास,
अग्नि अुष्ण, जल शीत-सुवास,
और पवनमें श्वासोच्छ्वास,
किन्तु भूमि-गाथा गम्भीर!
प्रभुने जिस दिन दिया शरीर,
दिये अुसी दिन हमें दया कर भू-नभ-पावक-नीर-समीर।
भूपर कहां हमारा ठौर?
कहां हमारे मुंहका कौर?
हम भी मनुज कहें क्या और,
समझो मनुज, हमारी पीर।
प्रभुने जिस दिन दिया शरीर,
दिये अुसी दिन हमें दया कर भू-नभ-पावक-नीर-समीर।

— मैथिलीशरण गुप्त

लिअे भूमिका तैयार कर रहा हूं। अैसे काममें आरम्भमें प्रचारकी गति धीमी होती है। अहिंसाके तरीकेमें अैसा होता है। लेकिन देखते देखते हवामें वात फैल जाती है। 'अव तो वात फैल गअी जानत सव कोअी' वाली वात हो जाती है। और जव वात फैल जाती है, तो काम होनेमें देर नहीं लगती। यदि हम सव लोग काम करने लगें, तो अिस काममें ५-५० साल लगनेकी जरूरत नहीं, अेक सालमें भी यह हो सकता है। हमारा पुरुषार्थ कितना है, समझानेकी शक्ति कितनी है, त्यागशक्ति कितनी है, अिन सवका असर पड़ता है। समझानेसे जितनी आसानीसे काम वनता है, अुतना दवावसे नहीं। मैं कअी वार कह चुका हूं कि दवावसे मुझे कोअी दान नहीं चाहिये। मुझे कलुषित दान नहीं, शुद्ध दान चाहिये। क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम किसीका वुरा न करें, सवका भला चाहें, स्वार्थहित न देखें और सर्वोदयकी दृष्टिसे देखें, तो हमारा काम अपेक्षाकृत जल्दी वन जायगा।

अभी जो कानून है वह संविधानके मुताविक अितना ही कर सकता है कि मुआवजा देकर जमीन ले ले। जो कानून है वह ठीक है। लेकिन अहिंसाके तरीकेमें अैसा नहीं है कि मुआवजा लेनेवालेको मुआवजा लेना ही चाहिये और देनेवालेको देना ही चाहिये। अिसमें तो यह है कि जो वड़े जमींदार, मालगुजार व काश्तकार हमारे भाअी हैं, अुनका काम चलना चाहिये और गरीवोंके साथ भी न्याय होना चाहिये। अगर किसी १०,००० अेकड़वाले भाअीको मुआवजा नहीं दिया जाता है, तो वह हिंसा नहीं कही जा सकती। मैं वड़े काश्तकारों, जमींदारों, मालगुजारोंको यह समझानेका विश्वास रखता हूं कि ठीक हिसावसे मुआवजा लेना जरूरी नहीं है; जितना जरूरी हो अुतना ले लो। अिसलिअे मैं मुआवजेका भी दान लेता हूं। क्योंकि परमेश्वरकी सृष्टिमें जिस तरहकी क्षमता है, अुसीका मैं पालन करता हूं। मैं वेजमीनवालोंको जमीन दिलाना चाहता हूं। मेरी आखिरी आकांक्षा यह है कि हर गांव अेक-अेक कुटम्व वन जाय, सव मिलकर जमीन जोतें, पैदा करें, खायें-पीयें और रहें। मैं चाहता हूं कि हर गांव गोकुल वन जाय। आखिर गोकुलमें होता क्या था? सव अेकसाथ

खाते-पीते और अेक कुटुम्ब जैसे रहते थे। यह सारा काम समझकर करना है।

गरीबोंका अेजेंट

कुछ लोग मुझे कहते हैं कि मैं श्रीमानोंका अेजेंट हूं। बात अैसी नहीं है। सही बात यह है कि मैं खुद गरीब रहा हूं और गरीबोंके बीच रहा हूं, अिसलिअे मैं गरीबोंका अेजेंट हूं। अुनकी तरफसे मुझे अधिकार मिला है कि मैं अुनकी मांग लोगोंके सामने पेश करूं। मैं अुनके साथ रहा हूं, अिसलिअे मैं अुनका निश्चित अेजेंट हूं। अगर जमींदार भी मुझे अपना अेजेंट बनाना चाहें, तो अुनका भी अेजेंट बननेमें मुझे कोअी अेतराज नहीं है, बशर्ते वे अुदार दिलसे जमीन दें। अगर वे लोग भी मुझे अपना अेजेंट स्वीकार कर लें, तो अिससे अच्छा और कुछ हो ही नहीं सकता।

दूसरे लोगोंने मुझ पर यह भी आक्षेप किया है कि यह मनुष्य बहुत खतरनाक है। गांधीजीके साथ रहने पर भी यह अैसा आदमी है, जो सारे कानूनकी अिज्जत ही खतम कर रहा है—हरअेकके हककी जो चीज है, अुसे भी खतम कर रहा है। अिसने चलाया है कि जमीन पर किसीका हक ही नहीं। अगर अिसके कहनेके मुताबिक कानून नहीं बनाया गया, तो साम्यवादियोंके लिअे यह रास्ता साफ कर देगा। अिसने जो रास्ता अपनाया है, वह साम्यवादियोंके रास्तेसे भी ज्यादा खतरनाक हो सकता है। मेरा अैसा मत है कि अगर जमींदारोंके दिलमें कंजूसी समा जाय और बहुत ज्यादा जमीन पर वे अपना हक बनाये ही रखें, तो हालत बहुत खतरनाक हो सकती है। खतरा अिस बातका नहीं कि जमींदारोंको कत्ल करनेका प्रोत्साहन मिलेगा, लेकिन जमींदार अपनी अिज्जत खो देंगे; और अिज्जत-खोना जिन्दगीसे हाथ धोनेसे भी अधिक खतरनाक है।

तो अिस तरह मुझ पर दोनों तरफसे आक्षेप हो रहा है। अेक यह कि मैं श्रीमंतोंका अेजेंट हूं, और दूसरा यह कि मैं साम्य-वादियोंके लिअे रास्ता साफ कर रहा हूं। मैं समझता हूं कि जब दोनों तरफसे आक्षेप हो रहा है, तब काम ठीक रास्ते पर चल रहा है और

यही सीधी राह है। मेरा विश्वास है कि मैं सीधे, सरल और सत्य मार्ग पर चल रहा हूं।

परसों मैं अुत्तर-प्रदेश चला जाअूंगा। वहां भी लोगोंको समझाअूंगा और नम्रतासे बताअूंगा कि सबकी भलाअी किसमें है। समझाना मेरा काम है। जब आज दूसरों पर कोअी विश्वास नहीं करता है, तब मैंने अपने लोगों पर अत्यन्त विश्वास रखा है कि आप लोग मुझे जमीन देंगे। यह साधारण बात नहीं है। अिस तरहसे जमीन मांगनेकी हिम्मत भी होनी चाहिये। मैंने हिम्मत की और नारद मुनिकी तरह सबके घरमें अपना प्रवेश भी मान लिया है। मैं सभी — गरीबों, श्रीमंतों और मध्यमवर्गवालों — के घर जाता हूं और सबके मुंहमें विष्णुका मुंह देखता हूं।

तुलसीदासजीने अेक चौपाअीमें कहा है कि मैंने भगवानको स्वामी मानकर अुसका गुण गाया और रिझाया और अुससे सब कुछ प्राप्त कर लिया। अुसी तरह अगर हम भी लोगोंको समझा-बुझाकर रिझा लेंगे, तो जो मांगेंगे वह प्राप्त होगा। अिस तरह करेंगे तो निश्चिन्त होकर रातको सोयेंगे। मैं सबको भगवान-स्वरूप देखता हूं और अुनका गुण गाता हूं, निन्दा नहीं करता। मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तानके श्रीमंतों और गरीबों, सबमें गुण भरा पड़ा है। अगर हम लोगोंको समझाते हैं और रिझानेका गुण आ जाता है, तो चिन्ता करनेका कोअी कारण नहीं। अुत्साह और शुद्ध हृदयसे मैंने यह काम शुरू किया है और भगवान चाहेगा तो मैं अिसे चलाअूंगा। (हिन्दुस्तान, २४–११–'५१)

हरिजनसेवक, ८–१२–'५१

रचनात्मक कार्यकर्ताओंको आह्वान

[सर्वोदय-सम्मेलन, मथुरामें ता० १–११–'५१ को अुत्तर-प्रदेशके रचनात्मक कार्यकर्ताओंके सामने दिये हुअे भाषणसे।]

अकल्पित खोज

तेलंगानामें जो काम हुआ, वह आप जानते होंगे। वर्धासे शिवरामपल्लीके लिअे मैं रवाना हुआ, तब अुस संबंधमें कोअी खयाल मुझे नहीं था। अगर होता तो शिवरामपल्ली पहुंचते समय रास्तेमें मैं जरूर कुछ जमीन मांगता। शिवरामपल्लीके बाद मैं तेलंगाना गया, तो बिलकुल कोरा मन लेकर गया। अिसी खयालसे गया कि वहांकी परिस्थितिको खुद देख सकूं। समस्याका हल भी वहां सूझ जायगा, अैसा कोअी अन्दाज पहलेसे मुझे नहीं था। लेकिन प्रवासके दरमियान शीघ्र ही मेरे सामने जमीनका मसला पेश हुआ। लोगोंने मुझसे जमीन मांगी और अुनके लिअे मुझे जमीन मिली भी। अकसर जमीन मांगना और अुसका अिस तरह आसानीसे मिल जाना आज तक कभी हुआ नहीं। मंदिरों और मठोंके लिअे या अैसी ही अन्य संस्थाओंके लिअे कुछ जमीन मिलनेके अुदाहरण पाये जाते हैं, परंतु भूमिहीनोंको जमीन तकसीम करनेकी यह बात बिलकुल नयी थी। मनुष्य पैसा दे सकता है, परंतु जमीन देना यानी अपना हिस्सा देना है। यह काम कितना कठिन है! महाभारतकी मिसाल आप जानते हैं। पाण्डवोंने पांच गांव मांगे थे। दुर्योधनने सुअीकी नोक पर रह सके अितनी जमीन देनेसे भी अिनकार कर दिया था। अितना कठिन यह सवाल है। फिर अिन दिनों जमीनकी कीमत भी कुछ बढ़ती गयी है। और जैसे जैसे कीमत बढ़ती गयी, लोगोंको जमीनका लोभ होता गया। ममत्व और भी बढ़ता गया। अैसी हालतमें जमीनका मांगना और अुसे पाना आसान काम नहीं था।

रचनात्मक कार्यकर्ताओंको आह्वान

लेकिन मैंने अत्यन्त विनयपूर्वक, अत्यन्त प्रेमपूर्वक जमीन मांगना शुरू किया। मैं बयान नहीं कर सकता कि मैंने कितने विनयपूर्वक और भक्तिपूर्वक काम किया और दो माहमें लोगोंने बारह हजार अेकड़ जमीन दरिद्र-नारायणके लिअे मुझे दे दी। वहां मैंने अेक समिति बनायी, जिसने मेरी गैरहाजिरीमें अब तक करीब तीन हजार अेकड़ जमीन और प्राप्त की है।

धन-निधिका आश्रय

बारिशके कारण मुझे वर्धा आना पड़ा और मैं अपने खेतीके काममें जुट गया। आप जानते हैं कि अिन दिनों मैं किसान बन गया हूं। श्रमके आधार पर ही सारी संस्थायें चलानेका पागलपन मुझे सूझा है। और मेरा विश्वास है कि अुसके बिना अब आजके जमानेमें हमारी संस्थायें तेजस्वितापूर्वक नहीं चल सकतीं। बापूके जानेके बाद लोग अब भी हमें पैसा दें और हम पैसेके आश्रय पर अपने कामको और अपने-आपको जीवित रखें, यह अुचित नहीं है। मैं मानता हूं कि गांधी-निधि अैसी आखिरी निधि है, जो देशने गांधीजीके नाम पर अिकट्ठा की है। अिसके आगे कोअी पैसेकी निधि नहीं जमा कर सकता, और न करना चाहिये। हमें अब श्रमका ही संगठन करना चाहिये; अन्यथा लोग तो प्रेमपूर्वक पैसा देंगे, परंतु हम खतम हो जायंगे।

सर्वनाशके बिना सर्वोदय

आगेके प्रोग्रामके बारेमें मैं सोच ही रहा था कि अितनेमें दिल्लीका बुलावा आया। रवाना होनेसे पहले वर्धाके मेरे व्याख्यानमें मैंने कहा था कि अब मेरी अहिंसाकी परीक्षा है और लोगोंकी सद्‌भावनाओंकी भी। तेलंगानामें जो जमीनें मिलीं, अुसके पीछे अत्याचारोंकी पृष्ठभूमि थी। तप्त भूमि पर बारिशकी बूंदें बरसती ही हैं। लेकिन चूंकि अिधर अैसी कोअी तपन नहीं हो पाअी थी, अिसलिअे सोचा गया कि शायद भूदान प्राप्त करनेमें वैसी सफलता न मिल सके। अिसका तात्पर्य यह होगा कि सर्वोदयके पहले सर्वनाशकी जरूरत है। अगर अैसा अर्थ निकाला जाय, तो यह अेक भयानक सूचन कहा जा सकता है।

कुछ लोग मानते हैं कि अहिंसाके लिअे हिंसा भी जरूरी होती है। परंतु जैसे तेलंगानामें अहिंसाका प्रयोग सफल रहा, वैसे ही अिस यात्रामें भी वह सफल रहा और यह सिद्ध हुआ है कि विना सर्व-नाशके भी सर्वोदय हो सकता है। हिन्दुस्तानके लोगोंकी भूमिका सर्वोदयके लिअे तैयार है।

तपस्याका देश

लेकिन सागर (मध्यप्रदेश) में तारीख २ अक्तूबरको जो सर्वोदय-सम्मेलन हुआ, अुसमें मैंने कहा था कि हिन्दुस्तानकी भूमिकी समस्या तव हल हो सकेगी, जब जमीनका पांचवां हिस्सा भूमिहीन लोगोंको मिल जावेगा। आज भूस्वामियोंके पास जो जमीन है, अुसका पांचवां हिस्सा यदि दानपूर्वक, प्रेमपूर्वक और श्रद्धापूर्वक भूमिहीनोंको मिल जाता है, तो अेक महान क्रांति हमारे देशमें हो जाती है। आज तो यूरोपमें भी अैसा प्रयत्न शुरू हुआ है। अुपनिषदोंने बताया है कि परमेश्वरके शासनमें देनेवालोंकी प्रशंसा होती है। दान नैमित्तिक वस्तु नहीं है। भोजनकी तरह दान भी नित्याचरणकी वस्तु है। गीताने तो यज्ञ-दान-तपके रूपमें अेक नित्यकरणीय पूरा रचनात्मक कार्यक्रम ही हमारे सामने रख दिया है। आज अितनी गिरी हुअी हालतमें भी हिन्दुस्तानके कअी लोग कअी तरहकी तपस्या कर रहे हैं। आज हिन्दुस्तानमें मैं घूम रहा हूं और लोग भी कहते हैं कि विनोबाजी घूम रहे हैं। परंतु सैकड़ों-हजारों लोग अिसी तरह देशमें घूम रहे हैं। जैन मुनि तथा अनेक श्राविकाअें घूम रही हैं। हो सकता है कि अुनके काममें थोड़ा मोह रहा हो, थोड़ी जड़ता भी हो, लेकिन घूमनेकी तपस्या अिस देशमें जारी है। गांधीजी कहते थे कि यहां अहिंसाका नित्य विकास होता रहा है। हमारे लोगोंने करोड़ोंकी तादादमें मांसाहारसे मुक्ति पाअी। कितनी तपस्या अिस घटनाके पीछे की गयी होगी? मैं यहां मांसाहारसे होनेवाले लाभहानिकी चर्चा नहीं करना चाहता, लेकिन अिस घटनासे अन्दाज मिलता है कि हिन्दुस्तानमें अैसी अनेक प्रकारकी तपस्यायें हुअीं। अिसी तरह शस्त्र-परित्यागकी भूमिका भी है। और जब हिन्दुस्तानके पास आक्रमणकारी शक्ति थी, तब भी अुसने और देशों पर आक्रमण

नहीं किया। ये सव वातें वताती हैं कि हिन्दुस्तानमें तपस्या नित्य होती रही है।

जिस प्रकार हमारे देशने अहिंसक तरीकेसे अपनी आजादी हासिल की है, अुसकी मिसाल दुनियाके किसी भी देशकी आजादीके अितिहासमें नहीं मिल सकती। ये सारी घटनायें अुस तपस्याकी सूचक हैं, जो हमारे देशकी परम्पराकी विशेषता है। हिन्दुस्तानके वातावरणमें अैसी तपस्या नित्य नये रूपमें प्रगट होनेकी सम्भावना है। अिसी श्रद्धासे मैंने सारे देशसे दरिद्र-नारायणके लिअे पांच करोड़ अेकड़की मांग की है।

सर्वोदय-सेवकोंको आह्वान

यह अैसी वात नहीं है, जो मैं अकेला ही कर सकूं। अर्थात् भगवान चाहे तो मुझ अकेलेसे भी वह यह काम करवा सकता है। और यह भी हो सकता है कि मेरी आवश्यकता ही न रहे। परंतु अगर आजकी गतिसे यह काम पूरा होनेवाला हो, तो अिसमें पांच सौ वरस लग सकते हैं। लेकिन अगर छोटीसी मुद्दतमें अिसे पूरा करना है, तो जो भक्ति, जो शक्ति और जो प्रयत्न अिस काममें आज लग रहे हैं, अुससे सौ-गुना ज्यादा लगने चाहिये। अिस वक्त गांधीजीके वताये हुअे जो भी काम हैं, वे सारेके सारे खतरेमें हैं — अगर अहिंसा आजकी समस्याको हल करनेमें कामयाव नहीं होती। और कामयाव होती है तो खादी भी आगे वढ़ेगी, हरिजन-कार्य भी आगे वढ़ेगा, सभी काम अूंचे अुठेंगे। लोग मुझे पूछते हैं कि क्या हम सारेके सारे अिस काममें जुट जायं? अेक मनुष्य होता है, जो अिशारेसे समझता है। अेक वह होता है, जिसे कहना पड़ता है। और अेक वह होता है, जो कहनेसे भी नहीं समझता। मैं आज वुढ़ापेमें प्रचारके लिअे निकल पड़ा हूं। तीस साल तक मैंने खादीका काम किया। परंतु आज मैं जिस कामके प्रचारके लिअे निकला हूं, अुससे ही खादी वढ़ने-वाली है। खादीके लिअे अलगसे कुछ करनेकी जरूरत मुझे नहीं नजर आती। खादीवालोंसे मैं कहूंगा कि खादी अेक विचार है। और मुझे खुशी है कि वह वीड़ी और चायकी तरह जल्दी नहीं फैलता। वह

अेक क्रांतिकारी विचार है। पुराने जमानेमें चरखा था, परंतु तब वह क्रांतिका प्रतीक नहीं था। अगर वे लोग चरखा न चलाते तो अुन्हें नंगा रहना पड़ता। आपका चरखा सामनेवाली मिलसे टक्कर लेकर चलता है। वह सिर्फ हाथसे नहीं चल सकता। अुसके पीछे बुद्धि, हृदय, निष्ठा होनी चाहिये। अिसलिअे अगर खद्दरको भी चलाना है, तो अुसके पीछे आजकी समस्याको हल करनेका साधन होना चाहिये। अिसलिअे फिलहाल चाहे हम चरखा चला लें, ग्रामोद्योग चला लें, लेकिन अगर हम अिन चार-पांच वर्षोंमें जमीनकी समस्याको सुलझा लेते हैं, तो दुनियाका नेतृत्व हम ही करनेवाले हैं। क्योंकि दुनिया अब थकी हुअी है। वह अधिकाधिक शस्त्र-निर्माणके दुष्ट चक्रमें अुलझती जा रही है। अुसे कुछ सूझ नहीं रहा है और अहिंसासे अुसके सवालोंका हल होगा अैसा अुसे विश्वास नहीं है। अिसलिअे अगर हमारे सारे सेवक अिस काममें लग जाते हैं, तो वे ठीक वही काम करते हैं जो आज हमें करना चाहिये। अगर वे यह नहीं करते तो गलती करते हैं।

लोग मुझे पूछते हैं कि आपकी यात्रामें आप कुछ हरिजन-सेवाका कार्य भी क्यों नहीं करते? यह तो गंगाको विनती करने जैसा हुआ कि तू जाते समय रास्तेमें पेड़ोंको भी सींचती हुअी जा! गंगा तो वह काम करनेवाली ही है। अुसे कहनेकी क्या जरूरत है? जो जमीनें मिलनेवाली हैं वे ज्यादातर हरिजनोंमें ही बटनेवाली हैं। मेरी तो अिच्छा है कि हमारे मेहतर भाअी खेती करें। मैं अुन्हें जमीन देना चाहता हूं। आज वे जो काम कर रहे हैं, वह अिन्सानोंके करने लायक नहीं है।

अिसलिअे मेरी निश्चित राय है कि जितने सर्वोदय-कार्यकर्ता हैं, अुन सबको अिस समय अिस भूमिदान-यज्ञके काममें लग जाना चाहिये।

सर्वोदय-समाजकी विशेषता

सर्वोदय-समाजकी रचनाके बारेमें मैं थोड़ा गुनहगार माना जाता हूं। लोग कहते हैं कि आपने जो रचना बनाअी है, अुसमें कोअी अनुशासन नहीं रखा गया। मैं कहता हूं कि अैसी अनुशासननिष्ठ संस्थाअें

तो अनेक हैं। यह अेक अैसी संस्था रहने दीजिये, जो सिर्फ सलाह देती है, आज्ञा नहीं देती। सलाह माननेकी कोअी जिम्मेदारी भी हमारे सेवकों पर नहीं है। वे चाहे हमारी सलाह स्वीकार करें, चाहे न करें। लेकिन यही देखिये न कि विना किसी अनुशासनके कितने सारे लोग यहां आ गये हैं? अिन पर कौन जबरदस्ती करनेवाला है? हमारी बात अगर अिनको जंचती है, तो अुस प्रकार वे अमल करते हैं। लेकिन यह सही है कि अगर कोअी बात किसीके ध्यानमें आती है तो अपने आप ही वह चल पड़ती है। तो अिस तरह हमारे यहां अितना बड़ा समाज विना किसी अनुशासनके और विना किसी अपेक्षाके भी जमा हो जाता है। जिन्हें आंखें हैं वे आकर देखें तो सही कि ये ढाअी सौ, तीन सौ जिम्मेदार लोग विना किसी अनुशासनके केवल निमंत्रण पाकर यहां कैसे अेकत्रित हुअे हैं?

बात असल यह है कि हमारे बहुतसे लोगोंको अपनी आत्म-शक्तिका भान नहीं होता और आत्मशक्तिका भान न होनेसे बढ़कर और कोअी अपमान नहीं है। मेरी क्या शक्ति है कि अितने सारे सज्जन लोग यहां आते? लेकिन अुन्होंने प्रेमका निमंत्रण स्वीकार किया और वे आये। हमें समझना चाहिये कि अिसके पीछे अेक भावना है। अिसलिअे अगर अुत्तर प्रदेशमें भूमिहीनोंके लिअे अेक करोड़ अेकड़ जमीन जमा करनी है, तो सारी शक्ति, सारी बुद्धि अिस काममें लगा देनी होगी।

कांग्रेस तथा अन्य राजकीय दल

अेक बात और। पंडित जवाहरलालजी कांग्रेसकी शुद्धि करना चाहते हैं। कांग्रेसके बारेमें मुझ पर खास कोअी जिम्मेदारी न होते हुअे भीमैंने अेक पत्रक निकाला कि अिस समय हमें पं० नेहरूको अिस काममें मौका देना चाहिये। लेकिन जब तक किसी संस्थाके सामने कोअी त्यागका कार्यक्रम नहीं होता, तब तक अुसकी शुद्धि नहीं हो सकती। यह सही है कि त्यागके कार्यक्रमके कारण घर-घरमें कुछ क्लेश भी हो सकते हैं। अीसाकी सिखावनके कारण अुस समय घर-घरमें झगड़े होते थे और अुसी तरह गांधीजीके कारण भी घर-घरमें झगड़े पैदा

हुअे। क्योंकि अुन्होंने लोगोंके सामने त्यागका कार्यक्रम रखा और अुनसे त्याग करवाया।

आजकल नये-नये पक्ष निर्माण किये जाते हैं। क्योंकि वे मानते हैं कि प्रजातंत्रमें अगर विरोधी दल नहीं हुआ, तो अुसका परिवर्तन तानाशाहीमें हो सकता है। लेकिन जब ये पक्ष भी चुनावमें खड़े हो जाते हैं और अुनके लोग चुनकर आते हैं — चाहे वे थोड़े ही क्यों न आयें — तो भ्रष्टाचार दाखिल हुअे बिना नहीं रहेगा। अिसलिअे यद्यपि मैं नये दल कायम करनेका विरोध नहीं करता, फिर भी मेरा कहना है कि देशमें अेक अैसा दल चाहिये जो सत्तासे बिलकुल अलग रह सके। निरंतर-सेवा, निरपेक्ष-सेवा करनेवाले नीतिनिष्ठ जनसेवकोंका यह समूह होगा, जो सदा-सर्वदा नीतिवान, शीलवान तथा सेवापरायण रहकर जनतासे संपर्क रखेगा, विचार-प्रचार करेगा। तभी राजसत्ता विशुद्ध रह सकेगी। वरना केवल विरोधी दल कायम करनेसे राज्य-कारोबारकी शुद्धि नहीं हो सकती।

अुपसंहार

अंतमें आपसे मुझे यही कहना है कि आप सबको अिस भूदान-यज्ञको सफल बनानेमें 'तन-मन-प्राण' से लग जाना चाहिये। मैं तो अेक जिलेके तीन चार गांवोंसे ही गुजर सकूंगा। अुस समय जिलेभरसे वहां आकर जमीन मिलनी चाहिये। नदियां सागरमें मिलती हैं अुस तरह। अिस कामके लिअे आपको अनेक कार्यकर्ता जिलेकी हर तहसीलमें भेजने होंगे। सैकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा ही यह कार्य संपन्न हो सकता है। तब तो मैंने अेक करोड़ अेकड़की जो मांग आपके सूबेसे की है, अुसमें कुछ गणितमें बताने लायक अंश जमा हो सकेगा। तब क्रांति भी हो सकेगी। नहीं तो गांधीजीका सारा काम अेक दिन समेट लेना पड़ेगा। अनेक कामोंमें से करनेका यह अेक काम नहीं है, बल्कि सब काम छोड़कर अिसमें लग जानेकी जरूरत है।

हरिजनसेवक, ५–१–'५२

आन्दोलनकी आध्यात्मिक नींव

[सर्वोदय-सम्मेलन, मथुरामें ता० १–११–'५१ को दिये गये भाषणसे।]

आपकी अिस प्राचीन नगरीमें आते ही बहुत सारे प्रसंग याद आते हैं। आप लोग तो अिस नगरीमें हमेशा ही वास करते हैं, अिसलिअे वे सारे स्मरण आपके लिअे स्मरणरूप भी हो सकते हैं। परंतु जब मेरे जैसे बाहरके लोग आते हैं, तो अुनके चित्तकी दशा हमेशाकी-सी नहीं रहती, बल्कि अुनका हृदय अेक स्वर्गीय वातावरणमें विहार करने लगता है।

मैं जानता हूं कि यह वही महावन है, जहां बालक ध्रुवने तपस्या की थी। अुसके बादके भी अनेक स्मरण अिस स्थानसे गुंथे हुअे हैं। अुन सब स्मरणोंमें भगवान कृष्णका स्मरण सब भारतवासियोंके लिअे अेक चिरगौरवकी वस्तु हो गअी है। भारतवासी कहीं भी रहते हों, भगवान कृष्णका स्मरण वे हमेशा करते हैं। अैसी हालतमें आप लोगोंके सामने कुछ बोलना भी मुझे कठिन प्रतीत होता है। जहां हृदय भरा होता है वहां वाणी काम नहीं कर पाती।

गीताकी सार्वभौम सीख

भगवान श्रीकृष्णके कारण भारतीय समाजको अेक विशेष रूप मिला है, जिसका दर्शन हमें गीतामें मिलता है। लेकिन दुःखकी बात है कि गीताने जो आदर्श हमारे सामने रखा और जिसका दर्शन हमें श्रीकृष्णके जीवनमें मिलता है, अुसका प्रत्यक्ष स्वरूप भारतीय समाजमें देखनेको नहीं मिलता। यहां तक कि हमारा यह देश बाहरके लोगोंके आक्रमणके वश हो गया और दो-ढाअी सौ साल गुलाम भी रहा। अिस बीच हमारी दुर्दशा चरम सीमाको पहुंच

गयी। आज जागतिक स्थितिके कारण और जो सत्याग्रह-आन्दोलन हमने किया अुसके कारण हम स्वतंत्र-हो गये। हमने चार साल तक स्वराज्यका अनुभव किया है। परन्तु हमारी स्वतंत्रताके वावजूद जो दुर्गुण हमारे समाजमें घुस गये थे, वे कम नहीं हो पाये वल्कि तीव्र हो गये। हम अगर अुधर ध्यान नहीं देंगे और अुनके निवारणकी कोशिश नहीं करेंगे, तो हमारा स्वराज्य आनंदप्रद नहीं होगा, वल्कि अुसके दुःखप्रद ही होनेकी संभावना है।

गीताने तो यहांसे आरंभ किया है कि मनुष्य किसी भी समाजमें क्यों न जन्म ले, अगर वह अपना-अपना काम प्रेम, भक्ति और निष्ठापूर्वक करता है, तो मोक्षका अधिकारी वन जाता है। यह सारा अुपदेश हमें गीतासे सीखना है।

लेकिन भारतवर्षका सारा अितिहास देखिये। हम देखते हैं कि हमारे समाजमें दर्जे पड़ते गये। कुछ लोग अपनेको अूंचा कहने लगे और अुन्होंने शरीर-परिश्रमसे खुदको मुक्त कर दिया। जिनको शरीर-परिश्रम करना पड़ा, वे सारे नीच माने गये। हरिजन, जो चमड़ेका काम करते थे, और अुनसे अूंचे किसान, जो खेतीका काम करते थे, या अुनसे और नीचे मेहतर, जो सफाअीका काम करते थे — अैसे अेक-से-अेक अूंचे-नीचे दर्जे माने गये। परिश्रम न करनेवाले सवसे अूंचे समझे गये। श्रमकी प्रतिष्ठा नहीं रही। देशके लिअे परिश्रम करनेवाले अगर नीच माने जायं, तो वह देश पतनकी ओर जाता है। रोमन अितिहासमें अैसा ही हुआ और हिन्दुस्तानमें भी यही हुआ। वाहरके व्यापारी यहां आये। यहांका व्यापार गिरने लगा। यहांके व्यापारियोंके लिअे यहांके लोगोंके दिलमें कोअी विशेष प्रेम नहीं हो सकता था, क्योंकि अुन्होंने कभी अिस वातकी कोशिश नहीं की कि आम जनताके जीवनसे वे अेकरूप हो सकें। नतीजा यह हुआ कि विदेशी व्यापारियोंके मुकावलेमें यहांके व्यापारी हार गये, देश गुलाम वन गया।

साम्ययोग

अगर आम लोगोंमें व्यापारियोंके प्रति सद्भावना रहती, तो राष्ट्रकी रक्षाके लिअे वे वलिदान करनेके लिअे आगे आते। परंतु

समाजका पतन हो गया, अिसलिअे कि परिश्रमको हीन माना गया। आज भी वही परिस्थिति वनी हुअी है। यद्यपि गांधीजीके आनेके वादसे कुछ लोग परिश्रम करनेमें हीनता नहीं मानते अथवा कुछ परिश्रम कर भी लेते हैं, पर आम लोगोंमें यही मान्यता है कि परिश्रम करनेवाले योग्यतामें नीचे हैं। अितना ही नहीं, अुनके कामका आर्थिक मूल्य भी कम माना जाता है। हिन्दुस्तानमें पहले कभी अैसा नहीं था कि कोअी ब्राह्मण या धर्म-शिक्षक किसानसे अपनेको अूंचा मानता हो। अुसे तो अपरिग्रही वनकर रहना होता था। लेकिन आज तो जो शिक्षा पाते हैं वे भी अपने शिक्षणकी कीमत वहुत अधिक आंकते हैं! यह भावना वहुत घातक है। जव तक आर्थिक और सामाजिक जीवन अेकरस नहीं हो जाता, तव तक समाज शक्तिशाली नहीं वन सकता। आज समाजमें यह खयाल वन गया है कि अूंचे वर्गवालोंके जीवनके लिअे अधिकसे अधिक वेतन और जो श्रमनिष्ठ हैं अुनके लिअे कम-से-कम वेतन रहे। यह दीवार हमें हटानी होगी और साम्ययोग प्रस्थापित करना होगा। होना तो यह चाहिये कि मनुष्य अगर कोअी वौद्धिक या नैतिक परिश्रम करे, तो अुसका कोअी मूल्य ही नहीं आंका जाना चाहिये। डूवतेको वचानेवालेकी दस मिनटकी सेवाका मूल्य कौन कैसे नाप सकता है? अैसी सेवाका मूल्य आर्थिक परिभापामें निकालना ही गलत है। अिसी तरह न तो वच्चेको पालनेवाली माताके परिश्रमकी कीमत और न हमारे राष्ट्रपतिकी, जिनका चिन्तन राष्ट्रके विकासके लिअे होता रहता है, सेवाओंकी कीमत पैसेमें आंकी जा सकती है। अुपरोक्त तीनों सेवाकार्योंमें कुछ प्रकार-भेद हो सकता है, परंतु अुनकी कीमत पैसेमें नहीं आंकी जा सकती, अिस वात पर मतभेद नहीं हो सकता।

जिस प्रकार केले और पत्थरकी वरावरी नहीं हो सकती, फिर वह पत्थर चाहे सोनेका हो या चांदीका, दोनों वस्तुओंकी श्रेणियां ही भिन्न हैं, अुसी प्रकार मेहतर, माता, तीमारदार, प्रोफेसर आदिके सेवाके अैसे असंख्य काम हैं, जिनका मूल्य पैसेमें हो ही नहीं सकता। अिसलिअे होना यह चाहिये कि जो भी शख्स निष्ठापूर्वक समाज-

सेवा करता है, वह अपनी रोजीका हकदार हो जाता है। अुसी प्रकार अगर राष्ट्रपति अपने राष्ट्रकी सेवा पूरी ताकतके साथ करते हैं —भले ही वह सेवा मानसिक ही क्यों न हो—तो अुन्हें भी अुतनी रोजी मिलनी ही चाहिये, जितनी अुनके जीवन-निर्वाहके लिअे जरूरी है। जो न्याय किसान-मेहतरके लिअे है, वही न्याय राष्ट्रपतिके लिअे होना चाहिये। मैंने प्रोफेसर, न्यायाधीश, किसान, लेखक और संपादक आदिके रूपमें सभी काम किये हैं। परंतु कोअी भी अेक काम दूसरे कामकी अपेक्षा अधिक योग्यताका था, अैसा अनुभव मुझे कभी नहीं हुआ। सबमें समान मानसिक आनंदका अनुभव मुझे मिला। यह सही है कि कामके प्रकारके अनुसार शारीरिक श्रमकी अनुभूतिमें भिन्नता हो सकती है। परन्तु अुसके कारण मानसिक आनंद कम नहीं हो सकता। जब मुझे कोअी जरूरतसे ज्यादा चीजें देना चाहता है, तो मुझे सूझता नहीं कि क्या किया जाय? मैं अुनको ग्रहण नहीं कर सकता। जितने दहीकी मुझे आवश्यकता है अुससे ज्यादा मुझे क्यों मिलना चाहिये; और कोअी दे तो भी मुझे स्वीकार क्यों करना चाहिये, यह मेरी समझमें नहीं आता। होना यह चाहिये कि आजका आज और कलका कल। और हर कामका आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्य समान हो। साम्ययोग अिसी तरह आ सकता है। गीताने स्पष्ट रूपसे समझाया है कि जो न्याय अपने लिअे वही दूसरेके लिअे लागू करना चाहिये।

अब स्वराज्यके बाद हमें साम्ययोगकी स्थापनाका आदर्श सामने रखना होगा। अिसीको हमने सर्वोदय् कहा है। आप चाहे साम्ययोग शब्दका प्रयोग कीजिये या सर्वोदयका। अिसी सर्वोदय या साम्ययोगकी स्थापना करनेके लिअे मैं गांव-गांव घूम रहा हूं।

जीवन-परिवर्तनकी न्याय्य प्रक्रिया

आप जानते हैं कि आजकल मैं भूदान मांगता हूं। जिनके पास जमीनें नहीं हैं अुनको मैं भूमि देना चाहता हूं। यह सारा गोरख-धंधा मैं क्यों कर रहा हूं? अिसलिअे कि आज समाजमें जितने अूंचे-नीचे माने जानेवाले दर्जे हैं, वे सब मिटने चाहिये और हममें से सबको

शरीर-परिश्रम करनेका मौका मिलना चाहिये। यह कैसे हो सकता है कि जो खुद खेती नहीं कर सकते अुनके हाथमें खेती हो? और जो खेती कर सकते हैं अुनके हाथमें खेती न हो? जो खुद खेती नहीं जानते वे दूसरोंके हाथसे काम करवाते हैं; और जो जानते हैं वे मजदूरके तौर पर काम करते हैं। वे पूरी लगनसे अिसीलिअे काम नहीं कर पाते कि पैदावार पर अुनका हक नहीं रहता। फिर अुन्हें मजदूरी भी पैसेमें दी जाती है और खाना भी अुन्हें पूरा नहीं मिल पाता। यह सब क्यों सहन करना चाहिये? क्या अिस अवस्थाको हम बंद कर दें, तो कोअी अन्याय होनेवाला है? जिसके पास जमीन है अुसे अगर मैं समझाअूं कि भाअी, तुम अपने सौ अेकड़में से पचास रखो, पचास दे दो, तो अिससे क्या मैं अुस पर मित्रके नाते अपना प्रेम नहीं प्रकट कर रहा हूं? अगर वह यह कहे कि आज तक मेरा जीवन जैसा रहा है वैसा ही आगे भी निभाना चाहता हूं, तो मैं अुसको समझाअूंगा कि भाअी, जिसके शरीरका वजन जरूरतसे ज्यादा बढ़ गया हो अुसका वजन कम करना अुस पर दया करना, प्रेम करना ही है। और अिसी तरह जिसका वजन घट गया हो, अुसकी हड्डियों पर कुछ मांस चढ़ा देना भी हमारा कर्तव्य हो जाता है। फाजिल वजनवालेका वजन कम करनेके लिअे अुसे अपनी जीवन-पद्धतिमें कुछ तो फरक करना ही पड़ेगा। हाथीकी तरह चलनेवाला अगर घोड़ेकी तरह दौड़ने लग जाय, तो यह परिवर्तन अुसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिये।

पंचायत-धर्मके रूपमें शक्तिका विकास

तो मेरा यही कहना है कि आप लोग सोचिये कि अीश्वरकी योजना क्या हो सकती है? क्या अुसकी योजना अैसी हो सकती है कि कुछ लोगोंके पास तो जमीन हो और कुछ लोगोंके पास न हो? मैं यह नहीं कहता कि जिनके पास अधिक जमीन है, वह सबकी सब अुन्होंने अन्यायपूर्वक ही प्राप्त की है। अुन्होंने वह अुद्योगपूर्वक भी हासिल की होगी। परंतु अिससे यह नहीं सिद्ध होता कि अुसे रखनेका हक अुन्हें प्राप्त हो गया। जो जमीनें आपके पास आ गअी हैं, वे

दूसरोंकी हैं और आपको वे प्रेमपूर्वक दे देनी चाहियें, भले ही आज आप अुनके स्वामी हों। मैं यह भी नहीं कहता कि सबको समान भूमि मिलनी चाहिये। गणितकी समानता मैं नहीं चाहता, परंतु अुंगलियोंकी समानता जरूर चाहता हूं। ये पांचों अुंगलियां तो बिलकुल समान न होते हुअे भी अेक-दूसरेके सहकारसे रहती हैं और लाखों काम कर देती हैं। ये पांचों समान नहीं हैं अिसका अर्थ यह नहीं है कि अेक तो अेक अिंच लंबी है और दूसरी अेक फुट। यानी अगर समानता नहीं है, तो विषमता भी नहीं चाहिये, तुल्यता होनी चाहिये। अिन पांचोंमें अलग-अलग शक्तियां हैं। अिसी तरह अलग-अलग मनुष्यमें अलग-अलग शक्तियां होती हैं। अुन सारी शक्तियोंका विकास होना जरूरी है। अिसीको पंचायत-धर्म कहते हैं।

पंचायत-धर्मका अेक आदर्श था, पांच बोले परमेश्वर। अिसका अर्थ यह नहीं होता था कि पांचमें से चार बोले परमेश्वर; या तीन बोले परमेश्वर। कारण, पांचमें से तीन या चारकी अेक राय हो और अुसके मुताबिक काम हो, तो अुसमें से मेजॉरिटी-मायनॉरिटी यानी बहुमत-अल्पमतका भेद शुरू होगा। अुसका अिलाज यही है कि पांच बोले परमेश्वरका न्याय ही चलाया जाय।

भगवानकी योजनामें ही विकेन्द्रीकरण

अगर हम समझ लें कि हरअेककी सामाजिक और आर्थिक योग्यता समान है तो ये भेद मिट सकते हैं। यह जो भूमिदान हो रहा है अुसमें अगर आप सारे लोग मेरे साथ हो जायं, तो आप अेक महान आन्दोलन खड़ा कर देंगे और अुससे हिन्दुस्तानकी सारी समस्या हल हो जायगी। आपने अहिंसाकी शक्तिसे स्वातंत्र्य प्राप्त किया, जिसके लिअे दुनियाके दूसरे मुल्कोंको हिंसाके तरीके अख्तियार करने पड़े और अनेक खतरोंका सामना करना पड़ा। परंतु अब स्वातंत्र्य प्राप्त करनेके बाद अगर आप आर्थिक और सामाजिक समानता कायम करनेका दूसरा कदम नहीं अुठाते हैं, तो आपका स्वातंत्र्य खतरेमें है अैसा निश्चित समझिये। अिसके लिअे परमेश्वरकी विकेन्द्रित योजनाकी तरह हमें भी विकेन्द्रित योजनाओं पर अमल करना होगा, सहकारी संस्थाओं

द्वारा आर्थिक नियंत्रण सिद्ध करना होगा। अगर परमेश्वरकी योजनामें विकेन्द्रीकरण न होता, तो अुसे भी बंबअीसे दिल्ली और दिल्लीसे कलकत्ता घूमना पड़ता! परंतु अुसने हरअेकको दो कान, दो हाथ, दो आंखें देकर आपसमें सहकार करनेके लिअे कह दिया। अगर कहीं अैसा करता कि अेकको चार कान और दूसरेको चार आंखें, देखना हो तो आंखवालोंकी मददसे और सुनना हो तो कानवालोंकी मददसे, तो आज वह जिस तरह क्षीर-सागरमें बेफिक्र सो रहा है वैसा नहीं सो पाता! हमें सहकारकी अिस खूबीको समझना चाहिये।

राजनीतिवाले 'वन वर्ल्ड' की बातें करते हैं, परंतु परमेश्वरके लिअे 'वन वर्ल्ड' तो नक्षत्रों सहित सारा त्रिभुवन ही हो सकता है; और अगर परमेश्वरने किसी अेकको ही 'मोनोपाली' दे दी होती कि वह अक्ल बांटे, तो अुसके सप्लाअी-विभागमें कितना काला-बाजार हुआ होता और तकसीममें कितनी गड़बड़ियां हुअी होतीं, अिसकी कल्पना आपको करनी चाहिये। अिन सबका अिलाज ग्राम-अुद्योगोंके पनपनेमें है और अुसका पहला कदम यह है कि भूमि-हीनोंको भूमि मिलनी चाहिये; दूसरा कदम है, ग्रामोंमें संपूर्ण ग्रामोद्योग जारी करने चाहिये।

मेरे भाअियो, मैं आपको जो यह कह रहा हूं कि भूमिके हर पुत्रका भूमिमाता पर हक है सो वह विचार मेरा अपना नहीं है। यह तो वैदिक कथन है। कोअी भी लड़का माताकी सेवासे अपने किसी दूसरे भाअीको रोक नहीं सकता। मैं तो यहां तक कहूंगा कि कोअी भी शख्स जमीन मांगे, तो अुसे वह मिलनी ही चाहिये और जमीनवालोंका कर्तव्य है कि अुसे जमीन दें। क्या पानी मांगने पर किसीको ना कहा जाता है? ना कहनेवाला कितना शरमिन्दा हो जाता है यह आप जानते हैं। अुसी तरह जमीन मांगने पर भी ना कहनेसे शर्म आवेगी।

सरकारका फर्ज

मैं यह समझ सकता हूं कि हम किसीको बिना परिश्रमके भोजन न दें। परन्तु अगर कोअी परिश्रमका साधन मांगता है, तो अुसे वह

साधन मुहैया कर देना हमारा धर्म है। सरकारका भी यह धर्म है कि कोओी भी मनुष्य अुससे जमीनकी मांग करे, तो वह अुसे अुसके परिवारके लिअे पांच अेकड़ जमीन दे दे। सरकारकी यह जिम्मेदारी होनी चाहिये।

परन्तु आज सरकार अैसा नहीं कर पा रही है। आखिर सरकार कौन है? यहांकी सरकार यहांकी जनताकी भावना पर हीं टिक सकती है। अेक बार जनता अिस बातको मान ले कि जमीन पर सबका अधिकार है, वह थोड़े लोगोंके कब्जेमें नहीं रह सकती, तो सरकार-रूपी ताला खोलनेकी कुंजी तो समाजके ही हाथमें है। मैं यह ताला कुंजीसे खोलना चाहता हूं, हथौड़ेसे अुसे तोड़ना नहीं चाहता। अिसलिअे अगर आप सब लोग मदद दें, तो हम कामयाब हो सकते हैं और यहां साम्ययोग सिद्ध हो सकता है। तथा दुनियामें हिन्दुस्तान गुरुस्थान प्राप्त कर सकता है। दुनियाको अिस समय अपेक्षा भी है कि हिन्दुस्तानसे मार्गदर्शन मिले। अिसलिअे अगर आप सब सारे कार्यक्रम छोड़कर अिस कार्यक्रमको अपनायेंगे, तो आप देखेंगे कि गांधीजी जो चाहते थे वह चित्र आप प्रत्यक्ष प्रगट कर सकेंगे। तो गांधीजीके विचारोंमें माननेवालोंको चाहिये कि वे अपनी पूरी शक्तिसे अिस काममें जुट जायें।

हरिजनसेवक, २६–१–'५२

६

अेक नैतिक आन्दोलन

[नीचेका भाग श्री विनोवा द्वारा सर्व-सेवा-संघके सहमंत्री श्री वल्लभस्वामीको लिखे गये अेक पत्रमें से लिया गया है।]

मैं किसी कानूनी कदमके लिअे आन्दोलन करना नहीं चाहता। मुझे तो अेक नैतिक आन्दोलन करना है। मुझे जो यश मिल रहा है अुसका भी अेक यही कारण है। नहीं तो मैं विलकुल निरुपयोगी ठहरूंगा। नैतिक विचारोंके प्रचारके वाद सहज ढंगसे आनेवाला कानून नाममात्रका ही होता है। अुसका रूप स्मृति जैसा होता है। ग्रंथके अन्तमें 'समाप्तम्' अक्षर लिखे जाते हैं। अहिंसक समाज-रचनामें कानूनका स्वरूप अिस तरह अन्तमें लिखे गये 'समाप्तम्' शव्द जैसा ही है। वह केवल अेक आखिरी मुहर होता है। सिर्फ मुहर लगा देनेसे ही ग्रंथ समाप्त नहीं हो जाता। ग्रंथ तो लिखनेसे समाप्त होता है। अिसलिअे 'समाप्तम्' लिखो या न लिखो, अुससे कुछ वनता-विगड़ता नहीं। यह वात मैंने अपनी वृत्ति दिखानेके लिअे नहीं लिखी है, लेकिन अिस आन्दोलनका केवल यही अेक स्वरूप हो सकता है। मैंने कहा भी है कि किसी विचारके लिअे नैतिक वातावरण तैयार होनेके वाद वननेवाले कानूनसे मुझे कोअी अेतराज नहीं है। जो लोग मानते हैं कि कानूनके विना यह काम नहीं हो सकता, अुन्हें मैं कहता हूं कि यदि अैसा ही हो तो समझ लीजिये कि मैं आपके विचारोंके लिअे जमीन तैयार कर रहा हूं। मेरी रायमें मेरा काम स्वयंपूर्ण है। और दर-असल अिसी श्रद्धासे मैं अुसे कर सकता हूं। आपका कानून वननेके वाद भी मेरा काम तो चालू ही रहनेवाला है। कारण, कानून वना भी तो वह चौदह सालके पहले विवाह करना नहीं, अिस तरहका होगा। लेकिन मैं तो पचीस साल तक विवाह कराना ही नहीं चाहता। खैर। थोड़ेमें विचार यह है कि अिसमें भूदान करनेवालेको होनेवाले

नुकसानकी भरपाओीका सवाल ही नहीं अुठता; अुल्टे मेरी अपील यह है कि वह सालंकृत कन्यादान करे।

प्रचार सर्वतंत्र-स्वतंत्र होना चाहिये। मतलब यह कि वह व्यक्तिगत तौर पर किया जाना चाहिये। मेरी पद्धति प्रचार करनेवाले व्यक्तिके गले अुतरी होनी चाहिये। यदि संभव और जरूरी हो तो अुसे खुद वह पद्धति देख भी लेनी चाहिये। हैदराबादमें कोदंडराव आदिकी जो समिति मैंने नियुक्त की है, वह मेरे ही बताये हुअे तरीकेसे काम कर रही है। वह समिति अेक शून्य जैसी है। सर्व-सेवा-संघको अुस शून्यकी बायीं ओर आंकड़े रखने चाहिये और अिस तरह अुसके कामकी कीमत बढ़ानी चाहिये। अुत्तर-प्रदेशमें मेरी निष्ठा मेरे साथ घूमनेवाले करणभाअी और दूसरे कार्यकर्ताओं पर बैठेगी। सबको अुन्हें मदद देनी चाहिये। सबसे मेरा मतलब है वे तमाम लोग, जिन्हें मेरा विचार गले अुतर गया हो। और वे सब मिलकर जो काम करेंगे, वह सर्व-सेवा-संघका ही काम माना जाय, अैसी व्यवस्था करनी होगी। गांधी-निधिके कार्यकर्ता ही मेरे आदमी हों अैसी बात नहीं; बल्कि वे तमाम लोग, जिनके हृदयमें मेरा यह विचार अुतर गया है और जिनमें अुसके प्रति प्रेम अुत्पन्न हुआ है, मेरे ही आदमी हैं। फिर अुनका संबंध गांधी-निधिसे हो अथवा कांग्रेससे, किसान-मजदूर प्रजापार्टीसे हो या समाजवादियोंसे, कम्युनिस्ट पार्टीसे हो या किसी दूसरी पार्टीसे। थोड़ेमें कहूं तो यह काम सर्वोदय-समाजको करना है।

हरिजनसेवक, ९–२–'५२

७

भूदान और अध्यात्म

[सेवापुरी सर्वोदय-सम्मेलनमें पहले दिन, ता० १३–४–'५२ को दिये हुअे भाषणसे ।]

अब तीसरी बात है भूदान-यज्ञकी। मैं मानता हूं कि यह बहुत ही बुनियादी काम है। लेकिन जैसा कि अेक भाअीने कहा, अिस कामकी अेक मर्यादा है। फिर भी मैं क्या करने जा रहा हूं, अिस बारेमें अपने विचार आपको समझा दूं। जाहिर है कि मनुष्यके हृदयमें क्या छिपा हुआ है, अुसकी शक्तिका हमें पता नहीं चल सकता। अगर अुस शक्तिकी मैं हद बांध दूं, तो मुझे कहना होगा कि मुझे आत्म-दर्शन कभी नहीं हो सकता। हमने देखा कि जनता बिना किसी कानूनकी मददके अपनी जमीनका हिस्सा दे सकती है। अगर हम जनताको समझायें कि बेजमीनका अुस पर हक है और जैसे हवा, पानी और सूरजकी रोशनी भगवानकी देन है वैसे जमीन भी भगवानकी देन है; अिसलिअे जो बेजमीन हैं अुन्हें जमीन देनी चाहिये, तो जमीनवाले बेजमीनोंको खुशीसे जमीन देते हैं। अिस तरह हमने देखा कि लोगोंने अिस क्रांतिकारी कार्यक्रमको अपनाया और आत्मामें छिपी हुअी अपार शक्तिका दर्शन हमें मिला।

अगर हम मानते हैं कि स्टेटको अेक रोज "विदर अवे" हो (मिट) जाना है, तो वह १९५२ में क्यों नहीं हो सकता? हमारी श्रद्धा अैसी होनी चाहिये कि अगर मैं अिस विचारको पसन्द करता हूं, अिस तरीकेमें श्रद्धा रखता हूं और अिस यज्ञमें अपनी सारीकी सारी जमीन दे देता हूं, तो वह विचार दूसरोंको भी अैसी प्रेरणा क्यों नहीं देगा? अेक भाअीने अपनी १९०० अेकड़ जमीनमें से पांच सौ अेकड़ जमीन मुझे दे दी, यह कहकर कि हम तीन भाअी हैं, आप चौथे हुअे। दूसरे अेक भाअीने अपने छह अेकड़में से दो अेकड़ दे दिये, यह

कहकर कि हम दो भाओी हैं, आप तीसरे हुअे। प्रायः रोज अैसी घटनाअें घटती हैं। मैं आपसे पूछता हूं कि अगर भगवान मुझको मांगनेकी प्रेरणा देता है और अगर अेक शख्स मानता है कि मैं अितना कर सकता हूं, तो जो काम अेक व्यक्ति कर सकता है वह सारे मनुष्य क्यों नहीं कर सकते? क्या आत्माका स्वभाव (धर्म) अलग-अलग व्यक्तियोंमें जुदा जुदा होता है? क्या आत्मशक्तिकी कुछ सीमा होती है? अिसलिअे मैं तो अिसी विचारके सहारे आगे बढ़ूंगा कि हर व्यक्तिमें आत्माकी शक्ति मौजूद हैं, अुसकी कोअी सीमा नहीं है, और जो त्याग अेक व्यक्ति कर सकता है वह सब कर सकते हैं।

कानूनकी बात हमेशा अुठाअी जाती है। लेकिन मेरा कहना है कि कानूनकी बात कानूनवालों पर छोड़ दीजिये। हमें तो अपना काम अिसी तरीकेसे किये जाना है। हो सकता है कि अिस तरीकेसे ही सारी जमीन बेजमीनोंमें बंट जाय और कानूनकी आवश्यकता ही न रहे। लेकिन अगर मनुष्यकी संकल्प-शक्ति अुतनी कारगर नहीं हुअी, जितनी अिस समस्याको हल करनेके लिअे जरूरी है और राज्यकी मदद लेनी ही पड़ी, तो अुस हालतमें भी हमें समझना चाहिये कि हमारा यह काम कानून बनानेमें पूरा मददगार होगा। यानी या तो कानूनकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी, या जो कोअी कानून बनना है वह बिना विरोधके आसानीके साथ बन सकेगा। फिर मेरे मांगनेका भी अेक तरीका होता है। मैं अत्यन्त नम्र होकर मांगता हूं, डरा-धमकाकर नहीं मांगना चाहता। अगर मैं लोगोंको समझाता हूं कि आप मुझे भूमि नहीं देंगे, तो मैं दो-चार सालमें कानूनन जबरन ले ही लूंगा, तो मैं मांगना ही नहीं जानता। मुझे अपनी श्रद्धाको नहीं छोड़ना चाहिये। श्रद्धा तो दीवारके समान खड़ी है। वह परदेके समान लटकती नहीं है। या तो वह खड़ी है या पड़ी है। वह आठ आने चार आने नहीं होती। या तो वह है या नहीं है। जैसे या तो अेक मनुष्य जिन्दा है या नहीं है। वह आठ आने जिन्दा है, आठ आने मरा है, अैसा नहीं हो सकता। श्रद्धाकी यही हालत है। बिना श्रद्धाके कोअी काम नहीं बन सकता। श्रद्धासे कृति होती है और कृतिसे निष्ठा बनती

है। निष्ठा प्राप्त होनेके पहले मनुष्य श्रद्धासे काम करता है। निष्ठा अनुभव-जन्य होती है। वह बादमें आ सकती है। परन्तु श्रद्धा तो आरम्भसे ही होनी चाहिये। अिसलिअे कहता हूं कि अगर हमें नैतिक शक्तिसे यह मसला हल करना है, तो अुस तरीकेमें हमारी अटल श्रद्धा होनी चाहिये।

अकेसर लोग मुझे पूछते हैं कि क्या आप अिस तरह अिस जमीनके मसलेको हल कर सकेंगे? मेरा कहना है कि दुनियाका मसला न तो राम हल कर सके, न कृष्ण। दुनियाका मसला दुनिया ही हल कर सकती है। आपका मसला मैं हल कर सकूं, अैसा कोअी अहंकार मुझे नहीं है। अिसलिअे मैं सदा निश्चिन्त रहता हूं, रातको गहरी नींद सोता हूं, अेक मिनिट भी मुझे नींद आनेमें देरी नहीं लगती। दिन भर काम किये जाता हूं। कभी मुझे चार अेकड़ जमीन मिलती है, कभी चार सौ मिलती है, कभी चार हजार मिलती है। फिर भी मुझे अुसका कोअी सुख-दुःख नहीं है। जनक महाराजकी तरह मैं सोता हूं और अिसलिअे काम कर सकता हूं।

अब सत्याग्रहके संबंधमें। मैं आप लोगोंको समझाना चाहता हूं कि मेरी अगर कोअी आबरू है तो वह सत्याग्रहीके नाते ही है। दूसरी कोअी आबरू मेरे पास नहीं है। अिसलिअे अगर सत्याग्रह करनेकी आवश्यकता हुअी, तो मैं जरूर सत्याग्रह करूंगा। लेकिन गांधीजीका यह तरीका था कि वे अेक कदम अुठाना काफी समझते थे; यानी दूसरे कदमके बारेमें हम कुछ जानते भी नहीं अैसा नहीं है। लेकिन जहां हमने दूसरे कदमकी बात सोची, वहीं हमारे मनमें अपने पहले कदमकी सफलताके बारेमें अश्रद्धा पैदा होती है। मैं जब कभी बीमारकी सेवा करूंगा तो अिस खयालसे नहीं करूंगा कि संभव है वह न सुधर सके और मर जाय, अिसलिअे अभीसे लकड़ी लाकर रख दूं। बल्कि अिस खयालसे और अिस श्रद्धासे करूंगा कि वह अुपचार और सेवासे जरूर सुधर जावेगा। और अगर मर ही गया तो शांतिसे लकड़ी अिकट्ठी करूंगा। दूसरे कदमके बारेमें हम अिसीलिअे न विचार करते हैं कि शायद लोग हमारी बात न मानें, वे हमें जमीन न दें?

वस, अैसा माननेमें ही सामनेवालेके प्रति हमारी अश्रद्धा प्रगट होती है। फिर हम श्रद्धावान नहीं कहलायेंगे, मुत्सद्दी कहलायेंगे। अगर अैसी कोअी वनी-वनाअी तैयार जुगत होती जमीन हासिल करनेकी, तो अुससे भी शायद जमीन मिल सकती। लेकिन वह कामका सही तरीका नहीं होता; अुससे काम वननेके वजाय विगड़ता। अुससे हमारे संकल्पमें हीनता आती। और अगर संकल्पमें हीनता आअी तो काम कैसे वनेगा? मैं अपने अनुभवसे कहता हूं कि जो जो संकल्प मेरे मनमें अुठे वे पूरे होकर रहे। अिसलिअे लोगोंके पास भी मैं अिसी विचारसे मांगता हूं कि जो भगवान मेरे भीतर विराजमान है वही अुनके भीतर भी है। और अुन्हें अपना विचार समझाया जा सकता है। अेक वार नहीं, दो वार नहीं, अनेक वार समझाया जा सकता है। आखिर शंकराचार्यके पास सिवा समझानेके और क्या शस्त्र था? हमारी अन्तिम श्रद्धा अगर किसी चीज पर हो सकती है, तो वह अपनी समझानेकी शक्ति पर ही हो सकती है। जैसे कृष्ण भगवानने कहा कि अपराधीको क्षमा करना चाहिये और क्षमाकी कोअी हद नहीं होती, अुसी तरह समझानेकी कोअी मर्यादा या सीमा नहीं होती। अिसलिअे जिसे आप सत्याग्रह कहते हैं, वह अुसी हद तक संभव है जिस हद तक अुसमें समझानेका स्वरूप है। दवावका स्वरूप आने पर वह सत्याग्रह नहीं रह जाता। माता जैसे वच्चेके वारेमें यह आशा किये रहती है कि वह कभी-न-कभी सुधरेगा ही, वैसे सत्याग्रहीको भी लोगोंके वारेमें यह आशा रखनी चाहिये कि अुन्हें सूझेगा और जरूर सूझेगा। अिसमें सत्याग्रहका भी स्थान है। लेकिन अगर हम सत्याग्रहको समझेंगे नहीं, तो वह सत्याग्रह नहीं रहेगा, हिंसा होगी।

आज अेक भाअीने प्रश्न अुठाया कि जिसके पास अेक हजार या दस हजार अेकड़ जमीन हो, वह अगर कम जमीन दे तो अुसे स्वीकार करना चाहिये या नहीं? अुसकी अुस भीखसे क्या होनेवाला है? हमारे आन्दोलनमें अिस सवालका जवाव प्रायः रोज दिया जाता है। मेरे भाषणमें भी और कृतिसे भी। मैं लोगोंको समझाता हूं कि न

तो मुझे गरीबोंको जलील (तुच्छ, नीचा) करना है और न श्रीमानोंको। अिसलिअे जब कोअी बड़ा आदमी कम जमीन देता है तो मैं स्वीकार नहीं करता। लेकिन मेरा अनुभव यह है कि थोड़ा समझाने पर लोग ठीक ठीक हिस्सा दे देते हैं। तीन सौ अेकड़वाले अेक भाअी मुझे आकर स्वेच्छासे अेक अेकड़ देने लगे। लेकिन जब मैंने वह अेक अेकड़ लेनेसे अिनकार कर दिया और अपना दृष्टिकोण समझाया, तो अुन भाअीने फौरन तीस अेकड़ कर दिये। अिस सबमें मुश्किलसे मेरे दो-तीन मिनट गये होंगे। मनुष्यका अैसा स्वभाव है कि अगर अेक पैसेकी मिश्रीसे भगवान राजी होते हैं, तो वह चार पैसेकी नहीं खरीदता। वह अिधर भगवानको भी राजी रखनेकी कोशिश करता है और अुधर पैसा भी बचाना चाहता है। दोनोंमें मनुष्य प्रामाणिक होता है। अगर मैं किसी मंदिर या मठके लिअे मांगता होता तो अेकाध अेकड़से भी मेरा काम चल जाता; लेकिन मैं तो गरीबोंके हकके रूपमें मांगता हूं। और अब तक अिस तरह करीब दस हजार लोगोंने दान दिया है। अुन दानोंमें कअी दान परम पवित्र हैं, जिनका स्मरण मुझे निरन्तर होनेवाला है।

अेक दूसरे भाअीने सवाल पूछा कि दान देनेवालेके लिअे तो ठीक है, अुसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है, लेकिन क्या लेनेवाला अिससे जलील नहीं होता? मेरा कहना है कि नहीं होता, क्योंकि मैं भीख नहीं मांगता। मैं तो गरीबका हक मांगता हूं। अगर मैं जमीनके बदले अुसे पका-पकाया अन्न देता, तो जरूर अुसे जलील करता। लेकिन जमीनसे वह जलील नहीं होता। पानी मांगनेसे प्यासा जलील नहीं होता, अुसी तरह जमीनका प्यासा भी जमीन मांगनेसे जलील नहीं होता। जो जमीन मांगने आता है, अुसका ही अुपकार मानना चाहिये। क्योंकि जमीन लेने भरसे तो अुसमें फसल नहीं आयेगी। फसलके लिअे अुसे अपना पसीना बहाना होगा। सालभर मेहनत और मशक्कत करने पर अुसे फसल मिलेगी। अिसलिअे अुसमें जमीन लेनेवाला दीन नहीं बनता।

दो आक्षेप और रहे हैं। कुछ भाअी कहते हैं कि मैं अिस तरह [illegible] हूं। यह आक्षेप मुझे

कबूल है। जमीनवालोंको तो मुझे संजीवन देना ही है। पर अुनकी जमींदारीको संजीवन नहीं देना है। वह तो रोग है। अुसे निकालकर रोगीको संजीवन देना है। मेरी अिस संजीवनीकी खूबी यह है कि अिससे गरीब गरीब नहीं रहता, धनवान धनी नहीं रहता।

दूसरा आक्षेप यह है कि लोगोंके दिलोंमें जमीनकी भूख पैदा करके मैं अुन्हें बागी बना रहा हूं। यह आक्षेप भी मुझे मंजूर है। दोनों आक्षेप मुझे अुस अुस अर्थमें मंजूर हैं। क्योंकि मैं अेक क्रांतिको रोकना चाहता हूं और अेकको लाना चाहता हूं। हिंसक क्रांतिको रोकना चाहता हूं और अहिंसक क्रांतिको लाना चाहता हूं।

कुछ प्रश्न कानूनी सुविधा-असुविधाके बारेमें अुठाये गये हैं। अेक भाअीने शंका अुठाअी है कि सरकार अगर कानूनी सुविधाअें न दे तो? मेरा कहना है कि सरकार जरूर हर तरहकी सुविधायें और मदद देगी। देना अुसके हकमें है। लेकिन मान लो कि वह नहीं देती है। तो क्या होगा? जिन लोगोंने दान दिया है अुन सबका अुपकार मानकर मैं चला जाअूंगा। बाबाका कुछ नहीं बिगड़नेवाला है। सरकारको ही सोचना होगा।

अेक बात और। हम लोग यहां किस बातके लिअे जमा होते हैं? जाहिर है कि अेक आदर्श समाज-रचना करनेकी दृष्टि रखकर हम अिकट्ठा होते हैं। केवल चित्तशुद्धिकी अेकान्त साधना करना हमारा अुद्देश्य नहीं हो सकता। कृपालानीजीने यह बात अच्छी तरह समझाअी है। अुन्होंने विश्लेषण करके यह बात हम लोगोंके सामने रखी। किस चीज पर कितना भार देना है, यह समझानेके लिअे विश्लेषण (अनालिसिस) का अुपयोग होता है। फिर भी विश्लेषणकी मर्यादा है। आखिर वस्तुका मूल रूप विश्लेषण नहीं, बल्कि संश्लेषण (सिन्थिसिस) से मालूम होता है। केवल विश्लेषणसे कभी-कभी वस्तुकी जान ही चली जाती है। हम तो मोदक-प्रिय हैं। हम न केवल आटा चाहते हैं, न केवल घी चाहते हैं, न केवल शक्कर चाहते हैं। हमने अिस कामको अुठाया है, क्योंकि हम समाजमें परिवर्तन चाहते हैं। हमने अिस कामको अुठाया है, क्योंकि अिससे गरीबोंको राहत मिलनेवाली है। हमने अिस कामको

और कागजकी दूसरी बाजू पर हिन्दी भाषा और नागरी लिपिमें दान-पत्र छापा जाय। प्रान्तीय भाषा और लिपिवाली बाजू पर दाता तथा गवाहोंके हस्ताक्षर लिये जायं। नागरी लिपिवाली बाजू पर सब तफसील तथा दाता, गवाह आदिके नाम और पते दानपत्र भरनेवाला या भूदान-समितिके दफ्तरवाला नागरी लिपिमें लिखे। अैसा करनेसे यह दानपत्र सब कोअी समझ सकेंगे।

३. क्या जमीन-खरीदी आदिके लिअे पैसे लिये जायं?

खुदके पास जमीन नहीं होनेसे कअी दाता पैसे देना चाहते हैं, जिनसे जमीन खरीद की जाय और भूमिहीनोंको दी जाय। विनोबाजी खुद तो पैसे लेते नहीं, पैसे देनेवाले दाताको ही कहते हैं कि वह खुद जमीन खरीदकर दे। यही परंपरा भूदान-यज्ञ-समितियोंको भी चलानी है। यानी वे भी किसीसे पैसे स्वीकार नहीं करेंगी। पैसे देनेवालोंसे कहेंगी कि वे खुद ही जमीन खरीदकर दें। यही न्याय बैलजोड़ी, कुआं आदिको भी लागू है, यानी अिन चीजोंके लिअे भी समितियां पैसे नहीं लेंगी। दातासे वे चीजें ही लेंगी। कुअेंका दान लेनेमें सावधानीकी जरूरत है। क्योंकि कअी जगह कितने खर्चमें कुआं तैयार होगा यह कहना कठिन है। अिसलिअे जो दाता अैसी शक्ति रखता है कि चाहे जितना खर्च हो वह कुआं पूरा कर सकता है, अुसीसे कुअेंका दान लेना अुचित होगा।

४. भूमि-वितरण

(अ) दानपत्र पर विनोबाजीकी सही होनेके बाद ही भूमिका वितरण किया जाय।

(आ) बारिशके दिनोंमें भी वितरण हो सकता है, लेकिन वितरित की हुअी जमीन फसलके बाद ही नये भूमिवानको मिलेगी।

(अि) वितरणके लिअे स्थानिक समितियां बनानेका आरम्भमें न सोचा जाय। स्थानीय लोगोंकी मदद ली जा सकती है। अुनसे प्रारंभिक काम करवाया जा सकता है। लेकिन आखिरी वितरण तो वितरण-समितिके सदस्योंको ही करना है। भूदान-यज्ञके काममें वितरण

वहुत महत्त्व रखता है। यदि वह ठीक नहीं हुआ, अुचित व्यक्तियोंको भूमि नहीं दी गअी, तो हमारा अुद्देश्य ही मारा जाता है और नअी भूमि प्राप्त होनेमें दिक्कत भी आयेगी। यदि वितरण ठीक ढंगसे होता है, तो वितरणके समय भी नअी जमीन प्राप्त हो सकती है।

(अी) वितरणके वारेमें जल्दी न की जाय। प्राप्तिके वाद तुरन्त ही हरअेक जमीन वितरित हो, यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। प्राप्ति और वितरणके वीचमें कुछ महीनोंका काल जाय तो अधिक नहीं मानना चाहिये।

(अु) विलकुल वेजमीनोंको जमीन देनेका अिरादा है। जिनके पास थोड़ी-सी भी जमीन है अुनको आज जमीन देनेका विचार नहीं है। वेजमीनोंको देनेके वाद वचने पर कम जमीनवालोंको देनेमें हर्ज नहीं हो सकता।

५. भूमिप्राप्ति

(अ) भूमि प्राप्त करनेके लिअे प्रांतीय समिति आवश्यकतानुसार जिला-समिति आदि वना सकती है, व्यक्तियोंको भी अधिकार दे सकती है। भूदान-यज्ञ-आन्दोलनका अुच्च स्तर कायम रहे और आन्दोलनमें सुसूत्रता रहे, अिसके लिअे यह जरूरी है कि भूदान-यज्ञका काम करनेके अिच्छुक प्रान्तीय समितिके पास अपने नाम भेजें और प्रान्तीय समितिकी संमति मिलनेके वाद ही सार्वजनिक रूपसे अिस कामको हाथमें लें। प्रान्तीय समिति भी अैसे कार्यकर्ताओंके नाम समय-समय पर जाहिर करती रहे।

अपने परिचित मित्रों आदिसे मिलकर भूदानके वारेमें समझाना आदि तो निजी तौर पर हर कोअी व्यक्ति कर सकता है।

(आ) प्राप्तिके समय ही दाताको समझा दिया जाय कि जव तक अुस जमीनका वितरण नहीं होता है, तव तक अुस जमीनकी देखभाल अुसीको करना है। वारिशके पहले वितरण नहीं हुआ, तो फसल भी अुसीको वोना है। फसलकी अुपजमें से खर्च वगैरा वाद करके जो वचे, वह प्रांतीय भूदान-समितिको वह दे अैसी अपेक्षा है।

हरिजनसेवक, २६–७–'५२

९

तपस्याकी आवश्यकता

[अुत्तर-प्रदेशके कार्यकर्ता-सम्मेलन, काशीमें, ता० ११–९–'५२ को दिये हुअे भाषणसे।]

अितना कठिन काम करनेकी जिम्मेदारी जिन पर परमेश्वरने रखी है, अुन्हें अिसके लायक बनना चाहिये। दान और यज्ञकी बात हम लोगोंके सामने रखते हैं और वे अिसका जवाब भी देते हैं। मैं यह नहीं मानता कि साढ़े तीन लाख अेकड़ जमीन जो प्रेमशक्तिसे मिली है, कोअी छोटी बात है। परन्तु जो बात सिद्ध करनी है, अुसके लिहाजसे यह अंशमात्र है। अिसलिअे हम लोगोंको, और विशेषतः मुझे, अधिक सामर्थ्यकी मांग करनी चाहिये। पर मांग वही कर सकेगा, जो अपनी तपस्या नम्रतापूर्वक बढ़ायेगा।

आश्रमका आश्रय-त्याग

अृषियोंने और भगवद्गीताने यज्ञ, दान और तप ये तीन बातें रखीं। मैं सोचता था कि अिनमें से यज्ञ और दान शब्द तो मैंने चलाये, पर तप शब्द पर जोर दिये बगैर यज्ञ और दान सिद्ध नहीं होंगे। ये तीनों मिलकर ही पूर्ण वस्तु होगी। तप हमें कार्यकर्ताओंको करना चाहिये। यज्ञ, दान जनतासे अपेक्षित हैं, लेकिन तपस्या तो हमारी बढ़नी चाहिये। मैं सोच रहा था कि हमें क्या करना चाहिये। अिस विचारको मैंने बहुत दोहराया। अुसके कारण जो प्रेरणा हुअी अुसे आपके सामने शब्दोंमें व्यक्त करना मेरा धर्म है, और वह अच्छा भी है। मैंने कअी दफा हनुमानके शब्दोंमें कहा था:

"राम-काज साधे बिना मोहि कहां विश्राम?"

जब तक रामका काज सिद्ध नहीं होता तब तक मुझे विश्राम कहां? अुस दिशामें मैं सोचता रहा और अिस निर्णय पर आया कि मुझे कुछ त्याग करना चाहिये। त्याग क्या करूं? तो सोचकर निर्णय

किया कि जब तक यह मसला हल नहीं होता, तब तक मैं आश्रमका आश्रय छोड़ दूं। यह विचार गत पांच-सात दिनोंसे तीव्रतासे मेरे मनमें चल रहा था। आखिर मैंने जो आश्रम बनाया, और जहां मैं निरन्तर सेवाकार्य करता रहा, मैंने देशसेवाके प्रयोग किये, आज भी जहां कांचन-मुक्तिका महान प्रयोग चल रहा है, वह भूमि त्याग और तपस्याकी है। लेकिन फिर भी आश्रम हमारे लिअे अेक प्रकारका आश्रय भी होता है। अिसलिअे मैंने सोचा कि जब तक भूदान-यज्ञका कार्य सिद्ध नहीं होता, तब तक आश्रमको आसक्तिरूप समझकर छोड़ देना चाहिये। मैंने यह निर्णय कर लिया और आप सबकी साक्षीमें भगवानके नाम पर मैं अुसे प्रकट कर रहा हूं।

हमारी कसौटी

आप जानते हैं कि मैंने अपनी जवानीके ३० साल शान्त अुपासना, ध्यानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग और रचनात्मक काममें बिताये हैं। मैं कोअी प्रचारक नहीं हूं। जो प्रचारक स्वभावका होता है, वह अपनी जवानी अिस प्रकार नहीं बिताता और बुढ़ापेमें अिस प्रकार घूमनेके लिअे नहीं निकल पड़ता। मैं तो रचनात्मक काममें विश्वास रखनेवाला अेक नम्र साधक, सेवक और शोधक हूं। मुझे रचनात्मक काममें ही संतोष और समाधान मिलता है। अपने गांवकी समस्याओंका निरीक्षण करते हुअे मैं अिस नतीजे पर पहुंचा कि हमारा बुनियादी सवाल भूमिका सवाल है। अहिंसात्मक तरीकेसे अिसे हल करनेकी युक्ति खोजनी चाहिये। और यह मसला हल नहीं कर सकें, तो अहिंसाका दावा हमें छोड़ देना चाहिये। और जहां अहिंसाका दावा गया वहां रचनात्मक काम भी गया। हां, यंत्रीकरण द्वारा आप रचना कर सकते हैं। लेकिन वह तो नाममात्रकी रचना होगी। वह देशको फौजी बना देगी। मुझे अुसमें श्रद्धा नहीं है। अगर भारतीय संस्कृति, अहिंसा, सर्वोदय आदि पर हमें श्रद्धा हो, तो भूदान-यज्ञका काम अुठाना होगा। तभी रचनात्मक काम बढ़ सकते हैं, नहीं तो सारे काम निस्तेज हो जायंगे। जब मेरी यह परिपूर्ण निष्ठा हो गअी, तब मैंने निश्चय किया

कि मैं आश्रममें नहीं रहूंगा। मैं चाहता हूं कि अपनेको गांधीजीके शिष्य माननेवाले सव लोग अिस पर सोचें कि मैंने जो विचार किया वह सही है या गलत। अगर गलत हो तो मुझे समझावें। जैसा कि मैंने कहा, मैं तो रचनात्मक काम ही करना चाहता हूं, और वही मैंने तीस साल तक किया भी। अिसलिअे मेरे अिस निर्णयसे रचनात्मक कामको कोअी हानि पहुंचना संभव नहीं है। यदि वे मेरे कामको ठीक समझें, तो मुझे अिसमें पूरा सहयोग दें। वापूके सत्याग्रहमें जिस प्रकार लोग अपने-अपने रचनात्मक काम छोड़कर कूद पड़ते थे, जिस प्रकार युद्धके समय कोअी सिपाही अुत्सुक हो अुठता है, अुसी प्रकार आप अिस आन्दोलनमें सहयोग दें अैसी मेरी मांग है। औरोंसे भी मैं यही मांगता हूं कि जितनी मदद वे दे सकें अिस कामके लिअे दें।

हरिजनसेवक, ८–११–'५२

१०

निरर्थक आक्षेप

कलके दैनिक समाचारपत्रमें* अेक खवर पढ़ी। हमारी तरफके शेतकरी कामकरी पक्षने (शेतकरी = किसान, कामकरी = श्रमिक) भूदान-यज्ञके आन्दोलनके लिअे अपना विरोध घोषित किया है और अिस आन्दोलनकी ओरसे सावधान रहनेके लिअे जनताको सूचना दी है। अिस प्रस्तावका क्या अर्थ किया जाय?

क्या अिसका यह मतलव है कि जो लोग आज भूमि दे रहे हैं वे न दें? आज तक लोग भले-वुरे अुपायोंसे संचय करनेमें जुटे रहे हैं। अिसके वदले अगर लोगोंका रुख संविभागकी तरफ मुड़े, तो अुसमें किसका क्या नुकसान होगा? यह कहा जा सकता है कि कोअी अहंकारसे दान न दे। सो तो मैं कह ही रहा हूं।

* टाअिम्स ऑफ अिंडिया, २९–१०–'५२

क्या अिस प्रस्तावका यह अर्थ है कि जब जमीनें भूमिहीनोंको दी जायंगी तब वे अुन्हें न लें ? अिससे भूमिहीनोंका क्या लाभ होगा ? यह कहा जा सकता है कि वे दीन बनकर न लें। वह तो मैं कह ही रहा हूं। अिस आन्दोलनके पहले दिनसे आज तक मैं बराबर कहता आया हूं कि हम भूमिहीनों पर कोअी अुपकार नहीं करते, अुनका अधिकार अुन्हें दिलाते हैं।

क्या (अिस प्रस्तावका) यह आशय है कि दो-दो सौ अेकड़के मालिक यदि अेकाध दो अेकड़ दे दें, तो अैसा दान नहीं लेना चाहिये ? अगर यह मतलब हो तो वह मुझे मंजूर ही है, और मैं यही करता भी आया हूं। अिधर-अिधर तो मैं छठा हिस्सा मांगने लगा हूं। दस हजारके मालिकने सौ अेकड़ देनेका कहा, तो मैंने लेनेसे साफ अिनकार कर दिया। अिस तरहके कअी अुदाहरण हैं। छठा हिस्सा भी मैंने साधारण लोगोंसे लिया है। बड़े आदमी अगर छठा हिस्सा दें तो वह केवल पहली किस्त होगी, अैसा भी मैंने घोषित किया है।

क्या (अिस प्रस्तावका) यह अभिप्राय है कि हमारा यह आन्दोलन सरकार द्वारा जमीनके विषयमें अधिक पुरोगामी कानून बनाये जानेके काममें बाधा पहुंचाता है ? मैंने तो किसीके भी हाथ नहीं रोके हैं; बल्कि भूदान-आन्दोलनके कारण जो भावना सब तरफ फैल रही है, अुसके परिणाम-स्वरूप पुरोगामी कानूनको गति ही मिलनेवाली है।

क्या यह डर है कि भूदान-आन्दोलनसे अन्यायके प्रति विरोधकी धार कम पैनी हो जाती है ? मैं तो अुलटा समझता हूं। मुझसे यह पूछा जाता है कि गरीब लोगोंसे भी मैं भूदान क्यों ले लेता हूं। अिसके मैंने अनेक कारण बतलाये हैं। अुनमें अेक कारण यह भी बतलाया है कि मुझे मेरी सेना बनानी है। खुद गरीब होकर भी जो लोग अिस यज्ञमें भाग लेते हैं, वे हमारी अहिंसक सेनाके सैनिक बन रहे हैं। जहां कअी वर्षोंसे जमीन जोतनेवाले किसानोंको जमींदार बेदखल कर रहे हैं, वहां अहिंसासे विरोध करनेका आदेश मैंने अपने भाषणमें किसानोंको दिया है। अुत्तर-प्रदेशमें अुसका अिष्ट परिणाम भी निकला है। किसानोंमें हिम्मत आअी है। सरकारने भी किसानोंको संरक्षण

देनेकी हिदायतें अपने कर्मचारियोंको दी हैं। विहारमें तो मेरा प्रवेश हालमें ही हुआ है। यहां भी मैं वही कह रहा हूं और अैसा मानता हूं कि अिसका अिष्ट परिणाम होगा।

सारांश, शेतकरी कामकरी पक्षका प्रस्ताव निरर्थक ही मालूम होता है। मैं जानता हूं कि अुस पक्षमें अनेक आस्थावान लोग हैं। अुन लोगोंको मैं यह सुझाना चाहता हूं कि अगर वे भूमिहीनोंका अुत्थान चाहते हों; तो सारी शंकायें छोड़कर भूदान-यज्ञको सफल बनानेके काममें हाथ बटावें। और यदि फिर भी कुछ शंकायें बाकी रह जायं, तो मुझसे मिलकर चर्चा करके अपनी शंकाओंका निवारण करा लें अथवा अपना कहना मुझे समझा दें। मैं अुनका मित्र हूं। किसी भी विचारको समझनेके लिअे और समझानेके लिअे मैं आजाद हूं।

हरिजनसेवक, २२–११–'५२

११

'संपति सब रघुपतिकै आही'

२८ अप्रैल, १९५१ के रोज भूदान-यज्ञकी कल्पना मुझे सूझी। अब तो देशभरमें लोगोंको यह कल्पना रुच गअी है अैसा मान सकते हैं। भूमिदान-यज्ञके साथ-साथ संपत्ति-दान-यज्ञ भी क्यों न चलाया जाय, अिसका मेरे मनमें विचार तो चलता ही था। लेकिन भूमिका सवाल अेक बुनियादी सवाल था, जिसके हलके बिना देशमें मैं खतरा देख रहा था। अिसलिअे आरम्भमें अितना ही सवाल हाथमें लेना अुचित लगा। अलावा अिसके, भूमि परमेश्वरकी सीधी देन है, अिस बातको सब कोअी सहज ही समझ सकते थे। और वह अुत्पादनका मूलभूत साधन है। अिसलिअे भी आरम्भमें भूमि तक ही सीमित रहना अच्छा लगा। यथा-क्रम अेक-अेक कदम अुठाना अहिंसाकी प्रणालीके अधिक अनुरूप है।

लेकिन भूमिदान-यज्ञका कार्य जैसे जैसे आगे बढ़ा, वैसे वैसे संपत्तिका हिस्सा मांगे बगैर विचारकी पूर्ति नहीं होती है यह बात स्पष्ट होती गअी। और आखिर मेरे मनका निश्चय हो गया कि

संपत्तिका भी अेक हिस्सा मैं लोगोंसे मांगूं। मैं चाहता तो हूं कमसे कम छठा हिस्सा, फिर लोग सोचकर जो भी दें। संपत्ति चाहे हमने अपने पुरुषार्थसे कमाअी हो, वह अपने लिअे नहीं है वल्कि सबके अुपयोगके लिअे परमेश्वरने हमें सौंपी है, यह भावना अिस मांगके पीछे है। जिस पुरुषार्थ-शक्तिसे हमने संपत्ति कमाअी, वह शक्ति भी परमेश्वरकी ही देन है।

मेरी पदयात्राके दौरानमें मैं वार-वार कह चुका हूं कि मैं पैसा लेना नहीं चाहता, लेकिन अव तो मैं संपत्तिका हिस्सा मांग रहा हूं। अिसका मेल कैसे वैठेगा? अुसका अुत्तर यह है कि न मैं संपत्ति अपने हाथमें लेनेवाला हूं, न अुसकी संभालकी, खर्चकी और हिसावकी ही कोअी चिन्ता अुठाना चाहता हूं। व्रल्कि मैं तो मुक्त ही रहना चाहता हूं। लोकोपकारके कामके लिअे वहुतसी निधियां अिकट्ठी की जाती हैं, जिनका कारवार समितियां देखा करती हैं। अैसा भी करनेका मेरा विचार नहीं है। समय-समय पर भिन्न-भिन्न कामोंके लिअे अिकट्ठी की जानेवाली अुपयोगी निधियोंमें और अिस संपत्ति-दान-यज्ञमें और भी अेक महत्त्वका भेद है। वह यह कि संपत्तिका हिस्सा अिस यज्ञमें हर साल देना होगा। अिसलिअे मैंने यह सोचा है कि दाताके पास ही वह संपत्ति रहेगी, अुसका विनियोग हमारे निर्देशके अनुसार वही करेगा और अुसका हिसाव हर साल हमारे पास भेजेगा। अर्थ अिसका यह हुआ कि देनेवाला न सिर्फ संपत्तिका हिस्सा देगा, वल्कि अपनी वुद्धिका अुपयोग भी अिसमें करेगा। हमारे निर्देशके अनुसार विनियोग करनेकी वात मैंने कही है, लेकिन अुसमें वह अपना भी सुझाव पेश कर सकेगा।

जाहिर है कि मैं अिसमें दाता पर सारी जिम्मेदारी रख रहा हूं, और विश्वाससे काम ले रहा हूं। तार्किकोंका अिस पर आक्षेप आ सकता है। लेकिन धर्मवुद्धिका आधार विश्वास पर ही होता है। विश्वाससे जो संरक्षण मिल सकता है, वह किसी कानूनी कार्रवाअीसे नहीं मिल सकता। अुस दृष्टिसे संपत्ति-दान-यज्ञकी यह रीति मैंने निश्चित की है।

अिस यज्ञमें हिस्सा लेनेवाले अपने परिवारके साथ मशविरा करके सबके संतोषसे और पूरे प्रेमसे अिसमें हिस्सा लें। मैं मानता हूं कि अगर भक्तजन अिस काममें योग देंगे, तो अेक जीवन-विचारके तौर पर यह कल्पना देशमें फैलेगी और साम्ययोगकी सहज गति होगी। सब सज्जनों और सुहृदय-जनोंके सामने चिन्तनके लिअे मैं यह विचार पेश कर रहा हूं।

हरिजनसेवक, २९–११–'५२

१२

अपरिग्रह-परायण समाजका आदर्श

[टिकारी, बिहारकी प्रार्थना-सभामें दिया हुआ भाषण।]

मैं जो काम कर रहा हूं, अुसके पीछे अेक तत्त्वज्ञान है। कोअी भी विचार जब तक गहराअीमें जाकर जड़को नहीं पकड़ता है तब तक वह टिक नहीं सकता। मैं जो कदम अुठाता हूं अुसकी गहराअीमें जाकर मूल पकड़े बगैर नहीं रहता। समाजमें जो परिवर्तन लाना है, अुसके मूलके शोधनके लिअे मैं निरन्तर चिन्तन करता रहा और अब मैं निश्चिन्त होकर घूमता हूं। कोअी भी समस्या मुझे डराती नहीं, क्योंकि मेरा विश्वास है कि हरअेक मानवी समस्या मानवी बुद्धिसे हल होनी ही चाहिये।

मैं जिस विचारको चलाना चाहता हूं, अुसके विरुद्ध जो विचार समाजमें आज चल रहा है अुसको अपहरण कहते हैं। अपहरणके विचारमें विश्वास करनेवाले मानते हैं कि आखिर व्यक्ति समाजके लिअे होता है, और समाजके लिअे व्यक्तिकी संपत्तिका अपहरण करनेमें कोअी दोष नहीं; बल्कि व्यक्तिकी संपत्तिके अपहरणको रोकनेवाला विचार ही गलत है। आज अुस विचारकी ओर दुनियाके कअी देश आकर्षित हुअे हैं। अुसके विरुद्ध मैं अपरिग्रहका विचार रखता हूं। अकसर अैसा माना जाता है कि अपरिग्रह तो गांधीजी, विनोबा

या अैसे संन्यासियोंके लिअे ही है और सामान्य जनताके लिअे तो परिग्रह ही है। अिसलिअे लोग संन्यासियोंका आदर तो करते हैं, परन्तु कहीं-कहीं तो अुन्हें अपने घरमें भी प्रवेश नही करने देते। संन्यासको अन्तिम आदर्शके तौर पर मानते तो हैं, लेकिन गृहस्थ जीवनमें परिग्रह ही चलता है। धर्मविचारको अिस तरह खंडित करनेसे अुसका सीमित लाभ ही हो सकता था। नतीजा यह हुआ कि लोभीका मुकाबला करते समय निर्लोभी भी लोभी वन गया। क्षत्रियत्वको मिटानेके लिअे खुद क्षत्रिय वनकर अपने काममें असफल होनेवाले परशुरामका अुदाहरण तो हमारे सामने है ही। जिसका मुकावला करना है अुसीका शास्त्र हम स्वीकार कर लें, तो हम अुसके स्थूल रूपको चाहे मार सकें, पर सूक्ष्म रूपमें अुसे अमर कर देते हैं। आज दुनियामें लोभका, परिग्रहका राज्य है। परिग्रहके अिर्दगिर्द अैसे कानून खड़े किये गये हैं कि परिग्रह गलत नहीं माना जाता है। चोरीको हम गुनाह मानते हैं। पर जो संग्रह करके चोरको प्रेरणा देता है, अुसकी कृतिको चोरी नहीं मानते। अुपनिपदोंकी कहानीमें राजा कहता है कि "मेरे राज्यमें न तो कोअी चोर है, न कंजूस।" क्योंकि कंजूस ही चोरोंको पैदा करते हैं। चोरोंको तो हम जेल भेजते हैं और अुनके पिताको मुक्त रखते हैं। वे शिष्ट-प्रतिष्ठित वनकर गद्दी पर वैठते हैं। यह कैसा न्याय है? गीताने भी अुन्हें ही चोर कहा है। लेकिन हमने तो आज गीताको संन्यासियोंकी किताव कहकर अुसमें भी संन्यास ले लिया है।

जिस तरह हम यज्ञमें आहुति देते समय कहते हैं कि "अिन्द्राय अिदं, न मम" — यह मेरा नहीं है, अिन्द्रके लिअे है; अुसी तरह आज हम जो कुछ अुत्पादन करते हैं, चाहे वह खेतीमें हो, चाहे फेक्टरीमें, अुसके वारेमें हमें कहना चाहिये कि "समाजाय अिदं, राष्ट्राय अिदं, न मम" — यह सव मेरे लिअे नहीं है, समाजके लिअे है, राष्ट्रके लिअे है। अपने पास जो भी कुछ है वह सव समाजको अर्पण करना चाहिये। फिर समाजकी ओरसे अपनी आवश्यकताके अनुसार जो कुछ मिलेगा वह अमृत होगा।

लेकिन आजकल तो सर्विसेज़की बात चली है। सिविल सर्विस, अेज्युकेशनल सर्विस, मेडिकल सर्विस, यहां तक कि भोजन, मोटर और चर्चकी भी सर्विस होती है। सिविल सर्विसके जो नौकर हैं, अुन्हें हजार रुपया तनख्वाह मिलती है और अुनके जो स्वामी हैं — गरीव जनता — अुनको आठ आना रोजी मिलती है। जो लाखों कमाते हैं वे सेवक होनेका दावा करते हैं और जो सारे समाजके लिअे अन्न पैदा करते हैं वे सोचते हैं कि हम तो अपने पेटके लिअे काम कर रहे हैं। अिस तरहकी सर्विसेजको क्या कहा जाय? हमारी भाषामें अुनके लिअे दम्भ, ढोंग यही शब्द है। अिस दम्भको खतम करनेके लिअे ही मैंने यह विचार सामने रखा कि भूमि पर सबका समान अधिकार है। हमारे पास अपनी संतति, संपत्ति, भूमि और बुद्धि जो कुछ भी है वह सब समाजके लिअे है। जैसा अपरिग्रह हम चाहते हैं अुसमें वैभव तो बढ़ेगा, पर समाजका। समाज नारायण-स्वरूप है, अिसलिअे लक्ष्मी तो अुसके पास खड़ी रहेगी। वह वैरागी शंकर है, पर कुबेर अुसके हाथमें रहेगा। अपरिग्रहके आधार पर हमें अेक भव्य और सुन्दर समाज-रचना निर्माण करनी है। और अिसकी बुनियादके रूपमें मैंने भूमिका मसला अुठाया है।

आज जो धन कमाता है वह अुसके साथ रोग और चिन्ता भी कमाता है। धन कमाकर पुत्र, मित्र और पड़ोसीके प्रेमको खोता है। अिसीसे वह दुःखी भी है। आज समाजमें श्रीमान और गरीब दोनों दुःखी हैं। अिसलिअे यह समाज-रचना बदलनी ही होगी।

मेरे कामके बारेमें अेक गलतफहमी मत करना। यह अेक धर्म-विचार है। मनुष्यको आसक्तिसे छुड़ाकर अपरिग्रही बनाना मेरा अुद्देश्य है। अिसीलिअे जो बड़े-बड़े परिग्रही होते हैं अुन्हींके पास दान मांगनेके लिअे पहुंचना है अैसी बात नहीं है। आसक्ति तो अेक लंगोटीमें भी रह सकती है। अिसलिअे हरअेक व्यक्तिके पास पहुंचकर विचार समझाना है और दानपत्र हासिल करना है। ये दानपत्र मेरे विचारकी मान्यताकी 'रिसीट्स' हैं।

जब हम समाजको सब कुछ अर्पण करनेके लिअे राजी हो जायंगे, तब हम अैसी सरकार बनायेंगे जिसको पैसेके लिअे अमेरिकाकी मदद या नासिकके छापखानेका सहारा नहीं लेना पड़ेगा। हिन्दुस्तानका हरअेक घर अुसकी बैंक होगा। वह जो भी मांगेगी, लोग फौरन अुसकी मांगको पूरा कर देंगे। लोग समाज पर सब चिन्तायें छोड़कर खुद चिन्तामुक्त बनेंगे। लेकिन आज समाज और व्यक्ति दोनों अुसके लिअे तैयार नहीं हैं। अिसलिअे हम आज सिर्फ छठे हिस्सेकी मांग कर रहे हैं। मैंने डेढ़ साल पहले ही कहा था कि मैं वामन बनकर आया हूं। मेरा पहला कदम भूमिदान था, दूसरा कदम यह संपत्ति-दान है और अब तीसरे पवित्र कदमके सामने सिर झुकानेके लिअे आपको तैयार होना होगा। वह तीसरा कदम क्या होगा? अुस तीसरे कदमसे गरीबोंकी सेवाके लिअे आप सबको गरीब बन जाना होगा। तब सारी दुनिया हिन्दुस्तानका अनुकरण करेगी।

हरिजनसेवक, २९-११-५२

१२

संपत्ति-दान

[ता० ३०-१२-'५२ को चांडिलकी प्रार्थना-सभामें दिया हुआ प्रवचन।]

आज तामिलनाडसे अेक पत्र आया है। वहांके दो भाअियोंने संपत्ति-दान दिया है। हरअेकने अपना छठा हिस्सा दिया है। अभीसे यह कल्पना लोगोंको अितनी आकर्षक लग रही है; मैं आहिस्ता-आहिस्ता गहराअीमें जाकर अिसका प्रचार करना चाहता हूं। जो देगा वह जिन्दगी भरके लिअे देगा। बहुतोंको यह विचार ही कठिन मालूम होता है कि जिन्दगी भर छठा या आठवां हिस्सा दान दें। लेकिन वे यह नहीं सोचते कि अेक दफा शादी कर लेते हैं, तो वे जिन्दगी भरके लिअे अपनेको बांध लेते हैं। हिन्दू धर्मने तो संन्यासकी

छूट रखी है। फिर भी जो मनुष्य आमरण बन्धनमें रहते हैं वे अिसमें क्यों हिचकिचायें? अिसमें तो त्याग ही त्याग है। भोग पानेको है ही नहीं। अिसलिअे शुद्ध विचार करनेवाले अिस चीजको जीवनका अंग समझ लें। जिस तरह हम जिन्दगी भर स्वच्छ हवा और स्वच्छ आहार लेते हैं, अुसी तरह जीवन भर अपनी संपत्तिका अेक हिस्सा लोगोंको देना है। दरअसल सारा ही देनेकी बात होनी चाहिये, पर ट्रस्टीके नाते कुछ अपने पास रख लें, बाकी सारा दे दें।

संपत्ति-दानमें मिली हुअी संपत्ति मैं लेता नहीं हूं। वह तो अुस मनुष्यके पास ही रहेगी। संपत्ति अपने हाथमें न लेनेसे हम अनेक झंझटोंसे बच जाते हैं। हमने छोटे-छोटे फंड कअी दफा अिकट्ठा किये। गांधी-निधिका बड़ा फंड भी किया। पर पैसेका क्या किया जाय, यह सूझता नहीं और पैसा वैसा ही पड़ा है। संपत्ति-दानमें वैसी कोअी बात नहीं है। जो संपत्ति मिलेगी अुसका अुसी साल अुपयोग होगा। गरीबोंको आजीविकाके साधन प्राप्त करा देना और त्यागी कार्यकर्ताओंको जीवन-निर्वाहके लिअे मदद देना, ये दो बातें अभी मैंने बताअी हैं। परन्तु जैसे जैसे काम बढ़ेगा वैसे वैसे और बातें भी बताअूंगा। जितनी संपत्ति मिलेगी अुसका अुपयोग आज ही हो जायगा अितना व्यापक क्षेत्र पड़ा है।

हम लाखोंको जमीन देनेवाले हैं, फिर अुन्हें दूसरी मदद भी देनी होगी। अितना ही नहीं, मैं तो कार्यकर्ताओंकी सेना खड़ी करना चाहता हूं। यदि आजकी दरिद्र और दयनीय दशा अैसी ही रही, तो हिन्दुस्तान आगे नहीं बढ़ेगा। पांच-पचास गांवोंमें अेक कार्यकर्ता घूमता रहे और अेकाध स्थायी रहे, अिस तरह पचास गांवोंके लिअे दो कार्यकर्ता मानें, तो भी बिहारमें तीन हजार कार्यकर्ता चाहिये। अिसी हिसाबसे हिन्दुस्तानमें भी चाहिये। लेकिन आज कितने हैं? कार्यकर्ताओंके पोषणकी चिन्ता मुझे सपनेमें भी नहीं सताती, बशर्ते वे सच्चे कार्यकर्ता हों। छह जनोंने छठा हिस्सा दिया, तो अेकका पोषण हो जायगा। छह कुटुम्ब अेक कुटुम्बका पोषण करेंगे तो, अिस तरह हजारोंको खिला सकते हैं।

गांधी-विचार-प्रेमियोंसे

तारीख १२ फरवरीका दिन निकट आ गया है। सूत्रांजलि समर्पणका वह महान पर्व-दिन है। अिस समर्पणकी शक्तिका अभी लोगोंको अुतना भान नहीं है। रामचरित्रमें हनुमानका जो कार्य था, वही सर्वोदय समाजकी स्थापनामें सूत्रांजलिका हो सकता है। मेरे मनश्चक्षुके सामने अुसका अेक बहुत ही रमणीय चित्र खड़ा होता है। हरअेक मेलेके स्थानमें मैं अेक सूत्रकूट पर्वत देख रहा हूं। लोक-मानस तो तैयार है, लेकिन कार्यकर्ताओंकी कमी है। जो हैं अुनमें कल्पना-शक्तिकी कमी है। जिनमें कल्पना-शक्ति है वे योजना नहीं कर सकते। अैसी हमारी पंगुओंकी जमात है। फिर भी अगर अीश्वर चाहेगा तो "पंगुं लंघयते गिरिम्" का अनुभव आ सकता है।

गये साल हमारे लोगोंके, सर्वोदय समाजवालोंके भी दिमाग और दिल दोनों चुनावमें अितने खिंच गये थे कि सूत्रांजलिके कार्यकी बहुत कुछ अुपेक्षा ही हुअी। मेरी भूदानकी यात्रा अुन दिनों प्रतिदिन नियमित गंगा-यमुनाके प्रदेशमें चल रही थी। चुनावके दंगलमें बहुत सारे साथी, जो भूदान-यज्ञमें मदद करेंगे अैसी अपेक्षा थी, मुझे वैसे ही छोड़ गये, जैसे किसी श्रीमानके दुर्भाग्यवश दरिद्र हो जाने पर अुसके सारे रिश्तेदार अुसे छोड़ देते हैं। लेकिन मेरा तो काम चला। आम लोगोंने पूरी दिलचस्पी ली। भूदान भी अपेक्षानुरूप मिल ही गया। पर मित्रोंने तो मुझे सुझाव देनेका साहस किया था कि चुनाव-पर्व पर अगर मैं अेकाध महीना रुक जाअूं तो बेहतर होगा। अुन दिनों कार्यकर्ताओंके दिल कितने अुचट गये थे, अिसका यह मेरा साक्षात् अनुभव है।

खैर, जो हुआ सो हो गया। अब अिस साल अगर सर्वोदय-प्रेमी अिस काममें जुट गये तो नवभारतका भव्य दर्शन देखनेको मिल सकता है। चरखा-संघकी लाखों कत्तिनें, अगर अुन्हें प्रेमसे समझाया जाय, गांधीबाबाकी स्मृतिमें अेक-अेक गुंडी खुशीसे दे सकती हैं। नयी तालीमके और दूसरे विद्यालयोंके भी विद्यार्थी और शिक्षक अिसमें योग दे सकते

हैं। गांधीजीकी संतानरूप पचासों संस्थायें, जो हिन्दुस्तानमें जगह-जगह खड़ी हैं, अिस कामको बढ़ावा दे सकती हैं। कांग्रेसवाले, प्रजा-समाजवादी, जिनके सिर पर गांधीजीका वरद-हस्त था और जो गांधीबाबाका हर मौके पर नाम लिया करते हैं, अेक-अेक गुंडी सहज दे सकते हैं। अगर हम सब दूर पहुंच सकें और सौ मनुष्योंके पीछे अेक-अेक गुंडी प्राप्त कर सकें, तो छत्तीस लाख गुंडियां जमा हो सकती हैं और सूत्रकूट पर्वत खड़ा हो सकता है।

लेकिन गये साल ढाओी लाख गुंडियोंका संकल्प था और गुंडियां अेक लाख अेकत्र हुओीं। वह देखते हुअे अभी छत्तीस लाखकी बात कौन करेगा? अिसलिअे मैं अितना ही कहता हूं कि अधिकसे अधिक जितना हो सकता है सब मिलकर करें। अिस बार गुजरातके जवानोंने पचास हजार गुंडीका संकल्प किया है। मैं तो चाहता था कि प्रतिशत अेक गुंडीके हिसाबसे गुजरातवाले सवा लाख गुंडी अेकत्र कर देते। पर संकल्प करनेका अुनका यह पहला ही मौका था। अिस वास्ते कुछ हलका-सा संकल्प कर लिया, तो भी अुसमें मैंने समाधान मान लिया। गांधीजी वैसे हिन्दुस्तानके ही नहीं बल्कि सारी दुनियाके थे। फिर भी वे गुजराती थे। अुन्होंने अपना बहुतसा लेखन गुजरातीमें किया है। गुजरातके मार्फत हिन्दुस्तानकी सेवा करनेके खयालसे दूसरे-तीसरे अनेक स्थानोंसे मांग होते हुअे भी अुन्होंने गुजरातके 'पाटनगर' में आश्रम खोला था। यह सब हम भूल नहीं सकते। अिसलिअे मैं तो आशा करता हूं कि गुजरात अिस साल नहीं तो अगले साल सारे हिन्दुस्तानमें अग्रसर होगा और सबको राह दिखायेगा। और फिर दूसरे प्रान्त भी पीछे क्यों रहेंगे?

कांग्रेसमें 'बोगस' मेम्बरोंकी बात चलती है। और शुद्धि कैसे की जाय यह अेक समस्या हो गओी है। अगर चवन्नीकी जगह अुत्पादक श्रमको स्थान देते, तो बहुत भय टलता और लाभ होता। गांधीजीने पहले वैसी कोशिश की भी थी। लेकिन अुनके जीते-जी वह सफल नहीं हुओी। वैसे श्रम-प्रतिष्ठा पर व्याख्यान तो अिधर-अुधर बहुत दिये जाते हैं, परन्तु अुपनिषद्की भाषामें "वाचारंभणं श्रमो नामधेयं चवन्नी

अित्येव सत्यम्।" अिसका हिन्दी अनुवाद मैं नहीं देना चाहता हूं, लेकिन सर्वोदयवाले और दूसरे भी गांधी-विचार-प्रेमी गुंडी-समर्पणकी कल्पना यशस्वी कर सके, तो श्रमकी प्रतिष्ठा साबित होगी और अेक नयी राह खुल जायगी।

दारिद्र्य-ग्रस्त प्राचीन मोहनदासको अगर यह कल्पना सूझी होती, तो भीख मांगकर मुट्ठीभर तंदुल भगवानको भेंट देनेके लिअे ले जानेके बदले अुसने अपने बड़े परिवारमें से हरअेककी अेक-अेक गुंडी लेकर भगवानको भेंट की होती और भगवान अितने प्रसन्न होते कि बदलेमें अुसकी नगरीको न वे कांचनकी बनाते, बल्कि अुसे कांचन-मुक्ति देते और स्वावलम्बी बनाते। परन्तु अैच्छिक दारिद्र्यका वरण किये हुअे अर्वाचीन सुदामादेवने* हमें यह बात सुझाअी है। अगर अुनकी सन्तान होकर अिस सूझको हम बूझ नहीं सके, तो हमारे जैसे अभागे और कौन हो सकते हैं?

हरिजनसेवक, ३१–१–'५३

१५

पुण्य-स्मरण

[३० जनवरीको चांडिलकी प्रार्थना-सभामें दिया हुआ भाषण।]

आज मेरा हृदय भरा हुआ है, फिर भी दो-चार शब्द बोलनेकी कोशिश करूंगा। पांच साल हुअे, बापू अपने नश्वर शरीरको छोड़ गये। हर कोअी अिस तरह देहको छोड़ता ही है। महान अवतार भी और साधारण प्राणी भी। लेकिन जो महान पुरुष गये वे अपने पीछे कुछ छोड़ गये। जो अुन्होंने छोड़ा वही अुनके जीवनका अमर अंश था। राम, कृष्ण, बुद्ध और दूसरे भी अनेक छोटे-बड़े नाम हिन्दुस्तानमें हम सुनते हैं। जरथुस्त, अीसा, महम्मद पैगम्बर अैसे हिन्दुस्तानके बाहरके भी बड़े नाम हम सुनते हैं, लेकिन अुन सबको हमने देखा

* गांधीजी।

नहीं है। हां, कुछ लोगोंने अुन्हें देखा था और कुछ स्मरण अुनकी पवित्र थातीके समान रखा था, जिसकी संभाल हम रखते हैं।

वापूका जीवन देखनेका अवसर हममें से वहुतोंको मिला। कुछ लोगोंको अुनके साथ रहकर काम करनेका भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वहुतोंने अुनके वताये रास्ते पर चलकर अपने जीवनमें परिवर्तन किये हैं। सारे हिन्दुस्ताननें अुनके मार्ग पर चलकर अपनी आजादी पाअी है। अव अुनके वाद अुनकी स्मृतिमें हर साल हम कुछ करते हैं। अिससे अुनको तो कुछ लाभ नहीं होता है। वे तो अपने अुत्तम कर्मोंसे अुत्तम गति पा गये। हम स्मरण करके अुनकी गतिको कुछ फायदा नहीं पहुंचाते। अुनकी गति हमारे स्मरण पर निर्भर नहीं है। परन्तु यह स्मरण हम अपने लाभके लिअे करते हैं।

आज हमें यह सोचना है कि पांच सालके स्मरणसे हमको क्या लाभ हुआ है। हमने अपने निजी जीवनमें, सामाजिक जीवनमें, और राष्ट्रके जीवनमें, जो अुनका राष्ट्रपिताके नामसे स्मरण करता है, अिस स्मरणसे क्या हासिल किया? क्या हमने अपने जीवनमें कुछ सुधार किया? हमने अुनके वताये रास्ते पर चलनेकी कहां तक कोशिश की यह सोचना है और जितनी कोशिश हम कर सकें, अुनके दिखाये हुअे रास्ते पर चलनेकी करनी है।

अुनके जानेके पहले ३२ साल तक मैं आश्रममें था? चिन्तन, मनन और अुनके वताये मार्गसे ही गरीवोंकी, देहातियोंकी सेवा करता रहा था।

अुनके जानेके वाद लोगोंकी अिच्छा रही और मुझे भी आवश्यकता महसूस हुअी हिन्दुस्तान घूमनेकी। पहले रेलसे मुसाफिरी की। करीव आधा हिन्दुस्तान अिस तरह घूमकर देखा। सोचता था अिधर-अुधर घूमकर कुछ सेवा तो कर ही लूंगा। पर वुनियादी वातें जो वापूने वताअी थीं अर्थात् अहिंसाके द्वारा सामाजिक क्रांति, वह किस तरह हो? आखिर चिन्तामणि हाथ लगी, जो भूदान-यज्ञ और संपत्ति-दान-यज्ञके रूपमें आप लोगोंके सामने अुपस्थित है। मैं अिसको पूरे अर्थमें चिन्तामणि मानता हूं। चिन्तामणि वह है जिससे हरअेककी

जरूरत पूरी हो सके। भूदान-यज्ञ और संपत्ति-दान-यज्ञ अैसा कार्यक्रम है जिसे बढ़ावा देनेसे, पूर्णता तक पहुंचानेसे, जितने भी रचनात्मक कार्य हैं सब फलेंगे-फूलेंगे, नहीं तो सारे मुरझा जायेंगे। अिसलिअे मैं दो सालसे लगातार अिस काममें लगा हूं। अितने साल मैं रचनात्मक कार्योंमें लगा रहा। पर मेरा मानना है कि जो काम आजादीके बाद बापूको करना था वही मैं कर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि सारे कार्यकर्ता, फिर वे किसी भी पक्षके हों या पक्षोंमें भी जितने गुट हैं अुन गुट-वाले हों, सब गुट और पक्ष भूलकर अिस काममें साल दो साल लगातार जुट जायें, तो जो आजादी हमने हासिल की हैं अुसका मजा हमें देखनेको मिलेगा। आजादी हासिल होनेके बाद भी वह हमें अभी देखनेको नहीं मिला है। वह तब तक नहीं मिलेगा जब तक सबसे गरीब मनुष्य अूंचा नहीं अुठेगा। लेकिन वह तो आखिरी सीढ़ी पर जा चुका है, जहांसे और नीचे गिरनेका मौका ही नहीं है। वह अितना नीचे गिर गया है कि अुसे अूपर अुठाना मुश्किल हो रहा है। अुसे अूंचा अुठानेकी कोशिश नहीं हो रही है। मेरा कहना है कि अुसको अूंचा अुठानेकी कोशिश हो तो बाकीके सब अुठेंगे। देशको अुठानेकी जितनी दूसरी कोशिशें हो रही हैं, अुनसे पहले अूपरवालेको लाभ मिलता है, फिर बीचवालेको और आखिरमें नीचेवालेको। हमारी तरकीबसे पहले अुन्हें ही लाभ होगा जो सबसे नीचे हैं।

बापूका चरखा, बापूका हरिजन-अुद्धार, बापूका ग्रामोद्योग, बापूका कुदरती अुपचार और बापूकी नयी तालीम, जितना भी अुन्होंने सोचा वह सब निचली श्रेणीको छूता था, अुन्हें फौरन लाभ पहुंचानेके लिअे ही था। अुस तरह आजकल कम सोचा जा रहा है। हमारा भूदान-कार्य, संपत्तिदान-कार्य ठीक अुसी तरहके बुनियादी कार्य हैं। अिस वास्ते सब पक्षोंके लोगोंको पंथ, पक्ष और पार्टीके सारे भेद भूलकर कन्धेसे कन्धा जुटाकर अिस काममें लग जाना चाहिये अैसी मेरी मांग है।

मेरी यह भी मांग है कि कार्यकर्ताओंके अलावा अब बड़े जमींदार और काश्तकार भी अिस कामको अपना काम मानें। अभी

काम अपनाया। कांग्रेस, समाजवादी, जनसंघ अिन सबने सहानुभूति प्रकट की। अभी तो सहानुभूति ही बताअी है। अितना अल्प-सा प्रयत्न होते हुअे भी पांच लाख अेकड़ जमीन मिल चुकी है। अगर औसत दो सौ रुपये भी प्रति अेकड़की कीमत जोड़ें, तो दस करोड़की संपत्ति गरीबोंको पहुंच चुकी है। और ये दस करोड़ तो सैकड़ों गुने हो सकते हैं। रुपयेका तो क्षय हो जाता है। पर जमीन कायम रहनेकी चीज है। अितने अल्प प्रयत्नसे अितना काम हुआ। यदि सारे अिसमें जुट जायंगे तो आर्थिक क्रांति बहुत सुगमतासे, शांतिसे और प्रेमसे हो जायेगी। मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि वह हम सब साथियों और भाअियोंको अितनी प्रेरणा और अेकाग्रता दे।

हरिजनसेवक, २८–२–’५३

१६

हमारा अनोखा मिशन

[चांडिल-सर्वोदय-सम्मेलन, बिहारमें दिये गये अुद्घाटन-भाषणसे।]

हम अेक कार्यकर्ता-जमात हैं। यहां सम्मेलनमें आते हैं, तो कुछ बोल भी लेते हैं। लेकिन यह बोलना भी हमारा काम ही होता है। वह कोअी केवल वक्तृत्व नहीं हो सकता; कर्तृत्वका ही हिस्सा होता है। अैसे जो हम लोग अेकत्रित होते हैं, सालभर कुछ काम करके नारायणको वह समर्पण करनेके लिअे आते हैं और दूसरे सालके लिअे कुछ संबल लेकर जाना चाहते हैं। अैसे मौकों पर कुछ विचार-विनिमय, विचारोंकी लेन-देन कर लेते हैं। आज हमें अुसी दृष्टिसे हमारे कामके पीछे जो भूमिका है वह देख लेनी चाहिये; कार्यका जो संशोधन करना है अुस पर भी नजर डालनी चाहिये। ‘कार्य-पद्धति’, ‘कार्य-क्रम’ और ‘कार्य-रचना’ अिन तीनों पर हमें थोड़ा विचार कर लेना चाहिये।

अखिल जागतिक दृष्टि

हम दुनियाके किसी भी कोनेमें क्यों न काम करते हों, आज दुनियाकी हालत अैसी नहीं है कि सारी दुनिया पर नजर डाले बगैर हमारा काम चल सके। दुनियामें जो ताकतें काम कर रही हैं, जो नये प्रवाह शुरू हुअे हैं, कल्पनाओं और भावनाओंका जो संस्पर्श और संघर्ष हो रहा है, अुसकी तरफ ध्यान देकर, अुस पर सतत नजर रखकर ही जो भी छोटासा कदम हम अुठाना चाहें, अुठा सकते हैं। समुचित दृष्टिके बिना केवल कर्म अंधा हो जायगा। अिसलिअे दुनियाकी हालतका खयाल करना होता है। आज हम देख रहे हैं कि दुनियाकी हालत बहुत चंचल है। अितना ही नहीं बहुत कुछ विस्फोटक भी है। यानी अुसमें कअी खतरोंकी संभावना भरी है। और कह नहीं सकते कि किस समय अुसमें से ज्वालामुखीका विस्फोट होगा। यह कुछ नाहक भयावना चित्र मैं नहीं खींच रहा हूं। अिससे भयभीत होनेका मेरा अिरादा नहीं है, न आपको ही मैं भयभीत बनाना चाहता हूं। बल्कि जो हालत है सिर्फ अुस ओर ध्यान खींचना चाहता हूं। कहा नहीं जा सकता कि दुनियामें किस क्षण क्या होगा। अैसी अस्थिर मनःस्थिति और परिस्थिति आज दुनियामें है।

विपरीत परिस्थिति

अेक-दो महीने पहलेकी बात है। दिल्लीमें कुछ ज्ञानी, विद्वान अेकत्रित हुअे थे और अुन्होंने अहिंसाके दर्शनके बारेमें कुछ चिन्तन-मनन, विमर्श किया। वह अखबारोंमें आता रहा और हम पढ़ते रहे। अुसमें हमारे पू० राजेन्द्रबाबूने जिक्र किया था कि "आज कोअी भी देश यह कहनेकी हिम्मत नहीं कर रहा है कि हम सैन्यके बगैर चलायेंगे।" अुन्होंने अिस बातका भी दुःख प्रगट किया कि "बावजूद अिसके कि गांधीजीकी सिखावन हमने अुनके श्रीमुखसे सीधी अपने कानोंसे सुनी है और बावजूद अिसके कि हमने अुनके साथ कुछ काम भी किया है, हिन्दुस्तान भी आज अैसी हिम्मत नहीं कर पा रहा है।" हमारे हमान नेता पंडित नेहरू कअी मरतबा बोल चुके हैं कि दुनियाका कोअी

मसला शस्त्रबलसे हल नहीं हो सकता। हमारे ये भाअी, जो देशका नेतृत्व कर रहे हैं और जिन पर यह जिम्मेवारी देशने डाली है, अहिंसाको दिलसे मानते हैं। अुनका हिंसा पर विश्वास नहीं है। फिर भी यह हालत है कि सेनाको बनाने-बढ़ानेकी, अुसको मजबूत करनेकी जिम्मेवारी अुनको माननी पड़ती है। अिस तरह विचित्र परिस्थितिमें हम पड़े हैं।

दिल और दिमागका संघर्ष

स्थिति यह है कि श्रद्धा अेक वस्तु पर है अैसा हमको आभास होता है, और क्रिया दूसरी ही करनी पड़ती है। हम चाहते तो यह हैं कि सारे हिन्दुस्तानमें और दुनियामें अहिंसा चले, हम अेक-दूसरेसे न डरें, बल्कि अेक-दूसरेको प्यारसे जीतें। प्यार ही कामयाब हो सकता है और सबको जीत सकता है, अैसा विश्वास दिलमें भरा है। अिस पर भी अेक दूसरी चीज हममें है, जिसे बुद्धि नाम दिया जाता है। वैसे वह भी हृदयका अेक हिस्सा है, और हृदय भी अुसका अेक हिस्सा है; और यों दोनों मिले-जुले हैं, फिर भी हृदय कहता है कि हिंसासे कोअी भी मसला हल नहीं होगा। अेक मसला हल होता-सा दिखेगा, तो अुसमें से दूसरे दसों नये मसले पैदा होंगे। लेकिन बुद्धि तो तीनों गुणोंसे भरी है। अुसमें कुछ विचारकी शक्ति है, कुछ आवरण भी है, कुछ दर्शन है और कुछ अदर्शन है। अैसी हमारी संमिश्र बुद्धि हमें कहती है कि "हम सेनाको हटा नहीं सकते। जिस जनताके हम प्रतिनिधि हैं वह जनता अुतनी मजबूत नहीं है। अुसमें वह योग्यता नहीं है। अिसलिअे अुसके प्रतिनिधियोंके नाते हम पर यह जिम्मेवारी आती है कि हम लश्कर बनायें, बढ़ायें और अुसे मजबूत करें।" अैसी आज हालत है। दिखता यह है कि रचनात्मक कार्य करें। पर वह सिर्फ दिलकी अिच्छा है। बुद्धि कहती है कि "सेना बनानी होगी, अिसलिअे सेना-यंत्र जिससे मजबूत बन सकेगा अैसे यंत्रोंको स्थान देना होगा।" जिनकी श्रद्धा चरखे पर कम है अुनकी बात मैं छोड़ देता हूं। लेकिन जिनकी श्रद्धा चरखे पर है, अुनसे यह सवाल पूछा जाता है कि क्या चरखे और ग्रामोद्योगके जरिये आप युद्ध-यंत्र मजबूत

बना सकते हैं या युद्ध-यंत्र खड़ा कर सकते हैं? तो अुनकी बुद्धि, और हमारी बुद्धि भी, क्योंकि अुनमें हम सम्मिलित हैं, कहती है कि नहीं, अिन छोटे-छोटे अुद्योगोंके जरिये हम युद्ध-यंत्र सज्ज नहीं कर सकते हैं। कम्यूनिटी प्रोजेक्टके बारेमें सरकारकी अिच्छा यह रही है कि पांच लाख देहातोंमें वे चलें। अभी थोड़े देहातोंमें काम आरम्भ हुआ है। लेकिन अिच्छा है कि वह और व्यापक बने और अुसके जरिये राष्ट्र समृद्ध हो, लक्ष्मीवान हो, गरीबी मिटे, अित्यादि। पर अगर कल दुनियामें महायुद्ध छिड़ जाय, तो मैं कह नहीं सकता कि अेक भी कम्यूनिटी प्रोजेक्ट जारी रहेगा। और जिन्होंने अिस योजनाका अुपक्रम किया, वे भी यह नहीं कह सकते कि वह जारी रहेगा। तब फौरन बुद्धि जोर करेगी और हृदय छिप जायेगा। हृदय पर बुद्धि गालिब हो जावेगी और कहेगी कि अब तो राष्ट्र-रक्षण ही मुख्य वस्तु है।

जादूकी कुर्सी

यह मैं आत्म-निरीक्षणके तौर पर बोल रहा हूं। जो आज वहां जिम्मेवारीके स्थान पर बैठे हुअे हैं, अुनकी जगह पर अगर हम बैठते तो अभी वे जो कर रहे हैं, अुससे हम बहुत कुछ भिन्न करते अैसा नहीं है। वह स्थान ही अैसा है। वह जादूकी कुर्सी है। अुस पर जो आरूढ़ होगा अुस पर अेक संकुचित, अेक सीमित, अेक बने-बनाये, अेक अस्वाधीन दायरेमें सोचनेकी जिम्मेवारी आती है। अैसे दायरेमें, जिसको मैंने 'अस्वाधीन' नाम दिया है, लाचारीसे दुनियाका प्रवाह जिस दिशामें बहता हुआ दीख पड़ता है अुसी दिशामें सोचनेकी जिम्मेवारी अुन पर आती है। बड़े-बड़े राष्ट्र — अमेरिका, रूस जैसे भी डरते हैं। वे अेक-दूसरेका डर रखते हैं। और कम ताकतवर राष्ट्र — पाकिस्तान और हिन्दुस्तान जैसे भी अैसा ही डर रखते हैं। अिस तरह अेक-दूसरेका डर रखते हुअे शस्त्रबलसे, सैन्यबलसे कोअी मसला हल नहीं हो सकता, अैसे विश्वासके साथ हम शस्त्रबल और सैन्यबल पर आधार रखते हैं। अुनका आधार नहीं छोड़ सकते।

दम्भ नहीं, दयाजनक अवस्था

अैसी विचित्र परिस्थितिमें हम हैं। और कोअी हमें दाम्भिक कहेगा, ढोंगी कहेगा, तो वह अैसा कहनेका हकदार सावित होगा, यद्यपि अुसका कथन सही नहीं होगा। यदि हमारे दिलमें कोअी दूसरी वात है और अुसे हम छिपाते हैं, तो हम जान-वूझकर ढोंगी हैं। लेकिन जहां दिल अुस वातको कवूल करता है और परिस्थिति-जन्य वुद्धि दूसरी वात कहती है अिस वास्ते लाचारीसे कोअी वात करनी पड़ती है, तो वह दाम्भिकताकी नहीं वल्कि दयाजनक स्थिति है। अैसी दयाजनक स्थितिमें हम हैं।

अभी राजेन्द्रवावूने वताया कि "सर्वोदय-समाज पर यह जिम्मेवारी है, क्योंकि लोगोंको अुस समाजसे अपेक्षा है कि वह समाज अपने मूल विचार पर कायम रहे और अुसको आजकी हालतमें अमलमें लानेके लिअे वातावरण तैयार करे।" अगर सर्वोदय-समाज यह करेगा तो आजकी सरकारको, जो कि हमारी राष्ट्रीय सरकार है, अुसकी सर्वोत्तम मदद होगी। आज मान लीजिये कि हममें से कोअी मंत्री वन जाय और कुछ मंत्र करने लगे, तो अुसका वह मंत्र और अुसका वह तंत्र, दोनों मिल करके आजकी सरकारको अुतनी मदद नहीं देंगे, जितनी मदद विना सैन्यवलके जिस तरह समाज वन सकता है अुस दिशामें काम करनेसे वह देगा।

स्वतंत्र लोकशक्तिके निर्माणका कार्य

मुझे कभी कभी लोग पूछते हैं कि आप वाहर क्यों रहते हैं? देशकी जिम्मेवारी आप क्यों नहीं अुठाते? तो मैं कहता हूं कि दो वैल जव गाड़ीमें लग चुके हैं वहां मैं अेक तीसरा गाड़ीका वैल वनूंगा, तो अुससे गाड़ीको मदद मिलेगी? अगर मैं यह कर सकूं कि रास्ता जरा ठीक वना दूं, ताकि गाड़ी अुचित दिशामें जाय, तो अुस गाड़ीको मैं अधिक-से-अधिक मदद पहुंचा सकता हूं। हां, अेक वात जरूर है कि अगर मैं वैल ही हूं, तो मुझे वैल वनना ही चाहिये, वही काम करना चाहिये। मैं अेक विशेष भाषामें वोल रहा

हूं। मैं अुम्मीद करता हूं कि आप अुस भापाको सहन करेंगे। हमारी संस्कृतिमें बैलके लिअे जितना आदर है, अुतना मनुष्यके लिअे भी नहीं है। और अुसी अर्थमें मैं बोल रहा हूं। जो राज्यकी धुरा अुठाता है, अुसे हम धुरन्धर कहते हैं। धुरन्धरके मानी होते हैं बैल! धुरन्धर हमें बनना पड़ता है। लेकिन जो लोग धुरंधर बन चुके हैं, वे कहते हैं कि अब आप वही काम मत करिये जो हम कर रहे हैं। अुस काममें आप मत लगिये, बल्कि जो कमियां हम महसूस करते हैं अुनकी पूर्ति अगर आप कर सकते हैं तो करें। अैसी आशासे वे लोग हमारी तरफ देखते हैं। तो हमें ठीक समझना चाहिये और अिस दृष्टिसे, जिसे मैं स्वतंत्र लोकशक्ति कहता हूं वह जिससे निर्माण हो, अैसे ही काममें लग जाना चाहिये। तभी हम आजकी सरकारकी सच्ची मदद करेंगे और अपने देशकी समुचित सेवा कर सकेंगे।

दंडशक्तिसे भिन्न लोकशक्ति

मैंने कहा कि 'हमें स्वतंत्र लोकशक्ति निर्माण करनी चाहिये।' मेरा अर्थ यह है कि हिंसाशक्तिकी विरोधी और दंडशक्तिसे भिन्न अैसी लोकशक्ति हमें प्रकट करनी चाहिये। आजकी हमारी जो सरकार है अुसके हाथमें हमने दंडशक्ति सौंप दी है। अुस दंडशक्तिमें हिंसाका अेक अंश जरूर है, फिर भी हम अुसे 'हिंसा' नहीं कहना चाहते हैं। हिंसासे अुसको अलग वर्गमें रखना चाहते हैं। हम अुसे हिंसाशक्तिसे भिन्न दंडशक्ति कहना चाहते हैं, क्योंकि वह शक्ति अुनके हाथमें सारे समुदायने दी है। अिसलिअे वह हिंसाशक्ति नहीं, निरी हिंसाशक्ति नहीं, पर दंडशक्ति है। अुस दंडशक्तिका भी अुपयोग करनेका मौका न आये, अैसी परिस्थिति देशमें निर्माण करना हमारा काम होगा। वह अगर हम करेंगे तो हमने स्वधर्म पहचाना और अुस पर अमल करना जाना। अगर अैसा हम नहीं करेंगे और दंडशक्तिके अुपयोगसे ही जो जनसेवा हो सकती है अुस जनसेवाका लोभ रखेंगे, तो जिस विशेप कार्यकी हमसे अपेक्षा की जा रही है, अुस कार्यको, अुस अपेक्षाको, हम पूर्ण नहीं कर सकेंगे। बल्कि संभव है कि हम बोझ-रूप भी साबित होंगे।

दयाका राज्य बनाना है, न कि दयाकी प्रजा

मैं कुछ थोड़ा स्पष्टीकरण कर दूं। मैंने कहा कि दंडशक्तिके आधार पर सेवाके कार्य हो सकते हैं और वैसे कार्य करनेके लिअे ही हमने राज्य-शासन चाहा है और हाथमें लिया है। और जब तक समाजकी वैसी जरूरत है, अुस शासनकी जिम्मेवारी हम नहीं छोड़ना चाहते। सेवा तो अुसमें से जरूर होगी, पर वह सेवा नहीं होगी जिससे कि दंडशक्तिका अुपयोग ही न करना पड़े अैसी परिस्थिति निर्माण हो। मैं मिसाल दूं। लड़ाअी चल रही है। सिपाही जख्मी हो रहे हैं। अुन सिपाहियोंकी सेवामें जो लोग लगे हैं, वे भूतदयासे परिपूर्ण होते हैं। वे शत्रु-मित्र तक नहीं देखते हैं और अपनी जान खतरेमें डालकर युद्ध-क्षेत्रमें पहुंचते हैं; और अैसी सेवा करते हैं जो केवल माता ही अपने बच्चोंकी कर सकती है। अिसलिअे वे दयालु होते हैं, अिसमें कोअी शक नहीं। वह सेवा कीमती है, यह हर कोअी जानता है। लेकिन युद्धको रोकनेका काम वे नहीं कर सकते। अुनकी दया युद्धको मान्य करनेवाले समाजका अेक हिस्सा है। जैसे अेक यंत्रमें अनेक छोटे-बड़े चक्र होते हैं, वे अेक-दूसरेसे भिन्न दिशामें भी काम करते होंगे, फिर भी वे अुस यंत्रके अंग ही हैं। तो अेक ही युद्ध-यंत्रका अेक अंग है सिपाहियोंको कत्ल करना और अुसी युद्ध-यंत्रका दूसरा अंग है जख्मी सिपाहियोंकी सेवा करना। अुनकी पर-स्पर विरोधी गतियां स्पष्ट हैं। अेक क्रूर कार्य है, अेक दया कार्य है, यह हर कोअी जानता है। पर अुस दयालु हृदयकी वह दया और अुस क्रूर हृदयकी वह क्रूरता, दोनों मिल करके युद्ध बनता है। ये दोनों युद्ध बनाये रखनेवाले दो हिस्से हैं। कठोर वैज्ञानिक भाषामें बोलना हो तो युद्धको जब तक हमने कबूल किया है, तब तक चाहे हमने अुसमें जख्मी सिपाहीकी सेवाका पेशा लिया हो, चाहे सिपाहीका पेशा लिया हो, हम दोनों युद्धके गुनहगार हैं। यह मैंने अिसलिअे मिसाल दी कि सिर्फ हम दयाका कार्य करते हैं अिसलिअे यह नहीं समझना चाहिये कि हम दयाका राज्य बना सकेंगे। राज्य तो निठुरताका है। अुसके अन्दर दया जैसे रोटीके

कुछ भी हो, लोग भूमिका बंटवारा करें। क्या किसी कानूनके कारण माताअें बच्चोंको दूध पिला रही हैं? तो मनुष्यके हृदयमें कोअी अैसी शक्ति होती है, जिससे अुसका जीवन समृद्ध होता है। मनुष्य प्रेम पर भरोसा रखता है, प्रेमसे पैदा हुआ है, प्रेमसे पलता है और आखिर जब दुनियाको छोड़कर चला जाता है, तब भी प्रेमकी ही निगाहसे जरा अिर्द-गिर्द देख लेता है और अुसके प्रेमीजन अगर अुसके दर्शनमें आते हैं, तो सुखसे देहको, दुनियाको, छोड़कर वह जाता है। तो प्रेमकी शक्तिका अिस तरह अनुभव होते हुअे भी अुसको अधिक सामाजिक स्वरूपमें विकसित करनेकी हिम्मत रखनेके बजाय मैं अगर कानून-कानून रटता रहूं, तो जनशक्ति निर्माण करके सरकार हमसे जो मदद अपेक्षित करती है, वह मदद मैंने दी अैसा नहीं होगा। अिसलिअे दंडशक्तिसे भिन्न मैं जनशक्ति निर्माण करना चाहता हूं। और हमें वह निर्माण करनी चाहिये। यह जो जनशक्ति हम निर्माण करना चाहते हैं, वह दंडशक्तिकी विरोधी है अैसा मैं नहीं कहता। वह हिंसाकी विरोधी है। लेकिन मैं अितना ही कहता हूं कि वह दंडशक्तिसे भिन्न है।

खादीबोर्ड

मैं दूसरी मिसाल दूं। अभी खादीबोर्ड बन रहा है। सरकार खादीको मदद देना चाहती है। पंडित नेहरूने कहा, 'मुझे आश्चर्य हो रहा है कि जो काम चार साल पहले ही हो जाना चाहिये था, वह अितनी देरीसे क्यों हो रहा है?' वे महान हैं। अुनका दिल महान है। वे आत्म-निरीक्षण करते हैं और अिस तरहकी भाषा बोलते हैं। अब हमारा काम है, चरखा-संघका काम है कि सरकार खादीको बढ़ावा देना चाहती है, खादीका अुत्पादन बढ़ाना चाहती है तो अुसको कुछ मदद दें; क्योंकि चरखा-संघको अिस कामका अनुभव है और अनुभवियोंकी मदद अैसे कामके लिअे जरूरी है। लेकिन फिर भी मैं सोचता हूं कि अेक नागरिकके नाते और अेक माहिरके नाते अपनी सरकारको जो मदद देना जरूरी है वह देना चाहिये। लेकिन अगर हम अुसीमें खतम हो जायं, समाप्त हो जायं, तो हमने खादीकी वह

सेवा नहीं की, जिसकी कि हमसे अपेक्षा है। हमें तो खादीके बारेमें अपनी दृष्टि स्पष्ट और शुद्ध रखनी चाहिये और अुस दिशामें काम करते हुअे सरकारको खादी-अुत्पादनमें जो मदद पहुंचानी चाहिये वह पहुंचानी चाहिये। हमें युद्ध मिटानेके तरीके ढूंढ़ने चाहिये। और अिस पर भी युद्ध चलें और हमें जख्मी सिपाहियोंकी मददमें जाना पड़े तो जाना चाहिये। वह तो युद्धका हिस्सा ही है, अैसा कह कर अुसका अिनकार करेंगे अैसी बात नहीं, पर ध्यानमें रखेंगे कि वह हमारा असली काम नहीं है। हमारा खादीकाम ग्रामराज्यकी स्थापनाके लिअे हो सकता है।

खादीकाममें सरकारी सहयोगकी मर्यादा

अिस मरतबा पंडित नेहरू मिलने आये और बड़े प्रेमसे बोले। मैंने नम्रतासे अुनका बहुत कुछ सुन लिया। और फिर जब अुन्होंने कुछ सलाह-मशविरा करना चाहा, तो मैंने अपने विचार थोड़ेमें प्रकट कर दिये। मैंने कहा कि खादीके लिअे और ग्रामोद्योगके लिअे भी सरकारकी तरफसे अगर मैं कोअी चीज चाहता हूं, तो मैं कहूंगा कि जैसे हरअेक नागरिकको पढ़ना-लिखना आना ही चाहिये, क्योंकि नागरिकत्वका वह अंश है, अनिवार्य अंश है अैसा हम मानते हैं; और अिसलिअे हमारी सरकार सबको शिक्षित बनानेकी, पढ़ना-लिखना सिखानेकी जिम्मेवारी महसूस करती है, मान्य करती है। चाहे अुस पर वह पूरा अमल न करने पाये, परिस्थितिके कारण आंशिक अमल करे, लेकिन जब तक अुसका पूरा अमल नहीं हुआ है, सारेके सारे लोग पढ़ना-लिखना नहीं जान गये हैं, तब तक हमने अपना पूरा काम नहीं किया, अिस तरहका खटका दिलमें बना रहेगा। वैसे ही हमारी सरकार यह माने, यह विचार कबूल करे कि हिन्दुस्तानके हरअेक ग्रामीणको, हरअेक नागरिकको सूत कातना सिखाना चाहिये। जो ग्रामीण, जो नागरिक सूत कातना नहीं जानते, वे अशिक्षित हैं अितना माने और बाकीका सब काम जनता करे। हम सरकारसे पैसेकी मदद नहीं मांगेंगे। परंतु यह विचार अगर वह स्वीकार करती है, तो अुससे हमें अधिकसे

अधिक मदद मिलती है। तो यह सब अुन्होंने सुन लिया। मैं समझता हूं कि अुनके हृदयको तो वह जंचा ही होगा, पर सहज विनोदमें अुन्होंने पूछा कि सूत कातना अगर सबको सिखा दें तो अुसके अुपयोगका सवाल आयेगा। तो मैंने जवाब दिया कि पढ़ना-लिखना सिखाने पर भी तो अुसके अुपयोगका सवाल रहता ही है। मैंने अैसे कअी पढ़े-लिखे भाअी देखे हैं जो थोड़ासा दो चार साल पढ़े और अुसका अुनकी जिन्दगीमें कभी कोअी अुपयोग नहीं हुआ। अुनके लिअे काला अक्षर भैंस बराबर होता है। 'योग' के साथ 'क्षेम' लगा है। यह चिंता करनी पड़ती है। पर आप देखेंगे कि मैंने खादीके लिअे सिर्फ अितनी ही मांग की है। जब कि जनताकी सरकार है और जनताकी तरफसे यह मांग होगी, तो सरकारको अुतना करना चाहिये। परंतु अिससे अधिक लोगों पर खादी लादनेकी बात अगर कानूनसे होगी, यानी मैं अैसी मांग करूं, तो मैं कहूंगा कि मैंने अपना काम समझा नहीं है; दंडशक्तिसे भिन्न हमें लोकशक्ति निर्माण करनी है यह सूत्र मैं भूल गया हूं।

दंड-निरपेक्षताका निर्माण

ये दो मिसालें सहज दे दीं, अेक खादीकी और दूसरी भूमिदानकी। हम भूमिका मसला हल करने जायंगे तो हमारा अेक तरीका होगा। और लोकशाही सरकार अगर वह हल करना चाहेगी, और दंडशक्तिका अुपयोग करके अुसे करना चाहेगी और करेगी तो अुसको कोअी दोष नहीं देगा। लेकिन अुसका दूसरा मार्ग है। सरकारकी अिस तरहकी मददसे जनशक्ति निर्माण नहीं होगी, लक्ष्मी भले ही निर्माण हो। हमारा अुद्देश्य सिर्फ लक्ष्मी निर्माण करना नहीं, बल्कि जनशक्ति निर्माण करना होगा। यह सारी दृष्टि हमारे कामके पीछे है। अब यह दृष्टि हमारी स्थिर हो जाय, तो फिर हमारी कार्य-पद्धति क्या होगी, अिसका विशेष वर्णन करनेकी आवश्यकता नहीं रहेगी। हर कोअी सोचेगा कि हरअेक रचनात्मक काम करनेमें हमारी अेक विशेष पद्धति होगी। अिस पद्धतिसे काम करनेसे आखिर यही परिणाम अपेक्षित होगा कि लोगोंमें दंड-निरपेक्षताका निर्माण हो।

दण्डयुक्त रचनामें शक्ति नहीं होती सो बात नहीं। पर वह शक्ति नहीं होती, जो शिवशक्ति है और जो हमें पैदा करनी है। वह शक्ति दूसरी शक्ति है। हमारे खयालसे वह शक्ति नहीं है, अिसलिअे विचार-शासनको हम मानना चाहते हैं। अगर यह ध्यानमें आयेगा तो विचारका निरंतर प्रचार करना हमारा अेक कार्यक्रम बनेगा, जो आज हम नहीं कर रहे हैं और जो हमें करना चाहिये।

विचार, विचार और विचार

जब मैं अिस दृष्टिसे सोचता हूं, तो बुद्ध भगवानने भिक्षुसंघ क्यों बनाये होंगे और शंकराचार्यने यतिसंघ क्यों बनाये होंगे, अिसका रहस्य खुल जाता है। अिस पर भी अुन संघोंके जो अनुभव आये हैं, अुनके गुण-दोषोंकी तुलना करके मैंने अपने मनमें यह निर्णय किया है कि हम अैसे संघ नहीं बनायेंगे, क्योंकि अुनके गुणोंसे अुनके दोष अधिक होते हैं। यह अनुभव आया है अिसलिअे हम संघ तो नहीं बनायेंगे, पर अुनको क्यों बनाने पड़े अिसका खयाल अुससे आ जाता है। निरंतर, अखंड बहते हुअे झरनेकी तरह सतत घूमनेवाले और लोगोंके पास सतत विचार पहुंचानेवाले लोग होने चाहिये। अुसके बगैर सर्वोदय-समाज काम नहीं कर पायेगा। लोगोंके पास पहुंचनेके जितने मौके मिलें अुतने प्राप्त करने चाहिये। लोग अेक बार कहने पर नहीं सुनते हों, तो दुबारा कहनेका मौका आने पर हमें खुशी होनी चाहिये। अितना विचार-प्रचारका अुत्साह और अितनी विचार पर श्रद्धा, विचार-निष्ठा हममें होनी चाहिये। लेकिन हमारी हालत यह है कि हममें से बहुतसे लोग भिन्न भिन्न संस्थाओंमें गिरफ्तार हो गये हैं। अिसका थोड़ा जिक्र बादमें करूंगा, अभी सिर्फ अुल्लेखमात्र किया है। यद्यपि वे संस्थायें महत्त्वकी हैं तो भी हमें संस्थाओंकी आसक्ति न हो, भक्ति रहे और अुनका काम जारी रखें। लेकिन संस्थामें कुछ मनुष्य अैसे हों, जो सदा घूमते रहें। अिस तरहकी रचना और अैसा कार्यक्रम हम नहीं करेंगे, तो हमारा विचार क्षीण होगा और विचार-शासन नहीं चलेगा।

पत्रकसे पत्रक ही पैदा होते हैं

विहारके लोग कुछ अभिमानसे कहते हैं और अुन्हें अभिमान करनेका हक भी है कि भूदान-यज्ञका काम विहारकी कांग्रेसने प्रथम अुठाया और अुसके वाद हैदरावादमें अ० भा० कांग्रेसने अुसको स्वीकार किया। तो होता क्या है? अूपरसे अेक 'सरक्यूलर' (पत्रक) आता है—"भूदानमें मदद देना कांग्रेसवालोंका कर्तव्य है।" गंगा हिमालयसे गिरती है और हरिद्वार आती है। तो वहांका पत्रक प्रांतिक समितिमें आता है। और हिमालयसे गंगा हरिद्वार आने पर आगे वहती है और गढ़मुक्तेश्वर जाती है। यह पत्रक भी प्रांतिक समितिसे जिला आफिसमें जाता है। गंगा कहींसे कहीं भी जाय, पर वह पानी ही रहती है, गंगा ही रहती है। अुसी तरह पत्रकमें से पत्रक ही पैदा होते हैं। मैंने विनोदके तौर पर अेक दफा कहा था कि हरअेक जाति अपनी ही जातिको पैदा करती है। वैसे ही पत्रक भी पत्रक ही पैदा कर सकता है। आखिर काम कौन करेगा? काम तो करना होगा ग्रामके लोगोंको, लेकिन ग्रामके लोगों तक वह पहुंचता कहां है? वह तो अेक आफिससे दूसरे आफिसमें जाता है, वहांसे तीसरे आफिसमें जाता है, सिर्फ अितना ही होता है। यह जो भूदान-यज्ञका हमारा कार्यक्रम है, वह तव तक नहीं हो सकता जव तक कि हम घर-घर नहीं पहुंचेंगे। पांच लाख देहातसे पच्चीस लाख अेकड़ जमीन हम हासिल करना चाहते हैं। यों तो आसान काम दीखता है। फी गांव पांच अेकड़ कोअी वड़ी वात नहीं। लेकिन अुतने गांवों तक पहुंचे कौन? अिसलिअे हमारे पास मुख्य साधन विचार-प्रचारका ही हो सकता है। अुसकी योजना हमें करनी चाहिये, यह हमारा कार्यक्रम होगा।

हमारा अेक औजार विचार-शासन

अगर अैसा करनेकी हमारी हिम्मत नहीं होती है, अितने गांवोंमें हम कैसे जायेंगे, कैसे घूमेंगे, अैसा हमें लगता हो और जिसको 'छोटा काट'—अंग्रेजीमें 'शॉर्टकट'—कहते हैं वह हम चाहते हों, यानी

यह चाहते हों कि कानून बने, तो यह बनाना और अैसी अिच्छा रखना हमारा काम नहीं है। कानून बने, जरूर बने, जल्द बने और अच्छा बने; पर अुस काममें हम लगेंगे तो परधर्मका आचरण करेंगे, स्वधर्मका नहीं। हमारा स्वधर्म है कि हम गांव-गांव घूमना शुरू करें और विचार पर विश्वास रखें। यह न कहें कि 'अरे, विचार सुनने-सुनानेसे कब काम होगा?' विचारसे ही काम होगा, क्योंकि हमारा काम विचारसे ही हो सकता है। तो यह विचारकी सत्ता, विचार-शासन हमारा अेक औजार है।

कर्तृत्व और सत्ताका विभाजन

और दूसरा औजार है, कर्तृत्व-विभाजन। सारा कर्तृत्व, सारी कर्मशक्ति अेक केन्द्रमें केन्द्रित नहीं होनी चाहिये, बल्कि गांव-गांवमें कर्मशक्ति, कर्मसत्ता निर्माण होनी चाहिये। अिसलिअे हम चाहते हैं कि हरअेक गांवको यह हक हो कि वहां कौनसी चीज आये और कौनसी चीज न आये, अिसका निर्णय वह खुद कर सके। अगर कोअी गांव चाहता है कि हमारे यहां कोल्हू चले और मिलका तेल न आये, यानी मिलका तेल आनेसे रोकें, तो अुसे रोकनेका हक होना चाहिये। जब हम यह बात करते हैं तो अधिकारी कहते हैं कि अिस तरह अेक बड़ी स्टेटके अन्दर अेक छोटी स्टेट नहीं चल सकती। तो मैं कहता हूं कि सत्ताका विभाजन अगर हम नहीं करेंगे, कर्तृत्वका विभाजन नहीं करेंगे तो सेनाबल अनिवार्य है यह समझ लीजिये। तो फिर सेनाके बगैर आज तो चलेगा ही नहीं, और कभी भी नहीं चलेगा। फिर कायमके लिअे यह तय कीजिये कि सेनाबलसे काम लेना है और सेना सज्ज रखनी है। फिर यह न बोलिये कि हम सेनासे कभी-न-कभी छुटकारा चाहते हैं। अगर कभी-न-कभी सेनासे छुटकारा चाहते हों, तो जैसा परमेश्वरने किया है वैसा हमको करना चाहिये। परमेश्वरने अक्लका विभाजन कर दिया। हरअेकको अक्ल दे दी — बिच्छूको भी दी, सांपको भी दी, शेरको भी दी, मनुष्यको भी दी। कमबेशी सही, लेकिन हरअेकको अक्ल दे दी और कहा कि अपने जीवनका काम अपनी अक्लके आधारसे करो। और तब सारी

दुनिया अितनी अुत्तम चलने लगी कि वह विश्रांति ले सकता है और यहां तक कि लोगोंको शंका भी होती है कि परमेश्वर है या नहीं। हमको राज्य अैसा ही चलाना होगा जिससे शंका आ जाय कि कोअी राज्यसत्ता है या नहीं। हिन्दुस्तानमें शायद राज्यसत्ता नहीं है अैसा भी लोग कहें, तब हमारा राज्य-शासन अहिंसक होगा। अिसलिअे हम ग्रामराज्यका अुद्घोष करते हैं और चाहते हैं कि ग्राममें नियंत्रणकी सत्ता हो। अर्थात् ग्रामवाले नियंत्रणकी सत्ता अपने हाथमें लें। यह भी अेक जनशक्तिका प्रश्न आया कि गांववाले खुद खड़े हो जायं, निर्णय करें कि फलानी चीज हमको पैदा करनी है और सरकारके पास मांग करें कि फलाना माल यहां नहीं आना चाहिये, अुसको रोकिये। वह अगर नहीं रोकती है, यानी रोक नहीं सकती, रोकना चाहती है तो भी मान लीजिये कि रोक नहीं सकती, तो अुसके विरोधमें खड़े होनेकी हिम्मत करनी होगी। और अुससे अुस सरकारको अत्यन्त मदद पहुंचेगी, क्योंकि अुसीसे सैन्यबलका छेद होगा। अिसके बगैर सैन्यबलका कभी छेद नहीं हो सकता। यह बात कभी नहीं हो सकती कि दिल्लीमें कोअी अैसी अक्ल पैदा हो जाय, चाहे वह ब्रह्मदेवकी अक्ल हो, जिसको चार दिमाग हैं और जो चारों दिशाओंमें देख सकता है। कितनी ही बड़ी अक्ल हो, यह हो नहीं सकता कि हरअेक गांवके सारे कारोबारका नियंत्रण और नियोजन वहांसे हो और वह साराका सारा सबके लिअे लाभदायी हो। अिस वास्ते 'नेशनल प्लानिंग' के बजाय 'विलेज प्लानिंग' होना चाहिये। 'बजाय' तो मैंने कह दिया। बेहतर तो यह कहना होगा कि नेशनल प्लानिंगका ही अर्थ विलेज प्लानिंग होना चाहिये। और अुस विलेज प्लानिंगकी मददके लिअे जो कुछ करना पड़ेगा अुतना दिल्लीमें किया जायगा। तो यह है हमारे कार्यक्रमका अेक दूसरा अंश। अेक तो पहले बताया था विचार-शासन और यह बताया कर्तृत्व-विभाजन। तो हम जो कुछ करते हैं वह सारा कर्तृत्व-विभाजनकी दिशामें करना चाहते हैं। अिसलिअे हम गांवोंमें जमीनका बंटवारा करना चाहते हैं।

राष्ट्रकी महान संपत्ति हम खो नहीं सकते

जमीनके बारेमें जब कभी सवाल पैदा होता है, तो लोग यही कहते हैं कि 'सीलिंग' बनाओ, अधिक-से-अधिक जमीन कितनी रखी जाय यह सोचो। जब कि यह भूदान-यज्ञका आन्दोलन जोर पकड़ रहा है और जनतामें अेक भावना पैदा हो रही है तब यह बात बोली जा रही है। लेकिन मैं कहता हूं कि पहले तो कम-से-कम जमीन हरअेकको कितनी देना है यह तय करो। यह मैं क्यों कह रहा हूं? अिस वास्ते कह रहा हूं कि मैं कर्तृत्व-विभाजन चाहता हूं। जितने भी मजदूर हैं वे सारे आज दूसरोंके हाथमें काम करते हैं। काम तो वे करते हैं, लेकिन अुनमें कर्तृत्व नहीं है। गाड़ी भी चलती है, लेकिन गाड़ीको हम कर्ता नहीं कहते, क्योंकि वह चेतन-विहीन है। तो ये जो मजदूर खेतोंमें काम करते हैं, वे चेतन-विहीन जैसा काम करते हैं। हाथोंसे काम करते हैं, पांवोंसे काम करते हैं। लेकिन अुनके दिमागसे, अुनके दिलसे यह काम हो अैसा हम चाहते हैं। लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तानके मजदूरोंमें अुतनी अक्ल नहीं है, अिसलिअे अुनका दूसरोंके हाथमें रहना ही बेहतर है। तो मैं कहता हूं कि यह अहिंसाका तरीका नहीं है। अुनमें जो अक्ल है अुसका परित्याग कर दें, तो दूसरी कोअी अक्ल, दूसरा कोअी खजाना हमारे पास नहीं है।

मानो कि अेक मजदूरकी अक्लसे किसी पूंजीवाले भाअीकी अक्ल ज्यादा है। लेकिन कुल मिलाकर देशमें मजदूरोंकी जो अक्ल है, अुस अक्लकी बराबरी दूसरी कोअी अक्ल नहीं कर सकती और अुस अक्लका अगर हमको अुपयोग न मिले तो हमारा देश बहुत खो देता है। अिस वास्ते जरूरी है कि मजदूरोंकी अक्लका, जैसी भी वह आज है, पूरा अुपयोग हो। अिसके साथ-साथ अुनकी अक्ल बढ़े, अैसी भी योजना चाहिये। और अुनकी अक्ल बढ़ानेकी जो भी योजना करेंगे, अुसमें यह भी अेक योजना होगी कि अुनको जमीन दी जाय। अलावा अिसके कि हम अुनको और तालीम दें, अुनके हाथमें जमीन देना भी अेक तालीमका ही अंग होगा और अुनकी अक्ल बढ़ानेका भी वह अेक साधन होगा।

बहुत कुछ नहीं कर रहे हैं। लेकिन अगर नहीं करते हैं तो जनताकी हमारे बारेमें जो अपेक्षा बनी है वह पूरी नहीं होगी। वह पुराना ढांचा अब नहीं चलेगा, न चल सकता है।

अब मैं कुछ मिसालें दूंगा, जिनमें कुछ दोष बतलाता हूं। पर वह अपना ही दोष बता रहा हूं और वह भी किसी दूसरेके सामने नहीं, अपने ही सामने बता रहा हूं, अिस खयालसे मैं अुसका अुच्चारण करूंगा। मान लीजिये कि वर्धामें हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा है। अब वहां क्या होता होगा? विद्यार्थी आते होंगे और पढ़ते होंगे। और आज तो पहलेसे भी कम विद्यार्थी आते होंगे, क्योंकि वहां पर दो लिपियां अुर्दू और नागरी सीखनी पड़ती हैं और अुसके लिअे आज वातावरण नहीं है। परंतु फिर भी वहां जो विद्यार्थी आते हैं, वे दो लिपियां सीखना अपना कर्तव्य मानते हैं। लेकिन अगर हमारा समाज अेकरस होता तो प्रचार-सभामें आनेवाले विद्यार्थियोंको मैं चार घण्टे खेती करनेके लिअे कहता, फिर अेक घण्टा कताअी, अेक घण्टा रसोअी आदिका काम देता और ३-४ घण्टे लिपियां सीखनेमें दिये जाते। लेकिन आज जिस तरहकी संस्थायें हैं, अुनमें शक्ति-निर्माण होना संभव नहीं है। यह नहीं हो सकता कि अुर्दू-नागरी दोनों लिपियां सिखायेंगे और अुसीसे देशकी ताकत बढ़ेगी। अैसी संस्थासे दो लिपियां सीखनेवाले लड़के जरूर निर्माण होंगे, परंतु अुनमें शक्ति नहीं होगी। टुकड़ोंसे कभी काम नहीं होता है। अगर अभी अिस समय आप जो सुननेवाले हैं अुनके कान काटकर यहां रख दिये जायें और मैं जो बोलनेवाला हूं अुसकी जबान काटकर रख दी जाय, तो न आप सुन सकेंगे और न मैं बोल सकूंगा।

मैं समग्र हूं और क्योंकि आप भी समग्र हैं, अिसलिअे मैं बोल रहा हूं और आप सुन रहे हैं। यह ठीक है कि मेरी जबान काम कर रही है और आपके कान काम कर रहे हैं। तो हिन्दुस्तानी प्रचार-सभामें मुख्य काम दो लिपियां सीखनेका होगा, पर बाकीके जीवनका अंश अगर अुसमें रहेगा तो ही अुसमें समग्रता आयेगी और वहांकी अुर्दू और नागरीमें ताकत आयेगी। कअी मिसालें मैं दे

सकता हूं कि आज हमारी संस्थाओंमें ताकत क्यों नहीं पैदा होती और अुनसे जो आशा रखते हैं, वह क्यों नहीं पूरी होती। अिसका अेक ही कारण है कि हमारे संघ अलग-अलग काम करते हैं। वे काम तो अच्छा करते हैं, लेकिन अुनको यह मोह है कि हम अलग-अलग काम करते हैं अिसलिअे खास काम करते हैं और अेक हो जायेंगे तो हमारा विकास कम होगा। हम अुसमें अेकाग्र नहीं हो पायेंगे, अुतनी स्थिर बुद्धि नहीं रहेगी, कुछ जोर कम पड़ेगा। मैं कबूल करता हूं कि हरअेक योजनामें कुछ खामियां रहती हैं और कुछ खूबियां रहती हैं। लेकिन कुल मिलाकर देखेंगे तो ध्यानमें आयगा कि सर्व-सेवा-संघको अेकरस बनाये बगैर हमें शक्तिका दर्शन नहीं होगा। यह कार्य-रचनाके बारेमें हुआ।

भूदानका काम

भूदानका जो काम हमने शुरू किया है, अुसके बारेमें अब मैं कहूंगा। अेक तो भूदानका जो काम मैंने शुरू किया है, वही मेरी जबान पर है और वही मेरी वृत्तिमें है। कम-से-कम पांच करोड़ अेकड़ भूमि अिस हाथसे अुस हाथमें हम देना चाहते हैं। और यह काम १९५७ के पहले खतम करना है। अिसमें हम सब लग जायेंगे तो यह काम हो सकता है। हम यानी सिर्फ आप और हम, जो सर्वोदयवाले माने जाते हैं, ही नहीं; बल्कि कांग्रेसवाले, समाजवादी आदि सबको, जो अिस विचारको कबूल करते हैं, अिस काममें लग जाना चाहिये। और अगर हम सब लग जायेंगे, तो अिस मसलेको हल कर सकेंगे। चाहे वह बिना कानूनके हल हो जाय — पूरा यश पाकर यानी पूर्णतया जनशक्तिसे या फिर आठ-बारह आने यश पाकर ही, जिसमें थोड़ा कानूनसे होगा। जिस किसी भी तरहसे हो जाय, लेकिन प्रधानतया जनशक्तिसे होना चाहिये। अगर सोलह आने जनशक्तिसे काम होगा तो मैं नाचने लगूंगा। लेकिन प्रधानतया जनशक्तिसे होगा तो भी मैं संतोष मानूंगा। अगर हम अितना करेंगे तो १९५७ में जो चुनाव होगा, वह पक्षोंके बीच नहीं लड़ा जायगा। अैसे पक्षोंके बीच जिनमें बहुत सारे सज्जन हैं। आज हालत यह है

कि अिस पक्षमें भी सज्जन हैं और अुस पक्षमें भी सज्जन हैं। और भीष्मार्जुन युद्ध हो रहा है। हम भीष्मार्जुन युद्ध नहीं चाहते; राम-रावण युद्ध चाहते हैं। लेकिन आज तो सभी पक्षोंमें सज्जन हैं, तो फिर वे सज्जन अेक क्यों नहीं हो जाते? अगर अुनको कोअी अैसा कार्यक्रम मिल जाय, जिसमें वे अेकाग्र हो जायं, तो अुससे अुनके मतभेद खतम हो सकते हैं। हमारा कार्यक्रम अैसा ही है, क्योंकि वह बुनियादी कार्यक्रम है। समाजवादी मुझसे कहते हैं कि आपने तो यह हमारा ही काम अुठा लिया है, तो मैं कहता हूं कि मुझे यह कबूल है। और अिस वास्ते मेहरबानी करके मुझे मदद दीजिये। कांग्रेसवाले कहते हैं कि यह काम तो बहुत अच्छा है और हमें करना ही चाहिये, तो अुनसे भी मैं मदद चाहता हूं। जनसंघवाले कहते हैं कि आपका कार्यक्रम भारतीय संस्कृतिके अनुकूल है अिसलिअे अच्छा है। हम कहते हैं कि अिस तरह जब भिन्न-भिन्न विचार रखनेवाले अिसे पसन्द करते हैं, तो अगर हम सब अिस काममें लग जायं तो हो सकता है कि अेक नअी शक्तिका निर्माण हो। और जो आगामी चुनाव होगा अुसमें अच्छे-से-अच्छे लोग चुनकर आयेंगे और फिर जो सरकार बनेगी वह अेक शक्तिशाली सरकार होगी। यह अेक अुम्मीद अिस कार्यक्रमसे निकली है। तो अिस काममें हमें लगना है और १९५७ तक पांच करोड़ अेकड़ पूरे करने हैं। लेकिन अभी तो अगले साल ही २५ लाख पूरे करने हैं।

संपत्ति-दान-यज्ञ

अिसके साथ-साथ दूसरा कार्यक्रम भी मैंने शुरू कर दिया है, संपत्ति-दानका। अिसके बगैर भूदान-यज्ञ सफल नहीं होता। अिसके बगैर आर्थिक आजादीका, आर्थिक साम्यकी स्थापनाका हमारा जो कार्यक्रम है वह भी पूरा नहीं होता। आरम्भमें भी अिस चीजको मैं जानता था, पर मेरी वृत्ति थी कि 'अेक हि साधे सब सधे'। अेक साथ दो बातें नहीं हो सकतीं। भूमिका सवाल बुनियादी था। अुतना बुनियादी प्रश्न संपत्तिका नहीं था और भूमिदानके लिअे अुस समय भगवानका जैसा अिशारा था वैसा संपत्ति-दानके लिअे नहीं था। और

अुसके अिशारेसे ही काम करना मुझे अच्छा लगता है। अिसलिअे आरम्भमें मैंने संपत्ति-दानका काम नहीं शुरू किया। लेकिन बादमें जब बिहारमें भूमि-समस्या हल करनेकी बात चली, तो मैंने देखा कि भूमिदान-यज्ञ संपत्ति-दानसे ही पूरा होगा। अिसमें हम संपत्ति अपने हाथमें नहीं लेनेवाले हैं, बल्कि अुसमें भी कर्तृत्व-विभाजन हो यह मैं चाहता हूं। जो संपत्ति-दान देगा अुसीकी बुद्धिका अुपयोग अुसमें होगा। वही हमारे निर्देशके अनुसार अुसका विनियोग करेगा। लेकिन अभी सामुदायिक तौर पर यह काम नहीं करना है। अभी तो व्यक्तिगत रूपसे प्रेमसे जो काम होता है वही करना है। संपत्तिवान व्यक्तिके हृदयमें प्रवेश करनेका यह काम है। जो संपत्ति-दान देगा वह प्रतिवर्ष देगा, जिन्दगी भर देगा। अभी मेरे पास चालीस-पचास लोगोंके अैसे नाम आये हैं। अुनको मैंने काफी परखा है और परख करके ही कबूल किया है। अिस तरह अिस पर मैंने कुछ नियंत्रण ही किया है। आपमें से जिनके पास जो कुछ भी गठरी हो अुन्हें वह खोलनी चाहिये और अिसमें शरीक होना चाहिये, यही मैं मित्रोंसे कहता हूं।

सूतांजलि

अिसके अलावा तीसरी चीज जो मैं कर रहा हूं वह है सूतांजलि। यह अेक बड़ी शक्तिशाली वस्तु है। अुस शक्तिको हम पहचान नहीं सके। गांधीजीकी स्मृतिमें शरीरश्रम-प्रतिष्ठाकी मान्यताके रूपमें हमें देशकी लक्ष्मी बढ़ानेकी जिम्मेवारी महसूस करते हुअे सूतांजलि समर्पण करना है। अिसे मैंने सर्वोदयका वोट माना है। अिसके लिअे हमें गांव-गांव जाना पड़ेगा, यही अेक रुकावट है। परन्तु अिसको मैं रुकावट नहीं मानूंगा, बल्कि यह हमारे कामके लिअे अेक प्रोत्साहक वस्तु है। हमें अिस निमित्तसे घर-घर जानेका मौका मिलेगा। अिसलिअे अिसे बढ़ावा देना चाहिये। और जैसे हमने २५ लाख अेकड़ भूमि प्राप्त करनेका संकल्प किया है, वैसे ही हम लाखों गुंडियां भी प्राप्त कर सकेंगे। श्रमकी प्रतिष्ठा बढ़ानेमें अिसका बहुत अुपयोग होगा। अिसके अलावा और अेक बात भी हम अुसमें से चाहते हैं। वह यह कि आज तक

हमने जितनी संस्थायें चलाओीं, वे सब पैसेके आधार पर चलाओीं। अर्थात् पैंसेवाले लोग, जो हमारे मित्र और प्रेमी थे, सहानुभूति रखते थे, जिनके हृदय शुद्ध थे वे पैसे देते थे और हम लेते थे। पर अव जमाना बदला है और श्रमका जमाना आया है। अिसलिअे हमें अुसीकी प्रतिष्ठा बढ़ानी चाहिये। अतः हम श्रमके आधार पर हरअेक प्रान्तमें कम-से-कम अेक अेक अैसी संस्था बनाना चाहते हैं, जो श्रमका ही दान ले। अगर यह सूतांजलिकी बात फैली, तो हम अैसी संस्था चला सकते हैं और अुससे तेजस्वी कार्यकर्ता पैदा हो सकते हैं, जो प्रचारमें भी लग सकते हैं और अपना काम भी वढ़ा सकते हैं। यह अेक हमारी योजना है।

हमारा काम अेक संप्रदायका काम नहीं है। 'सर्वोदयवाले' यह शब्द हमको सुनाओी नहीं देना चाहिये। यह शब्द ही गलत है। हम केवल मनुष्यमात्र हैं। मानवके सिवा हम कुछ नहीं हैं। नहीं तो यद्यपि सर्वोदय-समाज हम अनुशासनसे नहीं बनाते हैं, तो भी वह पांथिक व्रन सकता है, साम्प्रदायिक वन सकता है और दूसरोंसे हम अलग पड़ सकते हैं। अिसलिअे यह भाषा हमारे मुखसे कभी भी नहीं निकलनी चाहिये कि फलाने कांग्रेसवाले हैं, फलाने समाजवादी हैं, आदि। यह जो दूसरे-तीसरे नाम हैं वे तो चलेंगे। क्योंकि लोग अुस नाम पर चलते हैं और अुन्होंने अुस पर पक्ष वनाये हैं, अिसलिअे वे अुसकी अुपयोगिताको मानते हैं। पर हमारा कोओी पक्ष नहीं है, वल्कि जिसको तीसरी शक्ति कहते हैं वह हम हैं। अुसका मतलव आज दुनियाकी परिभाषामें यह होता है कि जो न अमेरिकाके व्लॉकमें है, न रूसके व्लॉकमें है, अुसको तीसरी शक्ति कहते हैं। परन्तु मेरी तीसरी शक्तिकी परिभाषा यह है कि अेक तो 'हिंसाशक्ति' है, दूसरी 'दण्डशक्ति' है और तीसरी है 'हमारी शक्ति'। वह शक्ति हिंसाशक्तिकी विरोधी है, अर्थात् हिंसाशक्ति नहीं है। वह दंडशक्तिसे भिन्न है अर्थात् दंडशक्ति नहीं है। अुसीका नाम है तीसरी शक्ति। तो अुस शक्तिको हम व्यापक वनाना चाहते हैं, अिसलिअे अुसका कोओी सम्प्रदाय नहीं

बनाना चाहिये। हमको अलगसे सर्वोदयवाले नहीं बनना चाहिये, बल्कि आम लोगोंमें घुल-मिल जाना चाहिये और केवल मानवमात्र रहना चाहिये।

हरिजनसेवक, २, ९, १६–५–'५३

१७

सर्वोदय कार्यकर्ताओंके साथ विचार-विनिमय

१

सर्वोदय और राजनीति

[चांडिल-सर्वोदय-सम्मेलनमें ता० ९–३–'५३ को प्रातःकाल दिया हुआ भाषण।]

आज तीन विषयों पर मैंने अपने विचार आप लोगोंके सामने रखनेका सोचा है। अेक यह कि हम जो सर्वोदय-समाजके सेवक हैं अुनका रुख सरकारी योजनाके बारेमें या भिन्न-भिन्न राजकीय पक्षोंके विषयमें किस तरहका होना चाहिये। दूसरे, भूदान-यज्ञके कार्यको आगे बढ़ानेके लिअे क्या व्यूह-रचना करनी चाहिये। और तीसरे, कुछ अंतः-परीक्षण करके जो कमियां और दोष हम लोगोंमें दीख पड़ते हैं अुनकी कुछ चर्चा करना, ताकि दोषोंका शोधन हो। यह जो तीसरा विषय है वह कुछ गहरा है। अिसलिअे अुसकी चर्चा अभीके व्याख्यानमें मैं नहीं करूंगा, बल्कि शामका जो आखिरी व्याख्यान होगा, अुसके लिअे यह विषय मैंने रख छोड़ा है। अभीके व्याख्यानमें दो विषयोंकी चर्चा हम करेंगे।

मुक्त ज्ञान-प्रचारकी वृत्ति

भूदान-यज्ञके विषयमें मैं बोलता हूं, तो मेरा यह रिवाज रहता है कि सिर्फ अुस कामको प्रेरणा देनेके लिअे जो कहना पड़ता है

अुतना ही कहकर मैं संतोष नहीं मानता, बल्कि जिसे हम सर्वोदय-विचार कहते हैं और जो जीवनकी अेक स्वयंपूर्ण और विधायक दृष्टि है वह भी सामने रखता हूं। फिर अुसके अन्दर जो बहुतसे विषय आते हैं, अुनकी भी चर्चा कर लेता हूं। कभी-कभी यहां तक होता है कि सारे व्याख्यानमें भूदानका बहुत ही थोड़ा जिक्र आता है और अुसके अिर्द-गिर्दकी भूमिकायें लोगोंके सामने रखनेकी अधिक जरूरत होती है। और मैं वैसा ही करता हूं। कभी-कभी लोग कअी मुख्तलिफ सवाल पूछते हैं, अुनका जवाब भी देता हूं। अिस तरह अेक मुक्त ज्ञान-प्रचार जिसको कहते हैं वही मैं करता रहता हूं। मेरी दृष्टि भी दरअसल अैसी ही है कि किसी अेक विशेष कार्य पर नजर रखकर सोचनेके बजाय मुक्त चिंतन मुझे अधिक सधता है। पर अेक काम अुठाकर मैं घूम रहा हूं, यह बात नहीं भूल सकता। अिस वास्ते कुछ विषय-मर्यादा या चिंतन-मर्यादा होती है। लेकिन मेरा स्वभाव मर्यादामें चिंतन करनेका नहीं है।

अेक प्रश्न

लोग तरह-तरहके सवाल पूछते हैं और खास करके कम्यूनिटी प्रोजेक्ट या नेशनल प्लानिंगकी योजना या दूसरे अुन-अुन पक्षोंके खास अुसूल, जिनको हम आअिडियालॉजी कहते हैं, अुन सबके विषयमें सवाल पूछे जाते हैं और मैं अुत्तर देता हूं। अेक भाअीने मेरा अुत्तर देनेका जो तरीका है अुसके विषयमें सवाल पूछा कि "जहां तक हो सकता है आप कोशिश करते हैं कि भिन्न-भिन्न पक्षोंकी और सरकारकी जो योजना है, अुसके साथ अधिकसे अधिक सहयोग कैसे हो। यह बात जंचती नहीं है। जरूरत अिस बातकी है कि हमारे विचार दूसरे पक्षोंके या सरकारके विचारोंसे कैसे भिन्न हैं और कुछ अंशोंमें तो विरोधी हैं, यही बात लोगोंके सामने अधिक स्पष्ट होनी चाहिये; बजाय अिसके कि अुनके विचारोंके साथ हम अधिकसे अधिक अपना सहयोग देनेकी कोशिश करें।" अिस तरहका आक्षेप या प्रश्न कहिये, अेक सर्वोदय प्रेमीने पूछा है। मैंने सोचा कि मेरे सारे चिंतनके पीछे जो दृष्टि है, वह मैं सर्वोदय-सम्मेलनमें ही रखूं।

सरकारी योजनाके अच्छे अंशोंकी पुष्टि

पहले तो मैं सरकारी योजना हाथमें लेता हूं। अुस योजनाके बारेमें हमारा जो मुख्य आक्षेप है, वह यह है कि अुसकी दृष्टिमें फरक है। अिस अेक आक्षेपके पेटमें बाकीके सारे आक्षेप आ जाते हैं। अिस मुख्य वस्तुका विश्लेषण प्लानिंग-कमीशनके सामने जितनी स्पष्टतासे मैं रख सकता था, मैंने रख दिया था। अुन लोगोंने मेरे विचार समझनेकी कोशिश की। और कहना चाहिये कि प्लानिंग-कमीशनकी जो नअी रिपोर्ट है — जिसे वे आखिरी नहीं समझते और जो संशोधनकी पात्र है अैसा मानते हैं — अुसमें पहली रिपोर्टकी तुलनामें काफी संशोधन और सुधार हैं; तिस पर भी जहां दृष्टिभेद ही है वहां हमारी और अुनकी योजनामें बहुत फरक पड़ जाता है। अुसको मैं दोहराता नहीं हूं। कोअी सवाल पूछता है तो अुतनी सफाअी कर देता हूं। कुल मिलाकर सरकारी योजनाके प्रति मेरी सहानुभूति प्रगट होती है, अिस तरहका आभास लोगोंको होता है और वह सही है। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि अेक बातको हम बुद्धिभेद पैदा करके बिगाड़ें। यह शक्ति आज हममें है कि सरकारी योजनाको हम नाकामयाब बनाना चाहें तो बना सकते हैं। लेकिन यह कोअी बड़ी शक्ति नहीं है। आज हम अपनी योजना लोगोंके सामने रखकर लोगोंको अुस पर अमल करनेके लिअे राजी करनेकी या अुस प्रोग्रामको लोगोंके सामने रखकर हम चुन आयें और हमारी अुस तरहकी सरकार बनायें अैसी शक्ति नहीं रखते। तो किसी बातको बिगाड़नेकी जो शक्ति हम रखते हैं, अुसका अुपयोग करके लोगोंमें अश्रद्धा और बुद्धिभेद पैदा हो और जो कुछ अुस योजनामें अच्छाअी है अुस पर भी अमल न हो, यह मैं अहिंसाकी दृष्टिसे अुचित नहीं मानता। हमेशा यह होने ही वाला है कि दंड-शक्ति पर आधारित और प्रचलित परिस्थितिके बहुत आगे न जा सकनेवाली सरकार जो योजना करेगी, वह हमारी योजनाके अत्यन्त अनुकूल नहीं होगी। अुस हालतमें अुसमें जो अच्छाअी रहेगी, अुसके साथ अनुमति प्रगट करना और अुसके लिअे जनतामें श्रद्धा बनी रहे

अैसी कोशिश करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूं, अेक अहिंसक विचारकी दृष्टिसे। नहीं तो केवल हम खंडन करते चले जायं, तो आज लोगोंमें अुत्साहकी बहुत कमी है, आलस्य है, अविश्वास है वह और भी बढ़ेगा। अिसलिअे अितना हो सकता है कि जो योजना अुन्होंने पेश की है अुस पर लोग अमल करें। लेकिन अुसमें से हम कुछ पायेंगे नहीं। हम पायेंगे तो तब जब हमारी योजना चले। अिसलिअे मैं यह अुचित मानता हूं कि अपनी योजना हम जनताके सामने रखते जायं और साथ-साथ सरकारी योजनामें जो अच्छे अंश हैं अुनके लिअे हमारी अनुमति प्रगट करते जायं।

दूसरेकी नीयत पर भरोसा रखें

दूसरी बात यह है कि जब हम किसी बातका खंडन करते हैं, तो सामनेवालेकी नीयत पर भी आक्षेप करते हैं। अिसे मैं अन्याय मानता हूं। जब मैं अुसकी नीयत पर आक्षेप करता हूं, तो मेरी नीयत पर संशय रखनेका अधिकार मैं अुसको देता हूं। अिस तरह अुसके हाथमें अेक अधिकार देना मैं अपने हितमें अच्छा नहीं मानता और चाहता हूं कि मेरी नीयत पर अुसका विश्वास होना चाहिये और मेरा भी अुसकी नीयत पर विश्वास होना चाहिये।

पूंजीवाद और सर्वोदय-विचार

मैं जानता हूं, मानता हूं, और कभी-कभी कहता भी हूं कि सरकार पर पूंजीवादी असर बहुत है। लेकिन वह अिस वास्ते नहीं है कि वे पूंजीवादको चाहते हैं, बल्कि अिस वास्ते है कि कुछ तो वे अपनेको लाचार समझते हैं और प्रचलित परिस्थितिमें पूंजीवादियोंकी अक्ल और शक्तिका अुपयोग करना चाहते हैं, और कुछ अुनके विचार भी अुस वादके लिअे अनुकूल हैं। और यह जो मैं कह रहा हूं वह न सिर्फ अभीकी सरकारके चलानेवालोंके लिअे कहता हूं, बल्कि कम्यु-निस्टोंके लिअे भी यही कहता हूं। हमारी योजनामें विकेन्द्रीकरण यानी विभाजन है — अुत्पत्तिका और बंटवारेका भी। लेकिन कम्युनिस्टोंके अुत्पादनमें विकेन्द्रीकरणका विचार नहीं है। और जो अपनेको लेफ्टिस्ट

यानी प्रगतिवादी मानते हैं, अुनमें और पूंजीवादियोंमें अिस विषयमें वहुत फरक नहीं है कि अुत्पत्ति केन्द्रित की जाय, वड़े-वड़े यंत्रोंके जरिये की जाय। फरक विभाजनमें है। लेकिन हमारा फरक संपत्तिके विभाजन और अुत्पादनके तरीकेमें भी है। तो अेक अंशमें वे अिच्छासे पूंजीवादी हैं अैसा भी कह सकते हैं, और अुस अंशमें कम्युनिस्ट भी पूंजीवादी हैं। हम भी अैसे हैं जो पूंजीवादको किसी तरहसे मान्यता नहीं देते हैं। तो यह है हममें और आजकी सरकार तथा कम्युनिस्टोंमें भेद। अतः अिस दृष्टिसे जव हम सोचते हैं, तो अुनकी नीयतके वारेमें शंका नहीं रख सकते, वल्कि विचारकी सफाअी हो जाती है। जिस विचार-सरणीमें और जिस हालतमें वे पड़े हैं, अुस विचार-सरणीमें और अुस हालतमें अगर हम होते तो किस तरह करते, यह जव हम सोचने लगते हैं तो अैसा दीख पड़ता है कि हम भी करीब-करीव वैसा ही करते जैसा कि वे आज करते हैं। तो यह मेरा अेक आजकी सरकारके वारेमें सर्वसामान्य रुख है।

कम्यूनिटी प्रोजेक्टके प्रति सर्वोदयवालोंका रुख कैसा हो?

लेकिन अिसके साथ-साथ मैंने परसोंके व्याख्यानमें यह भी स्पष्ट किया है कि हमारी आंखोंके सामने अेक निश्चित मार्ग है और हमारे पांव तो अुसी मार्ग पर चलने चाहिये। लोग मुझे पूछते हैं कि सरकारकी योजनामें हम कहां तक सहयोग दें और कहां तक सहयोगिताकी वृत्ति रखें? तो मैं कहता हूं कि अुनकी जो योजना हमको मान्य होगी और सर्वमान्य भी, अुसमें हम सहयोग जरूर दे सकते हैं, लेकिन हर हालतमें हमें अपनेको मुक्त रखना चाहिये। यह हालत नहीं निर्माण होनी चाहिये कि हमारी कोअी अेक कम्यूनिटी प्रोजेक्ट है और अुसमें हमारे हाथ फंसे हैं। वे हमसे जो सलाह-मशविरा करना चाहेंगे, कर सकते हैं। जो कुछ नैमित्तिक मदद पहुंचानी है वह भी पहुंचा सकते हैं। लेकिन अुस तरहकी योजनाकी जिम्मेवारी अगर हम अुठाते हैं, तो मैं मानता हूं कि हम गलती करते हैं। लेकिन हमारे सर्वोदय-समाजके लोगोंमें अिस तरह चलता है—और वह ठीक भी है, क्योंकि सर्वोदय-समाज अेक मुक्त समाज है, जिसमें हरअेक मनुष्य खुद सोचकर कोअी

काम करता है—कि हमारे सेवकोंमें से कुछ लोग कम्यूनिटी प्रोजेक्टको कुल मिलाकर अच्छा समझकर हाथमें लेते हैं। दूसरे कुछ अैसे हैं जो अुससे बहुत नफरत करते हैं और कहते हैं कि यह देशको बिलकुल ही बरबाद करनेवाली है। और तीसरे कुछ अैसे हैं जो कहते हैं कि अिसमें कुछ अच्छाअी है, कुछ नहीं भी है। लेकिन हमें अुस तरहकी योजना करनेके लिअे अगर सरकार कहती है, तो कुछ शर्तें हम सरकारके सामने रखें और अुनको वह मंजूर करे, तो हम भी अपने ढंगसे काम कर सकते हैं। अिस तरह तीन प्रकारकी दृष्टियां हैं। मेरी वृत्ति है—"हाथी चलत है अपनी गतिमां"। आगे जो कविने लिखा है वह कहनेका अधिकार कविका है, मेरा नहीं। जितना अुच्चारण मैंने किया अुतना अधिकार मेरा है। तो हाथी अपनी गतिमें चलेगा और अपना ही काम करता रहेगा। अपने चौवीस घंटे और अपने सारे चिंतनका अुपयोग अपने विचारोंको बढ़ावा देनेमें करेगा। दूसरोंके खंडनमें जब हम पड़ते हैं, तब अपनी रचना करनेके काममें शक्ति कम लगती है। अिसको मैं शक्तिक्षय मानता हूं। अिस वास्ते भी मैं खंडनमें नहीं पड़ता और मेरा विचार है कि हमें खंडनमें नहीं पड़ना चाहिये। अिधर तो हम अुनका खंडन करते हैं और अुधर अुनकी योजनामें भी फंस जाते हैं। ये दोनों रास्ते हमारे लिअे गलत हैं। और दोनोंसे हमारा नुकसान होगा अैसा मैं मानता हूं।

पक्ष सिर्फ दो : सज्जन और दुर्जन

दूसरी बात है कि ये जो भिन्न-भिन्न राजकीय पक्ष हैं, अुनके विषयमें हमारी नीति क्या होनी चाहिये? मेरा प्रयत्न तो यह है कि ये सारे राजकीय पक्ष मिट जायं। मेरे प्रयत्नके बावजूद वे रहें तो रहें, लेकिन मेरी कोशिश यह है कि अेक सर्वमान्य कार्यक्रम हम लोगोंके सामने रखें, जिसे पूर्ण करनेमें सारे लोग पक्षभेदोंको भूलकर अपना सहयोग दें। तो आज जो पक्षभेद बने हैं वे कम हो जायेंगे और मतकी अेकता बहुत होगी; और जब प्रत्यक्ष कार्य भी अैसा मिला है, जिससे देश आगे बढ़ता है, जनशक्ति बढ़ती है और अुस काममें सब लोग मिल जाते हैं, तो आगे जाकर १९५७ में जो

चुनाव होगा, वह सज्जन-सज्जनके वीच नहीं होना चाहिये। आज तो कौरव-पांडव चलता है। कौरवोंके पक्षमें कुछ अच्छे लोग हैं, तो पांडवोंके पक्षमें कुछ वुरे लोग हैं। तो दोनों पक्षोंमें अच्छे-वुरे लोग होते हैं। और अेक सज्जनके सामने दूसरा सज्जन खड़ा होता है। यह हालत ही पैदा नहीं होनी चाहिये। होना यह चाहिये कि सारे सज्जन अेक वाजू रहें और दुर्जन दूसरी वाजू। सज्जनता विरुद्ध दुर्जनता, अैसा ही होना चाहिये।

भारतीय लोकसत्ताका नमूना — 'पांच वोले परमेश्वर'

लेकिन पश्चिमसे अेक लोकसत्ता आअी है, जो मानती है कि दो पक्ष होने चाहिये। और अुनके सहयोगी संघर्षसे राष्ट्र ठीक रास्ते पर रहता है, दोपोंका संशोधन होता है, अित्यादि कल्पनायें अुस डेमॉक्रेसीमें पड़ी हैं। मेरा यह मानना है कि अुस विचारमें कुछ अच्छाअी है, लेकिन अुसमें से जो दोप पैदा होते हैं अुनका निराकरण हमको करना चाहिये। और अिसलिअे मैंने कहा था कि हमारा यानी हिन्दुस्तानका सियासी अनुभव हमारी ग्राम-पंचायतमें रहा है, जहां यह अुसूल था कि 'पांच वोले परमेश्वर।' पांच वोले परमेश्वरका अर्थ यह होता है कि अेक वोले, दो वोले परमेश्वर तो होता ही नहीं, लेकिन तीन या चार वोले परमेश्वर भी गलत है। यानी आज यह सियासी मान्य कानून है कि जो मेजॉरिटी कहेगी वैसा होगा। लेकिन हमने तो यह माना है कि सारे पंचोंकी अेक राय होनी चाहिये। पांचों पंच अेक राय वनायेंगे, तव कोअी प्रस्ताव पास होगा। अिसको मैं पांच वोले परमेश्वर कहता हूं।

अिस विचारसे अगर हम काम न करें, तो आज जो सारी दुनियामें मेजॉरिटी-माअिनॉरिटीके सवाल पैदा हुअे हैं वे मिटेंगे नहीं।

सर्व-सम्मत विषयों पर अमल हो

कोशिश यह होनी चाहिये कि कुल मिलाकर देशका विचार शुद्ध कैसे हो? आज भिन्न-भिन्न विचारोंके होते हुअे भी अुनमें अगर कोअी समान अंश है, और वहुत अंश समान होता है — सज्जनोंके

विचारोंमें जो मतभेद होते हैं वे बहुत गौण होते हैं और अुनके अंदर काफी अेकता होती है, अिसलिअे जो समान अंश है — अुस समान अंशका ही कार्यक्रम बनना चाहिये। और जो भिन्न अंश है वह चर्चाका विषय होना चाहिये, क्रियाका विषय नहीं। मतलब यह कि जब तक सज्जनोंमें किसी अेक विषय पर मतभेद है तब तक चार विरुद्ध पांच सज्जन, अैसा निर्णय करके अुस पर अमल करना मैं गलत मानता हूं। मेरा मानना है कि सज्जनोंमें जिस विषय पर मतभेद है, वह आचरणके लायक नहीं रहा। अुस पर चिंतन होना, चर्चा होना जरूरी है। और जिस विषय पर मतभेद नहीं रहा, अुस पर अमल होनेकी जरूरत है। लोगोंके सामने प्रत्यक्ष अमलके लिअे वही विषय आना चाहिये, जिसके बारेमें मुख्तलिफ सज्जनोंमें मतभेद नहीं है। सज्जन किसे कहें, किसे न कहें अित्यादि चर्चा अुठ सकती है। अुसमें पड़नेका मेरा विचार नहीं है। वह अभीका विषय नहीं है। लेकिन मैंने अपना विचार कह दिया कि ये जो भिन्न-भिन्न पक्ष हैं, अुनकी भिन्नता मिटानेमें हमें पुरुषार्थ बताना चाहिये। और गीताने यही कहा है कि ये नाहक भेद अूपरके दीखते हैं। लेकिन अुनमें कोअी अेक विशेष वस्तु होती है, अुसको हमें पहचानना चाहिये। तब अेकताकी भूमिका पैदा होती है, नहीं तो दुनियामें भिन्न-भिन्न विचार तो रहने ही वाले हैं। परन्तु भिन्न विचार विचारमें रहें तो अच्छा है। यह अेक तत्त्वज्ञानका अुसूल हमारे शास्त्रकारोंने माना है।

हिन्दू धर्ममें आचरण-शास्त्र पर मतभेद नहीं है

आपने देखा होगा कि हिन्दू धर्ममें जितने दर्शन हैं — आस्तिक दर्शन भी हैं और नास्तिक दर्शन भी हैं; और कुल मिलाकर कोअी भी दर्शन हिन्दू धर्ममें पच जाता है। और वे अेक-दूसरेके खिलाफ काफी तीव्रतासे भी बोलते हैं। और विचारकी स्वतंत्रता जितनी मैंने संस्कृतमें पायी, अुतनी और किसी साहित्यमें नहीं पायी। साक्षात् प्रहार अेक-दूसरोंके विचारों पर होता है, वह अेक देखनेकी चीज है। लेकिन रामानुज और शंकरके विचारोंमें जो भेद है, वह दोनों

अेक-दूसरेके विरुद्ध प्रगट भी कर लेंगे और अुसकी चर्चा-चिन्तन भी करेंगे। लेकिन जिसको आचरण-शास्त्र कहते हैं अुसमें अुनका मतभेद नहीं है। सत्यको दोनों मानेंगे, अहिंसाको दोनों मानेंगे, सदाचारको दोनों मानेंगे, कुछ विधियोंको दोनों मानेंगे, कुछ निषेधोंको दोनों निषिद्ध मानेंगे और अुसको धर्म कहेंगे। यह वात नहीं है कि रामानुजके राज्यमें सुवह अुठना चाहिये और शंकरके राज्यमें सुवह नहीं अुठना चाहिये।

सर्वमान्य विषयोंका ही प्रोग्राम वनायें

तो अिस तरह जहां क्रियाका क्षेत्र है, वहां अगर हम अेकताके आधार पर आगे वढ़ते हैं, तो देश आगे वढ़ता है और समाजमें स्थिरता आती है। और जो विचार-भेदका विषय है, अुसकी हम चर्चा करें, अुसके वारेमें जितनी वारीक छानवीन हो सकती है अुतनी करें। जव तक मेरा विचार आपको जंचता नहीं, तव तक मैं आपको समझाता रहूंगा। और जव तक आप अुसको समझते नहीं, तव तक आप अुसको कवूल न करें। यह सव होना चाहिये और पूरी स्वतंत्रतासे और मुक्ततासे होना चाहिये। परन्तु जहां आप अेक प्रोग्राम तय करें वहां वही प्रोग्राम तय होना चाहिये, जिसके वारेमें सव सज्जनोंकी मान्यता है।

हरिजनसेवक, २३–५–'५३

२

हमारा तात्कालिक कार्यक्रम

[चांडिल-सर्वोदय-सम्मेलनमें ता० ९–३–'५३ को दिया गया भाषण।]

भूदानका अीश्वरीय संकेत

अव दूसरी वात यह है कि हमारे संघके लिअे व्यूह-रचना कैसी होनी चाहिये। यह काम करीव-करीव दो साल हुअे तेलंगानामें आरम्भ हुआ। जिस गांवमें यह आरम्भ हुआ अुस गांवके भाअी अिस सम्मेलनमें

मौजूद हैं। पहले दिन अुन्होंने हमें दान दिया। अस्सी अेकड़ जमीन हरिजनोंने मांगी और अुन्होंने सौ अेकड़ जमीन दी। वे भाअी यहां हैं। अुनसे आप मिलकर बात कर सकते हैं कि अुनके गांवके वातावरणमें किस तरह यह बात पैदा हुअी। अुस रोज अीश्वरका मैंने अेक अिशारा पाया और मनमें सोचा कि अब मुझे क्या करना चाहिये। अगर अीश्वरका अैसा अिशारा न पाकर स्वतंत्र बुद्धिसे मैं सोचता, तो भूमिका दान मांगकर भूमिका मसला हल करनेकी बात मुझे सूझनेवाली नहीं थी। हां, मन्दिर, मस्जिद, मठ अित्यादिके लिअे सौ, डेढ़ सौ, पांच सौ, हजार अेकड़ तकका दान मिल सकता है और लोगोंने पहले हासिल भी किया है। हम भी अगर चाहते तो हासिल कर सकते थे। लेकिन भूमिका मसला हल करनेका मतलब करोड़ों अेकड़ होता है और अुतनी भूमि लोगोंकी सद्‌बुद्धि जाग्रत करके प्राप्त करनेकी हिम्मत स्वतंत्र रीतिसे मुझमें नहीं थी। लेकिन जब वह अिशारा हुआ, तब मैंने सोचा कि कार्य तो मेरी बुद्धिसे बहुत ही कठिन लगता है, फिर भी अितना अिशारा मिलने पर मैं अिसको हाथमें न लूं, तो अहिंसा डरपोक साबित होगी और वह काम नहीं करेगी। अिसलिअे यद्यपि यह कार्य कठिन है, फिर भी अीश्वर पर भरोसा रखकर मुझे वह हाथमें लेना चाहिये। अुस वक्त मैंने अपने साथियोंसे कोअी सलाह-मशविरा नहीं किया था; क्योंकि अगर मैं सलाह-मशविरा करता तो यह प्रोग्राम अुठा लो, अैसी सलाह कोअी भी मुझे देनेवाले नहीं थे। यही कहते कि यह बात होनेवाली नहीं है। अगर किसी अेकाध गांवमें संयोगवश हो गयी तो दूसरी बात है। लेकिन सारे देशके लिअे अिस तरहका प्रोग्राम व्यवहार्य नहीं है। अैसा ही अभिप्राय अुन लोगोंका होता, जो मेरे नजदीकसे नजदीक थे। मेरा भी अैसा ही अभिप्राय होता, अगर अीश्वरका जो अिशारा मुझे मिला वह नहीं मिला होता। और दूसरे किसीको मिला होता और वह मुझे पूछता, तो मैं भी अुसे यही कहता कि भाअी, अेक गांवमें अेक बात बनी है, लेकिन अुस परसे हम कोअी प्रोग्राम निश्चित नहीं कर सकते, मनमें संकल्प नहीं कर सकते। अिसलिअे

लोगोंने आपसमें बैठकर गंभीरतापूर्वक ओीश्वर-स्मरणके साथ मन-ही-मन संकल्प भी कर लिया है।

बिहारकी भू-समस्या हल करनेका निश्चय

यह तो अुत्तर-प्रदेशमें हुआ। अुसके बाद मेरे मनमें आया कि अगर मैं अिस तरह हिन्दुस्तानमें घूमा करूं, तो हर साल दो-तीन लाख अेकड़ जमीन मुझे मिल सकती है। पूरा हिन्दुस्तान घूमनेमें पांच-छह साल लगेंगे, तो दस-बीस लाख अेकड़ जमीन हो सकती है। लेकिन अुतनीसे समस्या हल नहीं होगी। और अेक निश्चित मुद्दतमें वह समस्या हल नहीं करते हैं, तो जमानेकी रफ्तार पहले जैसी नहीं है, तेज है। अगर अिस तरहका प्रोग्राम सौ साल तक चलानेका कहेंगे तो वह ठीक नहीं होगा। लोकोपकारका साधन तो वह बनेगा, लेकिन समाज-रचना बदलनेका साधन नहीं बनेगा। अिसलिअे कहीं तो मसलेके हलकी ही चेष्टा करनी चाहिये। तो मुझे लगा कि बिहार अैसा प्रान्त है, जो बहुत बड़ा भी नहीं, छोटा भी नहीं, और जहां कुछ सद्भावनाके अंश हैं — मैं नहीं कहता कि दूसरे प्रदेशोंसे कुछ ज्यादा होंगे, लेकिन कम भी नहीं होंगे। और मेरी श्रद्धा कहती थी कि बुद्ध भगवानने जहांसे सारी दुनियाको अहिंसाका सन्देश दिया, अुस भूमिमें अहिंसाके लिअे विशेष अनुकूलता होगी। अिसलिअे बिहारका काम हाथमें लिया जाय और निश्चय किया जाय कि यहांका मसला हल करके ही आगे बढ़ा जायगा। और बिहारमें जिस रोज प्रवेश किया, अुस रोज यह निश्चय जाहिर भी कर दिया गया।

बिहारका प्रारंभिक अनुभव

लेकिन बिहारमें प्रवेश करने पर दूसरा ही अनुभव आया और अेक चट्टान-सी लगी। तो मैंने सोचा कि जहां चट्टान लगती है, वहां मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है। जब हम अुस चट्टानको तोड़ते हैं, तो नीचे पानीका बहुत सुन्दर चश्मा बहता मिलता है। चट्टानके नीचेसे जो पानी आता है, वह बहुत साफ और स्वच्छ होता है। अिसलिअे मेहनत तो करनी पड़ेगी, लेकिन अपना काम अिस

प्रान्तमें बहुत निर्मल होगा। अिस तरह "अस्तीत्येन अुपलब्धव्य" अुपनिषद्में हमें यही समझाया है कि होनेवाला है — "अस्ति", "नास्ति" की भाषा मत बोलो। तो मेरे मनमें कभी यह नहीं आया कि मने यहां संकल्प तो किया, लेकिन मुश्किल मामला दीखता है। तथापि दो महीने अैसे गये, जब कि बहुत कम दान मिला। और सारे हिन्दुस्तान पर यह असर हुआ कि बिहारमें मामला बहुत कठिन है, क्योंकि अुत्तर-प्रदेशमें आखिरमें कामकी गति बहुत बढ़ गअी थी। वही रफ्तार बिहारमें भी आगे रहेगी, अितना ही नहीं, बल्कि और तेज होगी अैसी अपेक्षा थी। पर वैसा नहीं हुआ। और सारण जिलेमें बावजूद अिसके कि अुस जिलेके नागरिक हमारे राष्ट्रपति हैं और अुन्होंने अपने हस्ताक्षरसे पत्रक निकाला था कि 'अिस कामको बिहारमें बढ़ावा दिया जाय, खास करके सारण जिलेमें विशेष प्रगति होनी चाहिये' और हजारोंकी तादादमें अुस पत्रककी प्रतियां बांटी गयीं, हमको वहां पर पन्द्रह दिनमें मुश्किलसे अेक हजार अेकड़ जमीन मिली। और कुछ दिन तो अैसे भी गये जब दो अेकड़ जमीन मिली। तो जिस रोज दो या तीन अेकड़ जमीन मिली, अुस दिन मैंने कार्यकर्ताओंको कुछ डांटा और अुन्होंने कुछ रफ्तार बढ़ायी। अिस तरहके अनुभव आरम्भमें आये।

बुद्ध भगवानकी तपस्या-भूमिमें अेक लाखका संकल्प

अैसा अनुभव होते हुअे भी जहां मैंने गया जिलेमें प्रवेश किया वह देहात छोटासा था। रातको मुझे अकसर सोने पर फौरन नींद आ जाती है। लेकिन अुस रोज नींद आ तो गअी जल्दी, मगर अुड़ भी गअी जल्दी। और मैं सोचने लगा। करीब अेक बजा होगा। मुझे सूझा कि गया जिलेमें प्रवेश हुआ है, यह तो बुद्ध भगवानकी तपस्याका जिला है; अलावा अिसके करोड़ों हिन्दू यहां श्राद्धके लिअे आते हैं। तो यह श्राद्धका स्थान है। श्राद्धका मतलब ही यह होता है कि श्रद्धाका स्थान। तो सारे हिन्दू धर्मकी श्रद्धाका यह स्थान है और बौद्ध धर्मके अुद्गमका स्थान है, यह कोअी छोटी बात नहीं है। अिसलिअे यहां पहली किस्तके तौर पर अेक लाख अेकड़का संकल्प करो। और सुबह अुठनेके

बाद जो दो-चार साथी थे अुनके सामने जब हम गांवमें पहुंचे तब यह बात रखी और अुन्होंने अुसको अुठा लिया। अब तक जो काम हुआ वह जाहिर है। चार लाखका कोटा तय किया गया। यहांके कांग्रेसवालोंने अुसको अुठा लिया। अिस पर भी टीका की जाती है। लोग कहते हैं कि अब भूदान किधर चला? कांग्रेसवालोंने अिसको हथियाया यानी अब यह हलचल बदमाशोंके हाथमें चली गयी। स्पष्ट शब्दोंमें अिस तरह जब हम दूसरोंके बारेमें सोचने लगते हैं, तो हम अहिंसाको नहीं समझते। हममें तो अैसी ताकत होनी चाहिये कि जिस किसीने हमारा हाथ पकड़ा, अुसको हमने अपने कब्जेमें कर लिया।

अेक प्रान्तमें मसला हल करें

अब मेरे मनमें आया है, जिसको मैं व्यूह-रचना कहता हूं, कि बिहारमें अधिकसे अधिक शक्ति लगाअी जाय और अुसमें भी अेक-दो जिलोंमें ही पूर्ण शक्ति लगाअी जाय, ताकि अुन जिलोंका मसला हल हो। तो गया या और किसी जिलेमें तीन लाख अेकड़ जमीन मिल जाती है और बिना कानूनके जमीनका बंटवारा हो जाता है — अर्थात् अुसमें सरकारी मदद आयेगी, कानूनकी नहीं; बल्कि सरकारके पास जो जमीन पड़ी है, वह भी लेनेकी बात आयेगी। क्योंकि जहां सारे प्रान्तमें दो लाखकी बात करते हैं, वहां सरकारी जमीनका कोअी सवाल नहीं, लेकिन जहां सारे प्रान्तकी भूमिकी समस्या हल करनेकी बात होती है, बत्तीस लाख, चालीस लाख, अेक करोड़की भाषा शुरू होती है, वहां सरकारी जमीन अवश्य लेनी है। लेकिन वह आखिरमें लेनी है, आरम्भमें नहीं — और कुल मिलाकर सबके सहयोगसे सही, अेक जिलेमें बिना कानूनके यानी बिना दंडशक्तिके पूरा काम होता है, तो कोअी वजह नहीं कि हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सेमें भी वैसा न हो। तो मेरी दृष्टि यही रही कि अैसा कोअी नमूना हमें पेश करना चाहिये, जिसका परिणाम सारे भारत पर हो। अुससे निष्ठा बढ़ेगी, विश्वास पैदा होगा कि यह कार्यक्रम सिद्ध हो सकेगा। अेक दफा विश्वास पैदा हो गया कि सारे कार्यकर्ता अुसमें जुट जायेंगे और मसला हल होनेमें देर नहीं लगेगी, यह मैंने सोचा।

पहली मांग : "सर्वधर्मान् परित्यज्य . . ."

अतः अभी आप लोगोंसे मेरी मांग है कि अपने-अपने प्रांतमें जाकर अेक साल तक अपना पूरा समय अिसमें दीजिये, बाकीकी सब वस्तुअें छोड़कर दीजिये, सब अच्छी-अच्छी वस्तुअें छोड़कर भी दीजिये। यह मैं कोअी नअी बात नहीं बता रहा हूं। भक्तिमार्गमें यह आदेश दिया है कि आपको अधर्मको तो छोड़ना ही पड़ता है, धर्मको भी छोड़ना पड़ता है। "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" — सब धर्मोंको छोड़कर मेरी शरणमें आ जा — यह है भक्तिमार्ग। जहां हम भक्तिकी बात करते हैं वहां छोटे-छोटे धर्मोंकी अगर गुंजाअिश रखते हैं, तो हम निष्ठावान नहीं हो सकते और हमारी भक्ति सफल नहीं हो सकती। यह भक्तिमार्गकी विशेषता है कि अुसमें सब धर्मोंका त्याग करना पड़ता है। और यह जो अपना मार्ग है वह भक्तिमार्ग है; क्योंकि अगर हम सारे समाजको अेकरस बनाना चाहते हैं, तो यह भक्तिके सिवा हो नहीं सकता। प्रेमभाव पैदा करना चाहते हैं, तो वही हमारा मुख्य धर्म है और बाकीके छोटे-छोटे काम और छोटे-छोटे धर्म, जो हमने मान लिये, वे अिस भक्तिके लिअे छोड़ देने पड़ते हैं। अिसलिअे आप लोग सब धर्मोंका त्याग करें और अिस काममें लग जायं, यह मेरी पहली मांग है।

दूसरी मांग : बिहारके लिअे समय दें

दूसरी मांग यह है कि आपके प्रान्तमें जो लोग काम करेंगे वे तो करेंगे ही; लेकिन भिन्न-भिन्न प्रान्तोंके कुछ और लोग भी अगर बिहारके लिअे थोड़े दिन, दो-चार महीने दें तो अच्छा होगा। अुससे दो लाभ होंगे। अेक तो बिहारमें आज दूषित वातावरण है यानी पक्षभेद है। मैं कोशिश कर रहा हूं कि वह पक्षभेद मिटे। वह भगवानकी कृपासे ही मिटेगा अितना गहरा है। और अुसके मूलमें कुछ नहीं है, बच्चोंके जैसी बात है। कोअी कल्पना-भेद या विचार-भेद भी नहीं है। पर वह है अिसलिअे बाहरके जो लोग यहां होंगे, अुनके तटस्थ होनेके कारण अुनकी अिसमें मदद होगी। अलावा अिसके, अिस काममें अुनको कुछ

तालीम मिलेगी। यहां कुछ वातावरण है। अिसलिअे अैसे वातावरणमें काम किस तरह करना, अिसका थोड़ा शिक्षण मिलेगा। अुनके प्रान्तमें जब वे जायेंगे तो अिस शिक्षणका अुनको लाभ मिलेगा। मैं यह नहीं चाहूंगा कि अपनी जगहका काम क्षीण करके लोग यहां आयें। लेकिन थोड़ी संख्यामें दो-चार भाअी, अेक-अेक प्रान्तके छोटे-छोटे कार्यकर्ता, विहारके लिअे समय देंगे तो अच्छा होगा। यह मेरी दूसरी मांग है।

तीसरी मांग : बिहारी लोग अेक जिला पूरा करें

तीसरी मांग विहारवालोंसे ही है। वे अेक-दो जिले निश्चित करें और अुनमें अपनी अधिक ताकत लगायें और बाकी बची ताकत दूसरी जगह खर्च करें। अगर वे अैसा करेंगे और दो-तीन महीनेके अन्दर अेकाध जिला पूरा करेंगे, तो मुझे बहुत ही आनन्द होगा। लोग मुझे पूछते हैं कि अगर आप विहार प्रान्तमें ही गिरफ्तार रहे और दूसरे प्रान्तमें न आ सके, तो क्या यह भूदानके कामके हितमें होगा? अिस तरहका व्यूह ठीक होगा क्या? मेरा अुत्तर यह है कि वही ठीक होगा। और वही ठीक होगा, क्योंकि अुसका परिणाम यह होगा कि किसी अेक जगह पर कुछ निश्चित मुद्दतमें हम कार्यक्रम पूरा कर सकेंगे। फिर तो सिर्फ गणितका ही सवाल रह जाता है कि अगर अितने-अितने कार्यकर्ता मिल जाते हैं, तो अितने दिनोंमें हम सारे हिन्दुस्तानका काम पूरा कर सकते हैं। अगर अुतने कार्यकर्ता नहीं मिलते हैं, तो काम पूरा नहीं होगा, यह दूसरी बात है। लेकिन कार्यकर्ता मिलते हैं, तो काम पूरा हो सकता है। अिस तरहका दर्शन होगा, जिसकी मैं अिस वक्त बहुत जरूरत मानता हूं।

अगले साल अन्य प्रान्तमें जाना चाहूंगा

यद्यपि मैंने विहारवालोंसे कह दिया है कि जब तक यहांका काम पूरा नहीं होता है तब तक मुझे यहीं रहना है, फिर भी मैं चाहता हूं कि अगला सम्मेलन अिस प्रान्तमें न हो, किसी दूसरे प्रान्तमें हो। आजकल हालत अैसी है कि जहां मैं रहता हूं वहां सम्मेलन करनेकी

३

कार्यकर्ताओंसे

[चांडिल-सर्वोदय-सम्मेलनमें ता० ९–३–'५३ की शामको दिया हुआ अुपसंहार-भाषण ।]

गये साल हम लोगोंने जो काम किया, अुसके विषयमें अुस-अुस प्रदेशवालोंके साथ मैंने चर्चा कर ली। अुस चर्चाके दौरानमें कअी मरतवा मैंने कार्यकर्ताओंको जाग्रत करनेके लिअे कठोर वचनोंका अुपयोग किया था। लोगोंने वह सब प्रीतिपूर्वक सहन कर लिया। लेकिन अब अुसके लिअे सब लोगोंसे क्षमा मांग लेता हूं। मुझे कहना चाहिये कि गये साल जो काम हुआ, वह अधिक हो सकता था अगर हम काममें कुछ व्यवस्था रखते; तो भी जो हुआ वह काफी हुआ है अैसा कह सकते हैं और असमाधानके लिअे कोअी कारण नहीं है। कल जो प्रस्ताव पढ़ा गया अुसमें गये साल सात-आठ लाख अेकड़ जमीन अिकट्ठी हुअी, अुसका गौरवपूर्ण अुल्लेख है। मेरे मनमें भी है कि जो काम हुआ और अुसे करनेमें जिन लोगोंने हाथ बंटाया, अुनके लिअे यह गौरवकी बात है। खैर, ये दो शब्द तो कार्यकर्ताओंके आश्वासनके लिअे मैंने कहे।

अंतःनिरीक्षणकी आवश्यकता

अब अगले साल हम आगे बढ़ना चाहते हैं और जितना हमने निश्चय किया है अुतना पूरा करना चाहते हैं। वह काम बहुत कठिन तो नहीं है। अिस साल हमको ग्यारह महीने मिले, अगले साल तेरह महीने मिलेंगे। और अब योजना अच्छी बन गअी है, लोग भी जाग्रत हो गये हैं। अिसलिअे अुतना काम हो ही जायगा, अैसी मैं अुम्मीद करता हूं। लेकिन हमारा काम अुससे भी अधिक व्यापक है, अुद्देश्य अूंचा है, अिस दृष्टिसे हमको अंतःनिरीक्षण करना चाहिये और अुसके योग्य बनना चाहिये। अतः जो कुछ दोष दीख पड़ते हैं, अुनका निवारण हमें करना चाहिये। हम जब अपने समाजके दोष बताते हैं, तो दूसरोंके साथ तुलना करके हम अपनेको अूंचा या

नीचा नहीं रखना चाहते, वल्कि स्वतंत्र रीतिसे अपना ही निरीक्षण करते हैं। जो दोप हममें हैं वे ही दूसरोंमें होंगे, तो अुससे हमारा कोअी समाधान नहीं हो सकता। अिसलिअे हम तुलनाकी दृष्टि नहीं रखते, वल्कि स्वतंत्र रीतिसे अपना निरीक्षण करना चाहते हैं।

असहिष्णु न वनें

कल हमने देखा कि अेक भाअी वंगाली भापाका प्रश्न यहां रखना चाहते थे। आवेशमें वे कुछ वोल गये, तो यहांके लोगोंके दिलोंमें सब्र नहीं रहा और अुनको 'वैठ जाओ', 'वैठ जाओ' कहने लगे। अगर लोग सब्र रखते तो अेक हृदयको वे जीत लेते। क्योंकि अुन्होंने आरंभमें ही कहा कि "अिस सभामें हमारा पक्ष रखनेके लिअे मौका मिला, अिसके लिअे मैं कृतज्ञ हूं।" वे समझते थे कि अिस सभाके अुद्देश्य दूसरे हैं। कअी काम यहां पड़े हैं। अिसलिअे अगर अुनकी वातको, जो कि स्थानीय है, प्रवेश मिल जाता है तो अेक विशेष वात होती है, और वैसा अुन्होंने कवूल भी किया। अगर अुनके भाषणको हम सहन कर लेते और शांत रहते, तो अेक मनुष्यको हम जीत सकते। लेकिन हुआ अिससे अुलटा। अुनका दिल भी दुखा। यद्यपि वोलनेका मौका अुनको आखिर मिल गया, फिर भी जो चोट अुनके दिलको पहुंची, वह अुतनेसे दुरुस्त नहीं हुअी। तोड़ना आसान है, जोड़ना कठिन होता है। और वह जो प्रदर्शन हुआ वह सामुदायिक हुआ। कोअी अेकाध व्यक्ति अेकाध व्यक्तिको रोकता या अुसके वारेमें आलोचना करता, तो वह व्यक्तिगत मामला हो सकता था। पर यहां तो समुदायके अनेक व्यक्ति अेकदम वोल अुठे। वह दृश्य दुःखदायी था। अगर वह अेक क्षणिक वात हुअी अैसा ही मुझे लगता, तो मैं अुसकी विशेप चिन्ता नहीं करता। लेकिन वह अेक आकस्मिक वात नहीं है। हमारेमें वह अेक दुर्गुण ही है। अुसको हम असहिष्णुता नाम दे देते हैं, जैसा कि धीरेन्द्रभाअीने दिया भी है।

आत्म-वंचना हानिकारक

लेकिन अुससे भी अधिक गहरा दोप अिस वातमें है कि हम अपनेको अेक तरहसे पुण्यात्मा समझते हैं; कारण, हम सर्वोदयकी

भावना रखते हैं, हम सर्वोदय-सेवक हैं! यहां तक होता है कि लोग अपने पत्रों पर अपना सर्वोदय-सेवक नंबर लिख देते हैं। अेक भाअीका पत्र आया था। अुसमें अूपर 'सर्वोदय-नंबर' और नीचे 'सर्वोदय-सेवक' छपा हुआ था। अब यह बात निर्दोष भी हो सकती है। लेकिन मुझे जो अनुभव आया, अुस परसे मैं समझ गया हूं कि सर्वोदय-सेवक होना या जो विचार हम रखते हैं वैसे विचार रखना — चाहे अुन पर हम अमल कर सकें या न कर सकें — यही अेक बड़ा पुण्यकार्य हम करते हैं और अुससे हम कुछ अूंचे बन जाते हैं, अैसा खयाल हम लोगोंके दिलमें होना संभव है। अगर अिस तरह हम आत्म-वंचना करें, तो हमारे लिअे वह हानिकारक होगा। हमें तो अति नम्र होना चाहिये और समझना चाहिये कि हम सेवक हैं और दुनिया हमारी सेव्य है। तो सेवकका नाता नम्र नाता है। अुससे भिन्न अगर हम अपनेको अूंचे विचारवाले मानने लगें, तो जैसे अेक जमानेमें ब्राह्मण हो गये — ज्ञान-परायण वे थे, लेकिन अुसका अुनको अभिमान हो गया और वे अपनेको अूंचा मानने लगे — वैसी ही हमारी हालत होगी। तो यह अेक दोष है और मैं चाहता हूं कि हम अपने अंदर अुसका शोधन करें और अधिकसे अधिक नम्र होनेकी कोशिश करें।

कार्यकर्ता विचारोंका अध्ययन नहीं करते

दूसरी हममें जो खामियां हैं, अुनको दोष तो क्या कहें, कमी कहना चाहिये। वह यह कि हममें से बहुतसे बहिर्दृष्टिसे सोचते हैं, गहराअीमें नहीं जाते और विचारोंका अध्ययन नहीं करते। यह मेरा आक्षेप बरसोंसे रहा है। और मैंने देखा है कि हमारे कार्यकर्ता भी, जो रात-दिन काममें लगे रहते हैं, विचारोंका अध्ययन नहीं करते। मैं केवल शास्त्रीय अध्ययनकी बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि जो काम हम करते हैं अुसके मूलमें कुछ विचार हैं और वे काफी गहरे हैं। अुन पर अगर हम नहीं सोचते हैं, अनका चिन्तन और अध्ययन नहीं करते हैं, तो आखिर हमारी स्फूर्तिका क्षय होता जाता है। दिन-ब-दिन स्फूर्ति जीर्ण होती जाती है। पर अिस तरफ कार्यकर्ताओंका ध्यान बहुत

कम गया है। जब गांधीजी थे तब भी यही हालत थी। मैंने अेक कार्यकर्ताको पूछा, 'भाअी, गांधीजीने अभी अेक लेख लिखा है, वह आपने पढ़ा है?' तो अुन्होंने जवाब दिया, 'नहीं पढ़ा।' मैंने अुनसे कहा कि वह पढ़ने लायक था, तो वे कहने लगे, 'पढ़ने लायक तो वह होगा ही, क्योंकि गांधीजी जो लिखते हैं वह पढ़ने लायक ही होता है। पर हम अुनका काम कर रहे हैं, और काम ही तो अुनके कहनेका सार है। वह तो हम कर ही रहे हैं। अब हमको काममें से अुतनी फुरसत न मिले तो हम पढ़ नहीं सकते।' मैंने कहा, 'अगर कार्यकर्ताओंको अुसे पढ़नेकी जरूरत न हो, तो गांधीजीको लिखनेकी जरूरत ही क्या थी? वे भी कर्म-परायण व्यक्ति हैं, तिस पर भी हर हफ्ते कुछ-न-कुछ लिखते ही जाते हैं। हमको समझना चाहिये कि अुससे हमें नअी बातें और नया प्रकाश मिल सकता है। अिसलिअे हमको वह पढ़ना चाहिये।'

ज्ञान ही सतत कार्यका आधार

कुछ लोग गांधीजीके ही वचनोंका आधार देते हैं, और गांधीजीने कभी-कभी कहा भी है, कि 'लोग पढ़ते बहुत हैं, लेकिन अुनको काम करना चाहिये।' पर अुसका अर्थ अितना ही है कि जो नाहक पढ़ते हैं, व्यर्थके चिन्तनमें अपना समय बिताते हैं, अुनके विरुद्ध यह कथन है। लेकिन जो कार्यकर्ता हैं वे दरअसल ज्ञानके हकदार हैं। वे ही पढ़नेके और चिन्तनके अधिकारी हैं। जो काम नहीं करते वे ज्ञानप्राप्तिके अधिकारी नहीं। अिसलिअे जो ज्ञानप्राप्तिके अधिकारी नहीं, वे ज्ञानकी चर्चा किया करें; और कर्म-परायण होनेके कारण वास्तवमें जो ज्ञानप्राप्तिके अधिकारी हैं, वे अपना हक छोड़ दें और ज्ञानकी कीमत न करें, तो अुससे कर्म निस्तेज बनता है। यह अनुभव हमारे ध्यानमें आया है। हम बोलते जाते हैं, लिखते जाते हैं; लेकिन मैंने देखा कि दो वर्षोंके दरमियान जो बात मैंने पच्चीसों बार कही होगी और जिसके बारेमें लिखा भी होगा, वह भी मुझे बार-बार दोहरानी पड़ती है। खैर, मैं थक तो नहीं जाता, मेरे लिअे तो वह जप ही होता है।

चित्तशुद्धिकी कसौटी

वस्तुस्थिति यह है कि चिंतनकी जितनी आवश्यकता किसी भक्तिमार्गीको हो सकती है अुससे अधिक हमको है। क्योंकि भक्तिमार्गी अपनी व्यक्तिगत शुद्धि करके संतोष मान लेता है और अपेक्षा रखता है कि अुससे जितनी दुनियाकी सेवा होगी अुतनी होगी। पर हम अुतनेसे संतुष्ट नहीं रहते, बल्कि व्यक्तिगत शुद्धिका काम भी अपनी सेवासे कर लेते हैं। तो जब हमारी बाहरकी सेवा और अंदरकी चित्तशुद्धिकी वृत्ति, दोनोंको हम अेकरूप मानते हैं, तो हम पर अिस बातकी बड़ी जिम्मेवारी आती है कि हम बहुत गहराअीमें जाकर चिंतन करें। कोअी भक्तिमार्गी सत्पुरुष अैसा दावा नहीं करता था कि मेरे आसपास अगर मेरे विचारका प्रभाव नहीं दीखता, तो मुझमें ही कोअी न्यूनता है और अुसके लिअे प्रायश्चित्त आदि करना चाहिये। वे समझते थे कि आसपासके लोगोंके भी स्वतंत्र कर्म होते हैं और अिसलिअे अुनकी चित्तशुद्धिकी कोअी जिम्मेवारी हम पर नहीं है। सहज भावसे अेक-दूसरेका परिणाम अेक-दूसरे पर होना होगा तो होगा। लेकिन हम समाज और व्यक्तिमें अैसा फर्क नहीं करते और हमारी चित्तशुद्धिकी कसौटी ही यह मानते हैं कि आसपासके वातावरण और परिस्थिति पर अुसका क्या परिणाम हुआ है। हम अपेक्षा रखते हैं कि अगर हम सत्यवादी और सत्यनिष्ठ हैं, तो हमारे आसपासके लोगोंमें निर्भयता और सत्यनिष्ठा होनी चाहिये। हमसे वे कोअी चीज छिपायें, अैसा नहीं होना चाहिये। और अगर कोअी आसपासका मनुष्य छिपाता है, तो हम यह मान लेते हैं कि हमारी सत्यनिष्ठामें, सत्योपासनामें कमी है। अतः अपनी चित्तवृत्तिकी कसौटी आसपासके वातावरण परसे करनेकी वृत्ति जो रखते हैं, अुन पर बहुत गहराअीमें जानेकी जिम्मेवारी है।

सत्यका अक अंश

अेक दिन बापू कह रहे थे कि "मुझमें सत्यकी बहुत कमी है।" अुसका कारण वे बताने लगे, "फलाना मनुष्य अितने दिन मेरे पास रहा, लेकिन फलानी चीज अुसने मुझसे छिपायी। मेरे सामने

कहनेकी अुसकी हिम्मत नहीं हुअी। दुनियामें जाकर तो कही है। दूसरे लोग जान भी गये हैं, लेकिन मेरे सामने वह चीज नहीं कही है। अगर मैं सत्यनिष्ठ होता तो अुस मनुष्यको पहले मेरे पास आकर कहनेकी अिच्छा होती और दूसरोंको कहनेमें अुसको संकोच होता। अपना पाप या दोष, जो भी हुआ हो, वह मेरे पास आकर वैसे ही कहता, जैसे लड़का मांके पास जाकर कह सकता है। लेकिन हुआ अुलटा। दुनियामें मित्रोंके सामने अुसने वह बात कही है, लेकिन कअी बरस हुअे मेरे सामने अभी तक अुसने वह बात नहीं कही। अिसका अर्थ यह है कि मुझमें सत्य नहीं है। अगर सत्य होता तो सामनेवालेको सत्य बोलनेकी हिम्मत होनी ही चाहिये थी। मेरे नजदीक रहनेवालोंमें अगर वह हिम्मत नहीं आयी, तो यह मेरी सत्यकी कमी है।" मैं सुन रहा था। बहुत चर्चा हुअी। अुसका वर्णन मैं यहां नहीं करूंगा, लेकिन जो दृष्टि अुन्होंने रखी अुसमें सत्यका अेक अंश है। सत्यका पूरा अंश अुसमें नहीं है। दूसरी बाजू भी अुसमें है। और मैंने थोड़ेमें कहा भी था कि जो परस्पर परिणाम होता है, मनुष्यकी वृत्ति और आसपासकी परिस्थितिका जो संबंध आता है, वह 'अहल्या-राम-न्याय' से होता है। यह अेक मैंने नया न्याय बनाया है।

'अहल्या-राम-न्याय'

अहल्या-राम-न्यायका सार यह है कि रामचन्द्रजी अपनी यात्रामें अेक आश्रममें आये और वहांके अेक पत्थरको अुनके चरणोंका स्पर्श हुआ, अुसका अुद्धार हुआ और अुसमें से अहल्या प्रकट हुअी, अैसी कहानी है। तो यह महिमा किसकी? रामचन्द्रजीकी या अहल्याकी? अगर हम अुसे रामचन्द्रजीके चरणोंकी महिमा कहें, तो अुनका चरण-स्पर्श लाखों पत्थरोंको हुआ, लेकिन अुनमें से कोअी अहल्या नहीं निकली। अिसलिअे वह केवल रामके चरण-स्पर्शकी जिम्मेवारी नहीं है। अगर हम यह कहें कि वह गुण अुस पत्थरका था जिसमें अहल्या सुप्त पड़ी थी, तो हजारों लोगोंके पावोंका स्पर्श अुसको हुआ, फिर भी अुसका अुद्धार नहीं हुआ और रामचन्द्रजीके चरण-स्पर्शसे ही अुसका अुद्धार हुआ। अिसलिअे अिसकी पूरी जिम्मेवारी अहल्या पर भी नहीं

है। अिस तरह कुछ गुण रामचन्द्रजीका और कुछ गुण अहल्याका, दोनोंके गुण मिलकर अेक बात बनी है। अिसलिअे जब हम केवल अेक पर जिम्मेवारी डालते हैं, तो पूरा न्याय नहीं होता और पूरा सत्य अुसमें नहीं आता। यह बात बापूको मैंने कही थी। और भी बहुत चर्चा चली, अुसमें मैं अभी नहीं पड़ता। लेकिन अुनकी यह अपेक्षा कि अगर हम सत्यनिष्ठ हैं, तो अुसका असर आसपासके वातावरण पर होना चाहिये, मिथ्या नहीं है।

भक्तिमार्गकी दलील

लेकिन अैसी अपेक्षा भक्तिमार्गी सत्पुरुष नहीं रखते हैं। वे कहते हैं कि दुनिया अीश्वरकी अिच्छासे चलती है, अिसलिअे यह जरूरी नहीं है कि मेरे स्पर्शसे शेर अपना शेरपन छोड़े, गाय अपना गायपन छोड़े। अेक भक्तने मुझे यह भी कहा कि अीश्वरके होते हुअे दुनियामें अगर बदमाश रह सकते हैं, तो मेरे रहते हुअे दुनियामें बदमाश रहें अिसमें आश्चर्यकी कौनसी बात है? मैं कौन अीश्वरसे बड़ा हूं, जो मेरी संगतिसे बदमाश सुधर सकें; जब कि सर्वत्र अीश्वरके विराजमान होते हुअे भी अुसकी संगतिमें वे नहीं सुधर रहे हैं। यह भक्तिमार्गी दलील है। अिसमें परम नम्रता है, अहंकारका पूर्ण अभाव है और अुस दृष्टिसे अुसमें भी सत्यका अेक अंश है।

जीवनकी गहराअी तक पहुंचें

लेकिन हम सत्याग्रहीके नाते यों मानते हैं कि हमारी चित्तवृत्ति अगर शुद्ध है, तो आसपासके वातावरण पर भी अुसका परिणाम होना ही चाहिये। और अिस कल्पनाका आधार लेकर हमने सत्याग्रहकी योजना की है। सत्याग्रहके तत्त्वज्ञानमें यह अेक मूल विचार पड़ा है। अगर अिस विचारको हम मानते हैं, तो हम पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी आती है। जीवनकी गहराअीमें हमको जाना चाहिये और भक्त जितनी गहराअीमें पहुंचे थे अुससे अधिक गहराअीमें हमको जाना चाहिये। अैसा नहीं होता और विचारकी गहराअीमें यदि हम नहीं पहुंचते, तो मैं कहना चाहता हूं कि यह अेक अैसी भूमि है, जहां हमारा आचार

टिकनेवाला नहीं है। जहां तक हमारा खुदका ताल्लुक है वहां तक हमारा आचार टिकेगा, क्योंकि हम आग्रहसे अुसको टिकाना चाहेंगे; लेकिन वह हिन्दुस्तानमें रूढ़ नहीं हो सकता। क्योंकि हिन्दुस्तान अेक तत्त्वज्ञानकी भूमि है और यहां लोगोंको हर चीजके गहरे विचारमें जानेकी आदत है।

गीतामें तत्त्वज्ञानकी गहराओी

बुद्धधर्मने यह प्रयोग करके देखा। वे कुछ आचारों तक सीमित रहे, कुछ सामाजिक सुधारों तक सीमित रहे और तत्त्वज्ञानकी गहराओीमें नहीं गये। नतीजा अुसका यह हुआ कि बुद्धधर्मका कल्याणकारी स्पर्श हिन्दुस्तानको मिला तो सही, लेकिन वह हिन्दुस्तानमें टिका नहीं। क्योंकि विचारोंकी गहराओीमें जाकर मूल तत्त्वज्ञानमें पहुंचना चाहिये था। पर बुद्धधर्मने अैसा नहीं किया। खैर, अुसमें मैं नहीं पड़ना चाहता। वह अेक गहरा विषय है। अुसका अुल्लेख भर मैंने किया। मेरा कहना यह है कि यह भूमि ही अैसी है, जहां विचारकी गहराओीमें गये बगैर कोओी भी जीवनका व्यवहार टिक नहीं सकता। हम देखते हैं कि गीतामें अेक सादा-सा सवाल लड़ाओी परसे निकला और अुस परसे वे कितने गहराओीमें गये, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञके विचारका कैसा पृथक्करण किया, प्रकृति-पुरुषका क्या विचार प्रकट किया, आत्म-स्वरूपका कैसा वर्णन किया, हजार बातें अुसमें वे लाये और आखिर नतीजा यह हुआ कि मोह-निवृत्ति हुओी और कर्तव्यमें बुद्धि स्थिर हुओी। अब अेक सादे-से सवाल परसे अितनी गहराओीमें क्यों जाना होता है यह समझमें नहीं आयेगा, अगर हिन्दुस्तानकी जो भूमिका है अुसको हम न समझें। अतः हम विचारकी गहराओीमें नहीं जाते, यह अेक कमी हमारेमें है। वह हमको नहीं रखनी चाहिये, अगर हम चाहते हैं कि अेक बड़ा काम हमसे हो।'

संयोगसे शक्तिका निर्माण

'अब तीसरा दोष, जिसका अुल्लेख मैंने अपने पहले व्याख्यानमें किया था, वह फिरसे दोहराता हूं। हम लोगोंमें शक्ति कम नहीं है और लोगोंकी हम पर आशा भी बहुत है; तिस पर भी हो यह रहा है

कि हमारे सारे काम बिलकुल अलग-अलगसे हो रहे हैं और किसीके कामका किसीको पता तक नहीं होता अैसी भी हालत है। अिसलिअे नतीजा अुसका यह होता है कि प्रत्यक्ष कोअी रूप प्रकट नहीं होता। अेक शख्सके पास तेलकी बोतलें पड़ी हैं, दूसरे शख्सके पास माचिसका भंडार पड़ा है और तीसरे शख्सके पास बहुतसे लालटेन पड़े हैं; फिर भी जब तक अुनका योग नहीं होता, तब तक प्रकाश नहीं होता, अंधकार ही कायम रहता है। तो अिस तरह हमारा चल रहा है।

शक्तिका केन्द्रीकरण हो

कताअी-मंडल स्थापित होते हैं, तो बिचारे हफ्तेमें अेक बार कातते हैं, अिकट्ठा होते हैं, कुछ काम करते हैं और घर पर चले जाते हैं। अुनका कोअी प्रचार दुनियामें नहीं होता। अुनकी खुदकी स्फूर्ति भी दिन-ब-दिन कम होती जाती है। पचास मंडल स्थापित हुअे, अुनमें से पच्चीस गिर गये; और बाकीके पच्चीस कुछ काम तो करते हैं, लेकिन अुनका पता दूसरोंको नहीं होता। ग्रामोद्योग-संघको अिसकी फिक्र नहीं कि कताअी-मंडल कहां स्थापित हुअे। फेहरिस्त तो अुनकी आती है, लेकिन वह देखनेकी जिम्मेवारी अुन पर नहीं है। अब ग्रामोद्योगकी बात अगर नहीं चलती है, तो अुसके बारेमें चौकन्ना रहनेकी जिम्मेवारी चरखा-संघ पर नहीं है। अिस तरह हमारा सारा काम चल रहा है। यह गलत है। अुसमें शक्ति नहीं है, यह सब जानते हैं। फिर भी चार-पांच साल हुअे, वह चल ही रहा है। तो मुझे अिस समय लगा कि अब हम बड़ा काम करने जा रहे हैं और सारी शक्ति अुसमें केन्द्रित किये बगैर काम होनेवाला नहीं है, अिसलिअे अिस विषयकी ओर लोगोंका ध्यान फिरसे खींचना चाहिये।

सर्व-सेवा-केन्द्रमें ही सब काम हों

जयप्रकाशजीने भी अेक दफा अिस बातका जिक्र किया कि सबका अेक संघ बन जाय तो अच्छा रहेगा। ये सब अलग-अलग रह जाते हैं, तो अुसमें से ताकत निर्माण नहीं होगी। यह अिशारा अेक सुहृद् और मित्रके नाते अुन्होंने किया। और मुझे यह कहनेमें खुशी होती

है कि अुसके बारेमें गंभीरतासे सोचा जा रहा है। सर्व-सेवा-संघ अेकरूप बनेगा और जो मुख्य-मुख्य संघ हैं वे अुसमें विलीन हो जायेंगे। अतः वह निर्णय जब होगा तब लोगोंके सामने आयेगा। मैं तो मानता हूं कि यह दोष छोटे-छोटे कार्यकर्ताओंका नहीं है, बल्कि जो मुख्य कार्यकर्ता हैं अुन्हींका है। क्योंकि अुन्होंने जो अेक रास्ता बनाया अुसी पर दूसरे जाते हैं। अगर रास्ता अैसा बनाया हो कि जहां भी कोअी काम शुरू होता है, वह सर्व-सेवा-संघका ही होता है और सर्वांगी दृष्टिसे ही वह काम होता है यानी सर्व-सेवा ही वह होती है, तो कहीं भी सिर्फ कताअी-मंडल स्थापित नहीं होगा, बल्कि सर्व-सेवा-केन्द्र ही होगा। अुसमें कताअी भी चलेगी, ग्रामोद्योग भी चलेगा, नयी तालीम भी चलेगी, हरिजन-सेवा भी चलेगी; अर्थात् जो कार्यकर्ता वहां होगा अुसकी शक्ति और वृत्तिके अनुसार किसी काम पर अधिक जोर पड़ेगा तो किसी पर कम। अिसलिअे वह वहांके कार्यकर्ता, वहांकी परिस्थिति, मांग आदि पर निर्भर रहेगा। फिर भी जो केन्द्र खुलेगा, वह सर्व-सेवा-केन्द्र ही होगा। अिसलिअे यह विचार किया जा रहा है और वह दोष मिट जायगा अैसा मुझे लगता है। लेकिन मुझे लगा कि अिस ओर कार्यकर्ताओंका ध्यान खींचूं और वे सर्वांगी दृष्टि रखकर मिल-जुलकर काम पूरा करें तो अच्छा रहेगा। नहीं तो आज जो चलता है वह चंद दिनों तक चलेगा और बादमें साराका सारा खतम हो जायगा।

प्रार्थना दिलकी गहराअीसे हो

अिसके अलावा, आखिरमें अेक और बात। बहुत निरीक्षण करने पर मैं अिस नतीजे पर आया हूं कि हम रोज सुबह-शाम जो प्रार्थना करते हैं वह गहरी नहीं होती। मैंने बहुतसी संस्थाओंमें देखा कि वह अेक सदाचार या शिष्टाचारके तौर पर चलती है। सदाचार अच्छा है, लेकिन केवल सदाचारके तौर पर वह चलेगी, तो अुससे वह अनुभव नहीं आयेगा जो सच्चे दिलसे की हुअी प्रार्थनासे आता है। बापूने अिस बारेमें अपने जीवन और मरणसे हमें बहुत शिक्षण दिया है। आखिरमें भी जब वे गये तब प्रार्थनाके अुत्साहमें थे और

प्रार्थनामय होकर ही अुन्होंने अपना देह परित्याग किया। और जहां वह गोली अुनके शरीर पर लगी कि वैसे ही अुन्होंने परमेश्वरका नाम लिया। यह कोअी छोटी बात नहीं है। वे निरंतर जाग्रत रहते थे और दो दफा जो प्रार्थना करते थे वह केवल सदाचारके तौर पर नहीं, बल्कि अुसमें अपना हृदय रखते थे। वे तो कहते थे कि हर सांसके साथ मेरी प्रार्थना चला करती है। और वह केवल अहंकार या कल्पना नहीं थी, बल्कि अुनके जीवनकी अेक मुख्य वस्तु थी। अतः हम जो प्रार्थना करते हैं वह शिष्टाचार तो होता है, लेकिन अुसकी गहराअीमें हम नहीं जाते। यहीं देखियेगा। यहां हमने खानेके लिअे कितना अिंत-जाम किया? सारा तालीमी संघका मंडल, आशादेवी और बिहारके तमाम लोग अुसमें लगे तब हमको खाना मिला। अितना आयोजन हमने खानेके लिअे किया। लेकिन प्रार्थनाके लिअे हमने कितना आयोजन किया? कितना चिंतन किया? हमने प्रार्थना तो की, लेकिन अुसके लिअे हमें कोअी खास बात करनी पड़ी हो अैसा नहीं है।

अब प्रार्थना अैसी वस्तु है कि अुसके लिअे बाहरका कोअी खास काम करना भी नहीं पड़ता। जो करना पड़ता है वह अंदरसे होता है और वह अेक क्षणमें हो जाता है। अुसके लिअे ज्यादा समय भी नहीं देना पड़ता। अिसलिअे अितना अगर हम करें, तो अुससे हमें बल मिलेगा। और जैसे जैसे हम अेक-अेक कठिन काम अुठाते जा रहे हैं, वैसे वैसे सिवा परमेश्वरके आधारके अुनकी पूर्तिके लिअे हममें क्या ताकत होगी यह हम नहीं देखते। अगर अीश्वरका आधार सच्चे दिलसे हम नहीं रखते, तो यह हो नहीं सकता कि सत्यादि धर्मों पर हम अविचल कायम रह सकें।

नीतिधर्मकी प्रेरणा : अंतःसमाधान

शंकररावजीने कल जिक्र किया था कि "हम जो काम करते हैं वह अिहलोकके लिअे यानी यहांके प्रत्यक्ष अनुभवके लिअे करते हैं। और पुराने जमानेमें जो यात्रा तथा यज्ञ अित्यादि होते थे, अुनमें वे परलोकका खयाल करते थे।" अतः हमारे काममें और अुनके काममें यह फरक है। यह फरक तो अुन्होंने ठीक बताया, लेकिन

सहज अेक बात प्रसंगसे कह दी। लेकिन मेरा कहना यह है कि अगर हम अपने धर्मों पर अविचलित रहना चाहते हैं और अुससे दुनियामें हंसी होती हुअी दीख पड़े तो भी अुसको छोड़ना नहीं चाहते, तो हमें गहरे आधारकी जरूरत होगी। अिसमें अीश्वरकी प्रार्थना जो मदद दे सकती है, वह और किसी तरहसे नहीं मिल सकती। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि हमारे सारे कामोंका आधार हम परमेश्वर-निष्ठामें रखें और जो प्रार्थना हम करते हैं, अुसमें अधिक जान डालें, हमारा दिल अुसमें रखें।

सालभरका काम करनेवालोंकी जरूरत है

अब आखिरमें दो ही शब्द मुझे कहने हैं। अगले साल हम जो काम करने जा रहे हैं, अुसके लिअे कमसे कम अेक साल पूरा समय देनेवाले लोग चाहिये। जो लोग तैयार हों वे अपना नाम सर्व-सेवा-संघके पास भेज देंगे, तो अुनको महीना दो महीना तालीम देनेकी व्यवस्था की जायगी और अुनकी सेवाका भी अुपयोग किया जायगा। अिसलिअे जो आना चाहते हैं वे अपना नाम दे दें।

हरिजनसेवक, ६, १३–६–'५३

४

चांडिल-सम्मेलनका संदेश

[श्री विनोबा द्वारा अेक कार्यकर्ताको लिखा हुआ पत्र।]

चांडिलके सम्मेलनसे मुख्य लाभ तो यह हुआ कि कार्यकर्ताओंके विचारोंकी कुछ सफाअी हुअी। बहुतसे रचनात्मक कार्यकर्ता छोटे-मोटे कामोंमें लगे हुअे हैं और अपनी शक्तिभर कार्य करते रहे हैं। भूदान-यज्ञका अेक नया काम आया और अुनके कार्यमें अेक कामकी वृद्धि हुअी, अितना ही अकसर कार्यकर्ता समझे थे। लेकिन चांडिलके सम्मेलनमें जो चर्चा हुअी, अुससे यह बात स्पष्ट हुअी कि हमारे चालू कामोंमें से जितने काम हम समेट सकते हैं, अुतने समेटकर भूदान-यज्ञमें कूदना पड़ेगा। सिर्फ अनेक कामोंमें अेक कामकी वृद्धि नहीं हुअी है, बल्कि अनेक कामोंको अुदरमें समा लेनेवाला काम अुपस्थित हुआ है।

पुराने अनुभवी कार्यकर्ताओंकी संख्या सीमित है। अुनकी मददमें सैकड़ों नये कार्यकर्ताओंको काम करनेका मौका मिलेगा। आज देशमें अिस कामके लिअे जो अुत्साह है, अुसे देखते हुअे मुझे अुम्मीद है कि नये कार्यकर्ता पर्याप्त संख्यामें मिलेंगे। अुनको कुछ तालीम भी देनी होगी, जिसका अिन्तजाम सर्व-सेवा-संघको करना होगा।

छठा हिस्सा जमीन प्राप्त करना भूदान-यज्ञका सबसे छोटा अंश है। मुख्य अंश तो आगे करनेके कामका है। प्राप्त की हुअी जमीनको बांटना होगा। जिन्हें जमीन दी जायगी, अुन्हें कामके लिअे साधन-सामग्री भी दिलानी होगी। अुनको जमीन पर स्थिर करना होगा। जिन गांवोंमें जमीन मिलेगी, अुन गांवोंमें खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम आदिके जरिये ग्रामराज्यकी स्थापना करनी होगी।

जहां काश्तके काबिल पड़ती जमीन मिली है और मिलेगी, वहां नये सिरेसे गांवको बसाना होगा और ग्राम-रचना करनी होगी। अिस कामके लिअे सबका सहयोग हासिल करना होगा। जनशक्ति जाग्रत करनी होगी। और सरकारसे भी जो मदद मिल सके, हासिल करनी होगी। अुसे अपने कर्तव्यका भान कराना होगा।

भूदान-यज्ञ और अुसके आगेके काम संपत्ति-दान-यज्ञके बिना पूर्ण नहीं हो सकते। अिसलिअे संपत्ति-दान-यज्ञका विचार भी सामूहिक जीवन-निष्ठाके तौर पर लोगोंको समझाना होगा।

यह सारा काम जितना विशाल और व्यापक है अुतना ही गहरा और ठोस भी है। अिसीका नाम सर्वोदय है। भूमि अिसका अधिष्ठान है। सेवकगण कर्ता हैं। संपत्ति-दान-यज्ञ करण है। अन्न-वस्त्र स्वावलंबन आदि अिसमें करनेकी विविध क्रियाअें हैं। और लोक-मानस अनुकूल बनाना ही अिसका देवता है। मैं आशा करता हूं कि सर्वोदय-प्रेमी सब भाअी-बहन अपनी पूरी शक्ति अिसमें अेक साथ लगायेंगे और अिस विराट यज्ञको सफल बनायेंगे।

हरिजनसेवक, ११-४-'५३

कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर

[गयामें भूदानके सम्बन्धमें विनोबाजीके साथ हुअे तरुण कार्यकर्ताओंके कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर।]

प्रश्न: क्या भूदान-यज्ञके कार्यके लिअे हम कालेज छोड़ दें?

अुत्तर: मैंने तो कहा है कि भूदान-यज्ञमें काम न करना हो तो भी कालेज छोड़ दीजिये। हम तो सन् सोलहमें कालेज छोड़ कर ही निकले थे। पर जिन्हें अेक सालके बाद मोह होगा वे फिरसे कालेजमें जा सकते हैं; और अेक साल यह काम करते हुअे अगर अुनका मोह छूट गया तो ठीक ही है। जो विद्यार्थी अेक सालके बाद पुरानी तालीम नहीं चाहते हैं, अुनके लिअे तालीम देनेकी सर्व-सेवा-संघके जरिये अेक योजना हो सकती है। अुनके लिअे नयी तालीमका कुछ अिन्तजाम हो सकता है। हरअेक प्रान्तमें अेक-दो अैसी संस्थाअें खुल सकती हैं। जो विद्यार्थी काम करना चाहते हैं, वे तीन प्रकारके होंगे: (१) कुछ तो अैसे होंगे जो सिर्फ छुट्टीमें काम करेंगे, (२) कुछ अैसे होंगे जो अेक सालके लिअे कालेजसे मुक्त होकर काम करेंगे, और (३) कुछ कालेजसे बिलकुल ही मुक्त होकर काम करेंगे।

तिलक महाराज जब कालेजमें थे तो बहुत ही कमजोर थे। अिसलिअे अुन्होंने अेक साल कालेज छोड़कर व्यायाम किया और चार सालका पाठ्यक्रम अुन्होंने पांच सालमें पूरा किया। किन्तु अुन्होंने कहा है कि अुससे मैंने कुछ खोया नहीं, अुसीके आधार पर जिंदगीकी तकलीफें झेली हैं। अुन्हें तकलीफें काफी झेलनी पड़ीं यह तो सब जानते ही हैं।

प्रश्न: लोगोंका विचार है कि भूदान-यज्ञसे साम्यवादको भारतमें फैलनेसे रोका जा सकता है। तो क्या तेलंगानामें साम्यवादी पार्टीका अुतना जोर अब नहीं है?

अुत्तर : तेलंगानामें भूदान-यज्ञका विशेष काम हुआ ही नहीं है। जो हमने किया अुसके बाद वहां कुछ भी नहीं हुआ। और जिन्होंने हमारे साथ कुछ काम किया वे चुनावके लिअे खड़े नहीं हुअे। चुनावके लिअे तो कांग्रेसके लोग खड़े हुअे थे। और अुसी समय कम्युनिस्टोंने अपनी नीति बदली, अिसलिअे अुनको जेलसे छोड़ा गया था। अिस तरह जो दो-दो, तीन-तीन साल तक जेलमें रहे, वे अब छूटकर 'हीरो' बनकर आये थे। अिसलिअे वे जीते। कांग्रेसवाले खुद कुछ काम किये बिना हमारे पुण्य पर मुफ्तमें नहीं जीत सकते थे।

कम्युनिज्मको रोकनेका हमारा काम नहीं है। यह अेक स्वतंत्र विचार है। यह 'पाज़िटिव' है, 'नेगिटिव' नहीं। हिन्दुस्तानमें गरीबी है। अगर वह अच्छे तरीकेसे दूर की जा सकती है, तो कोअी भी बुरा तरीका नहीं अिस्तेमाल करेगा। किसीको प्यास लगी है और पीनेको स्वच्छ पानी मिल जाता है, तो वह गंदा पानी क्यों पियेगा? लेकिन स्वच्छ पानी नहीं मिले तो वह गंदा पानी पी सकता है। हिन्दुस्तानमें अच्छे तरीकेसे गरीबीकी समस्या हल होगी तो बुरा तरीका नहीं आयेगा। तेलंगानामें हमने दो महीनेमें बारह हजार अेकड़ जमीन अिकट्ठी की थी। अुसके बाद वहांके लोगोंने कुछ भी नहीं किया। वह बारह हजार आरंभमात्र ही था। अगर वहां जोरोंसे यह काम चले, तो लोगोंकी श्रद्धा अिस पर बैठेगी।

प्रश्न : भारतीय साम्यवादियोंको आप कैसा समझते हैं?

अुत्तर : भारतीय साम्यवादी यानी क्या? हिन्दुस्तानमें तो हम साम्यवादका कोअी काम ही नहीं देखते हैं। यहांके साम्यवादियोंने जो कुछ थोड़ासा किया है तेलंगानामें किया है; और वहां दो-तीन साल लगातार कत्ल, लूटमार, डकैतियां चलती रही हैं। लेकिन अिसका नतीजा यह हुआ कि आखिर किसानको कुछ भी नहीं मिला। अिसलिअे मेरा तो मानना है कि साम्यवादी लोग कुछ भी रचनात्मक काम नहीं करते, सिर्फ प्रचार करते हैं। प्रचारका काम वे अुत्साहसे करते हैं। यहांके कम्युनिस्ट तो सिर्फ जड़वादी ही नहीं, बल्कि जड़बुद्धि भी हैं। जड़वाद अेक वाद है। अिसलिअे वे सिर्फ जड़वादी ही होते तो कोअी

हर्ज नहीं होता। लेकिन वे तो अुधर रूसमें क्या हो रहा है, यह देखकर सारा काम करते हैं। रूसका रूप वदला तो अुनका भी रूप वदल जाता है। अुनकी कोअी स्वतंत्र अक्ल नहीं है। अिसलिअे हम अुनको भला या वुरा कुछ भी नहीं कह सकते, क्योंकि वे स्वतंत्र अक्लसे काम नहीं करते। जो स्वतंत्र अक्लसे काम करता है, अुसीके वारेमें हम अपनी राय दे सकते हैं। अिसलिअे अुन्हें भला-वुरा कुछ भी कहना है, तो अुनको कहना चाहिये जो अिनके मार्गदर्शक हैं।

साम्यवादका अेक ग्रंथ है। साम्यवादी आर्यसमाजियोंके समान अुसी किताबको प्रमाण मानते हैं, और वे परिस्थिति व अक्ल दोनोंको छोड़ देते हैं। दरअसल किताब, अक्ल और परिस्थिति, तीनोंका समन्वय होना चाहिये। पर ये लोग ग्रन्थको वेद मानते हैं। आज मार्क्स हिन्दुस्तानकी परिस्थितिमें होता, तो अपने विचारोंमें अवश्य परिवर्तन करता। मैं कम्युनिस्टोंसे कहता हूं कि आप मार्क्सियन हैं, परंतु मार्क्स खुद मार्क्सियन नहीं था, वह मार्क्स ही था। अिसलिअे वह वदल सकता था। कम्युनिस्ट लोग हिन्दुस्तानके दस हजार सालके सारे विचार-प्रवाहके वारेमें कुछ भी ज्ञान नहीं रखते। अुस विचारमें अगर दोष हो तो भी अुस दोषको जाननेके लिअे अुस विचारका ज्ञान होना चाहिये। अिसलिअे कम्युनिस्टोंमें मैं दो मुख्य दोष देखता हूं: अेक तो वे पुस्तक-पूजक हैं, और दूसरे यहांके विचार-प्रवाहको वे जानते नहीं हैं।

प्रश्न : क्या अितना वड़ा यज्ञ संस्थाके विना सुचारु रूपसे चल सकता है?

अुत्तर : हम संस्थाके विलकुल खिलाफ नहीं हैं। आप स्थानिक संस्थाअें खड़ी कर सकते हैं। लेकिन जहां अखिल भारतीय संस्था खड़ी करनेकी वात आती है वहां अनुशासन आता है, और फिर सारा मामला 'वोगस' हो जाता है। अिससे हम मुक्त रहना चाहते हैं। जव व्यापक संस्था निकम्मी होती है, तो अुसका नाहक अभिमान ही पैदा होता है और काम नहीं होता। अुसका लेविल चिपकता है। हम कांग्रेसवाले, हम सोशलिस्ट, अैसा कहा जाता है। हर-कोअी अपना

अलग-अलग पंथ बनाते हैं। यानी सारी दुनियासे अलग रहते हैं। सारी दुनियाको अपना रूप देनेके बजाय दुनियासे ही वे अलग रहते हैं। अगर हम कोअी खास संस्था बनाते, तो आज हमें जो सहयोग मिल रहा है वह नहीं मिलता।

प्रश्न: चीनकी आधुनिक जन-सरकार तीन वर्षके अन्दर ही अितनी अुन्नति कर गयी है कि जितने विदेशी वहां जाते हैं, वे आश्चर्यसे चकित होकर बड़ाअी करने लगते हैं। क्या भारतकी परिस्थिति अैसी नहीं है कि वह चीनका रास्ता अपने देशवासियोंको सुखी बनानेके लिअे अपनाये? क्या आपका भूदान-यज्ञ अैसा माध्यम साबित हो सकता है कि वह अितने कम समयमें चीनकी तरह अुन्नति करे?

अुत्तर: चीनकी तारीफकी बातें बहुत लोग बोलते हैं। परन्तु चीनमें अेक राज्यक्रान्ति हुअी है। अैसी राज्यक्रान्ति जहां होती है, वहां दूसरे तरीकेसे काम होता है। अुसके लिअे तीस साल तक चीनमें 'सिविल वार' हुअी है, यह कोअी नहीं देखते और सिर्फ राज्यक्रान्तिके बादका दो-तीन सालका काम देखते हैं। लेकिन राज्यक्रान्तिके बाद सरकारके हाथमें जो शक्ति आती है, वैसी शक्ति हिन्दुस्तानके पास नहीं है। दंडशक्ति भी नहीं है और आपकी सेना भी काफी नहीं है। आज जो सेना है अुसे रखनेमें ही तो बजटका साठ प्रतिशत खर्च हो जाता है। अिसलिअे और सेना बढ़ानी हो तो सारा खर्च सेना ही खा जायगी। चीनकी हालत ही दूसरी है। वहां राज्यक्रान्ति हुअी। कितना रक्तपात हुआ! अिसलिअे चीनका अुदाहरण अपने देशमें लागू नहीं होता है। परन्तु हम यह मानते हैं कि अभी अपनी सरकार जितनी प्रगति कर रही है, अुससे अधिक प्रगति कर सकती है। मगर कांग्रेस आज राज्यकर्ता जमात बन गअी है। अिसलिअे अुसमें पूंजीवादी भी आये हैं। अुनके खिलाफ जाकर काम करनेकी हिम्मत सरकारमें नहीं है, और मुख्य बात यह है कि अब तक विचारकी सफाअी नहीं हुअी है।

प्रश्न : भारत-सरकार बड़े-बड़े कारखानोंका राष्ट्रीयकरण क्यों नहीं करती ?

अुत्तर : अुसका कारण अेक तो यह है कि सरकार अुस विचारको मानती नहीं है। सरकार पर पूंजीवादका असर है। और फिर राष्ट्रीयकरण करनेसे कुछ बात बनती है अैसा नहीं है। रेलवेका राष्ट्रीयकरण हुआ, लेकिन अुससे कुछ बहुत लाभ हुआ हो सो बात नहीं है। सरकारके हाथमें आज जो शक्ति है अुसका ही अुपयोग सरकार ठीक तरहसे नहीं कर सकती, तो अधिक शक्ति देनेसे क्या फायदा? देशमें जब तक चारित्र्यवान लोग नहीं निर्मित होते हैं तब तक काम नहीं होता। आज घूसखोरी चलती है। अधिकारियोंके हाथमें और भी काम दें तो काम और बिगड़ेगा। असलिअे जनताकी विचार-शुद्धि और चारित्र्य-शुद्धि होनी चाहिये, तब शील सुधरेगा और फिर काम बनेगा।

प्रश्न : पूंजीवादका अन्त कैसे होगा ?

अुत्तर : पूंजीवादका अन्त न प्रेमसे होगा, न संघर्षसे, बल्कि विचारसे होगा। प्रेम या संघर्ष किसीका अन्त नहीं करते हैं। संघर्षमें घर्षण हो जाता है तो दोनों क्षीण होते हैं और प्रेम भी कोअी नअी चीज नहीं पैदा करता है। प्रेम अुत्साह पैदा करता है। परन्तु समाजमें क्रान्ति होती है विचारसे ही। हम हिस्सा मांगते हैं, भिक्षा नहीं; क्योंकि लोगोंको यह विचार समझाना चाहते हैं कि जमीन सबकी है। विचारको कबूल किया, असकी निशानीके तौर पर हम हिस्सा मांगते हैं। और आखिर तो जमीन सबकी बनानी है। हम विचार पर जितनी श्रद्धा रखते हैं, अुतनी और किसी चीज पर नहीं रखते। संघर्षसे क्रान्ति नहीं क्षय होता है और प्रेमसे क्रान्ति नहीं वृद्धि होती है। लेकिन फिर भी अगर संघर्षका मौका आये, तो हम विचार-प्रचारके लिअे संघर्ष भी करेंगे, हम अुसे टालेंगे नहीं। संघर्ष भी अेक तरक्की है। अुस तरक्कीकी कोअी आवश्यकता हो तो वह भी करेंगे। परन्तु क्रान्ति केवल विचार-प्रचारसे ही होती है। असलिअे हम विचार-प्रचार करते हैं।

प्रश्न : आजके कामसे नया नेतृत्व नहीं मिलता है, बल्कि पुराने नेताओंको ही फिरसे संजीवन मिलता है।

संपत्ति-दानका दानपत्र

[नीचे संपत्ति-दानके दानपत्रका नमूना दिया जा रहा है।]

श्री विनोबाजी,

आपने भारतीय परंपराके अनुसार आर्थिक क्रान्तिकी अहिंसक प्रक्रियाको संपूर्ण रूप देनेकी दृष्टिसे अब लोगोंसे भूमिके अलावा अपनी संपत्तिका षष्ठांश देनेकी मांग की है। भूमिदान-यज्ञमें जो लोग भूमि न होनेके कारण विशेष सहयोग नहीं दे सकते थे, अुनके लिअे भी अब आपने रास्ता खोल दिया है। दरिद्र-नारायणके लिअे किये गये आपके अिस आवाहन पर मैं अपनी आयका ——वां हिस्सा आपको अर्पित करता हूं तथा हर साल आपके निर्देशानुसार मैं अुसका विनियोग सार्वजनिक कार्यके लिअे करूंगा।

अपनी आयका वार्षिक हिसाब आपको या आपके प्रतिनिधियोंको या जिस समितिको आप अधिकार दें अुसको मैं नियमित भेजता रहूंगा।

अूपर लिखे हुअे हिस्सेकी सारी रकमको सुरक्षित रखने तथा आपके निर्देशानुसार अुसको खर्च करनेकी जिम्मेवारी मैं मान्य करता हूं।

अपने नियमका साक्षी अन्तर्यामी रूपमें मैं ही स्वयं हूं तथा मुझे अपनी अन्तरात्माके प्रति वफादार रहना है।

अीश्वर मुझे बल देगा।

मेरी संपत्तिका ब्योरा साथमें दिया है।

तारीख :

पूरा नाम : हस्ताक्षर

पता :

अेक धर्मयुद्ध	०.७५
महादेवभाअीका पूर्वचरित	०.८७
सरदार पटेलके भाषण	५.००
सरदार वल्लभभाअी — १	६.००
सरदार वल्लभभाअी — २	५.००
अुस पारके पड़ोसी	३.५०
जीवनका काव्य	२.००
जीवनलीला	३.००
धर्मोदय	१.२५
बापूकी झांकियां	१.००
स्मरण-यात्रा	३.५०
सूर्योदयका देश	२.५०
हिमालयकी यात्रा	२.००
गांधी और साम्यवाद	१.२५
गीता-मंथन	३.००
जड़मूलसे क्रान्ति	१.५०
जीवन-शोधन	३.००
तालीमकी बुनियादें	२.००
शिक्षाका विकास	१.२५
शिक्षामें विवेक	१.५०
संसार और धर्म	२.५०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१.७५
गांधीजीकी साधना	३.००
राजा राममोहनरायसे गांधीजी	२.००
बापूकी छायामें	३.५०
बिहारकी कौमी आगमें	३.००
गांधीजीके पावन प्रसंग — १, २ (प्रत्येक)	०.३७